केवल आंतरिक परिचालन के लिए

सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया
Central Bank of India

सेन्ट्रलाइट
CENTRALITE

खंड / Vol. 44 - 2022, अंक - 3 सितंबर / Sep. 2022

राजभाषा विशेषांक (विशेष आकर्षण - स्वच्छता)

केन्द्रीय कार्यालय में संस्थापक जयंती 09.08.2022

सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया की तिमाही गृह-पत्रिका

A Quarterly House - Journal of Central Bank of India

प्रकाशन तिथि - 11 नवम्बर 2022 • खंड / Vol. 44 - 2022 • अंक - 3 • सितंबर / Sep, 2022

.. न हि ज्ञानेन सदृशं ..

संपादक
स्मृति रंजन दाश

संपादक मंडल
नमिता रॉय शर्मा
वास्ती वेंकटेश
एस. एच. अय्यूबी
राजीव वार्ष्णेय

संपादकीय सहायक
छाया पुराणिक
अभय कुलकर्णी

Editor
Smruti Ranjan Dash

Editorial Board
Namita Roy Sharma
Vasti Venktesh
S. H. Ayubi
Rajiv Varshney

Editorial Assistant
Chhaya Puranik
Abhay Kulkarni

ई-मेल / E-mail
centralite1982@gmail.com

इस पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं से बैंक का सहमत होना आवश्यक नहीं है.
Articles Published in this magazine does not necessarily contain views the Bank.

विषय-सूची / CONTENTS

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी का संदेश / Message From Managing Director & CEO 4
कार्यपालक निदेशक का संदेश / Message from Executive Director 5
संपादकीय / Editorial.....6
राष्ट्रीय आंदोलन में हिंदी की भूमिका 7
बैंक की प्रगति - मेरी प्रगति 9
बैंक के लिए मेरा कर्तव्य..... 12
सर्वसमावेशी भाषा - हिंदी भाषा 14
आत्मनिर्भर भारत की दिशा में हिंदी का योगदान..... 16
स्टेच्यु ऑफ युनिटी यात्रा वृत्तांत 18
स्वच्छता और विकास... 21
स्वच्छता एवं स्वास्थ्य.....22
राजभाषा एवं वैश्विक हिंदी 24
स्वच्छ भारत, श्रेष्ठ भारत 26
जूठन : पुस्तक समीक्षा 28
हिन्दी: आज और कल 31
राजभाषा हिन्दी का महत्त्व एवं बैंकिंग व वित्तीय संस्थानों में हिन्दी की उपयोगिता एवं प्रशिक्षण ... 33
स्वच्छता एक जीवन प्रणाली.....40
स्वच्छता का महत्व 42
स्वच्छता के प्रयास 44
काव्यकुंज - स्वच्छता 47
तंजावूर का प्रसिद्ध बृहदेश्वर मंदिर 48
सकारात्मक सोच कैसे रखें 51
बैंक के इर्द-गिर्द 54
आजादी का अमृत महोत्सव - विविध आयोजन.....55
राजभाषा समाचार.....58
सेवानिवृत्ति / RETIREMENT / पदोन्नति / PROMOTION 62

डिज़ाइन, संपादन तथा प्रकाशन : श्री स्मृति रंजन दाश, सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया, चन्दरमुखी, नरीमन पॉईंट, मुंबई - 400 001 के लिए तथा उनके द्वारा उचीथ ग्राफिक प्रिंटर्स प्राईवेट लिमिटेड. आइडियल इंडस्ट्रीयल इस्टेट, मथुरादास मिल्स कंपाऊंड, सेनापती बापट मार्ग, लोअर परेल, मुंबई - 400 013.
Designed, Edited and Published by Shri Smruti Ranjan Dash for Central Bank of India, Chandermukhi, Narimanpoint, Mumbai - 400 001
Designed and Printed by him at Uchitha Graphic Printers Pvt. Ltd. 65, Ideal Industrial Estate, Mathuradas Mills Compound, Senapati Bapat Marg, Lower Parel, Mumbai - 400 013.

आज़ादी का अमृत महोत्सव

माननीय प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी का संदेश
Message from Managing Director & CEO

मेरे प्रिय सेन्ट्रलाइट साथियो,

सर्वप्रथम मैं बैंक के पीसीए से बाहर आने के लिए आप सभी को हार्दिक बधाई देता हूं, मुझे पूर्ण विश्वास है कि अब हमारे बैंक की विकास यात्रा की गति और तीव्र होगी तथा आने वाले समय में हम सफलता के नए शिखर पर पहुंचेंगे.

हमारे बैंक में इस वर्ष 14 सितंबर 2022 से 14 अक्टूबर 2022 तक हिंदी माह का आयोजन किया गया. इस दौरान देशभर में अनेक प्रकार की हिंदी प्रतियोगिताओं एवं कार्यक्रमों का आयोजन भी किया गया जिसमें आप लोगों ने बड़ी संख्या में सहभागिता की है. इससे यह तो पता चलता है कि आप सभी हिंदी भाषा से प्रेम करते हैं. वैसे भी हिंदी भाषा प्रेम की भाषा है, पूरे भारत में भारतवासी हिंदी से प्रेम करते हैं, हिंदी में व्यवहार करते हैं.

हम एक व्यवसायिक बैंक में कार्यरत हैं, इस कारण हम जनता से सीधे जुड़े हुए हैं. जनता के साथ हमारे व्यवहार की भाषा के रूप में हिंदी अत्यंत प्रभावशाली भाषा है. इसलिए हमें अपने ग्राहकों के साथ जहां तक संभव हो सके, हिंदी भाषा में ही व्यवहार करना चाहिए. हमने बैंक के सभी डिजिटलों माध्यमों को भी हिन्दी-अंग्रेजी द्विभाषिक बनाया है. सेंट - मोबाईल ऐप्प हिन्दी सहित 12 भारतीय भाषाओं में काम कर सकता है. वैसे भी आज हर कंम्प्यूटर, लैपटॉप तथा मोबाईल में भी हिन्दी भाषा इनबिल्ट रहती है जिससे हम इनके माध्यम से ही हिंदी में व्यवहार कर सकते हैं.

यह आप सब जानते हैं कि बैंक के अस्तित्व के लिए व्यवसाय का निरंतर बढना बहुत आवश्यक होता है. हमारी व्यवसाय वृद्धि भी किसी भी तरह बैंकिंग उद्योग की गति से कम नहीं होनी चाहिए, हमें अपने व्यवसाय में क्वालिटी, क्वांटिटी,तथा ग्रोथ रेट इन तीनों पर ही अपना ध्यान केंद्रित करना होगा.

हमें एनपीए के क्षेत्र में भी बहुत काम करना है. एनपीए भी घटाना है तथा नये स्लीपेज को भी रोकना अति आवश्यक है. हमें लगातार नए ग्राहकों को अपने बैंक से जोड़ना होगा, विशेषकर जो कभी हमारे ग्राहक थे लेकिन किसी भी वजह से हमारे बैंक को छोड़कर चले गए थे, उनसे संपर्क करना है एवं उन्हें फिर से अपना ग्राहक बनाना है.

हमारे ग्राहक हमसे जुडे रहें, इसके लिये जरूरी है कि हमारी ग्राहक सेवा सदैव उत्कृष्ट हो. ग्राहक को हमसे अपनापन मिलना चाहिये. अपनेपन के एहसास के साथ ग्राहकों से व्यवहार किया जाना चाहिये . सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया की परम्परा रही है कि हम स्वयं को सेन्ट्रलाइट कहते हैं और ग्राहक को भी सेन्ट्रलाइट कहते हैं. यह वास्तविकता में दिखना चाहिये. ग्राहक का कार्य तत्परता से होना चाहिये. उनकी पूछताछ का सही से उत्तर दिया जाए.

बैंक का हर कार्य उत्कृष्टता से करें. गलत कामों को रोकें . हमारे बीच अगर कोई गलत इरादे वाला साथी है उससे बचें. उसे गलत कामों से रोकें. गलत आचरण वाले सदस्य का कभी साथ नहीं दीजिए. बैंक के साथ धोखाधड़ी करने वाला सदस्य, उसके परिजन तथा साथ में काम करने वाले भी संकट में आ जाते हैं. बैंक को हर गलत काम से बचाइए. धोखाधडी से बचाइए. तभी हमारा बैंक तीव्र गति से आगे बढेगा.

हम सभी को निरंतर अच्छा कार्य करना है. बैंक को आगे ले जाना है. सफलता के शीर्ष पर पहुंचाना है . हम सब एक टीम के रूप में मिलकर अच्छा कार्य करेंगे तो यह सब संभव होगा. अच्छा परिणाम प्राप्त होगा.

पुन: शुभकामनाओं सहित

(एम. वी. राव)

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी

आज़ादी का अमृत महोत्सव

कार्यपालक निदेशक का संदेश
Message from Executive Director

मेरे प्रिय सेन्ट्रलाइट साथियो,

सर्वप्रथम मैं अपने बैंक के पीसीए से बाहर आने के लिए मैं अपने सम्माननीय एमडी और सीईओ सर के कुशल नेतृत्व के लिए उनके प्रति आभार व्यक्त करता हूं और आप सभी को हार्दिक बधाई देता हूं.

हमारे देश में प्रतिवर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस मनाया जाता है, भारत सरकार के निर्देश से इस वर्ष हमारे बैंक ने 14 सितंबर से 14 अक्टूबर तक हिंदी माह का आयोजन किया. इस दौरान विभिन्न प्रकार की हिंदी प्रतियोगिताओं, संगोष्ठियों एवं प्रदर्शनियों इत्यादि का आयोजन किया गया. प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए गए. मैं हिंदी प्रतियोगिताओं में सहभागिता करने वाले सभी सदस्यों को भी बधाई देता हूं जिनके कारण ये प्रतियोगिताएं सफल हुई.

हिंदी हमारे देश की राजभाषा है. इसके अतिरिक्त हिंदी परस्पर संवाद की एक सरल भाषा है. इसके माध्यम से हम अपनी बात आसानी से कह सकते हैं. हिंदी में उत्कृष्ट काम करने के आधार पर भारत सरकार से हमें पुरस्कार भी मिलते हैं. भारत के लगभग सभी क्षेत्रों के नगरिक हिंदी जानते हैं, इसलिये हमें हिंदी में अधिक से अधिक काम करना चाहिए.

हमारे बैंक में ग्राहक सेवा की उत्कृष्टता हमें सतत बनाए रखनी है. हमें अपने ग्राहकों को अपने से निरंतर जोड़े रखना है. इसके लिए हमें उनसे अपने संबंध बेहतर बनाकर रखने हैं. ग्राहकों को अधिकतम संभव सुविधाएं प्रदान करनी है, उन्हें हमारा बैंक अपने परिवार जैसा लगे, ऐसा महसूस करवाना है. ग्राहकों को अपनी ऋण - जमा योजनाओं की जानकारी देनी है तथा बैंक की समस्त योजनाओं का यथासंभव प्रचार करना है तभी हमारा बैंक वर्तमान प्रतिस्पर्धात्मक बैंकिंग में आगे बढ़ पायेगा.

सफलता की शुभकामनाओं सहित,

धन्यवाद

(आलोक कुमार श्रीवास्तव)
कार्यपालक निदेशक

आज़ादी का अमृत महोत्सव

संपादकीय
Editorial

प्रिय सेन्ट्रलाइट साथियो,

हमारे सम्माननीय एम.डी.एवं सीईओ सर के सघन प्रयासों से सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया पीसीए से बाहर आया है, इसके लिए सर को हार्दिक धन्यवाद देते हुए, मैं सभी सेन्ट्रलाइट को हार्दिक बधाई देता हूं. हमारे बैंक एवं हम सब के लिए यह अच्छा अवसर है क्योंकि पीसीए के कारण बहुत से प्रतिबंध जो बैंक पर लगाए गए थे अब समाप्त हो जाएंगे और बैंक की प्रगति की गति तीव्र होगी.

अभी-अभी हमने हिंदी माह मनाया. बहुत सारे हिंदी कार्यक्रम किए. अब हमें उत्साहपूर्वक हिंदी में काम करना चाहिए, इससे हमारी ग्राहक सेवा भी बेहतर होगी और बैंक के व्यवसाय में भी बढ़ोतरी होगी. हमारा ध्येय होना चाहिए कि हम बैंकिंग के हर क्षेत्र में लगातार अच्छा कार्य करें और सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया को निरंतर प्रगति के पथ पर ले जाएं.

वर्तमान में जैसा आप सभी जानते हैं कि हमारी ब्याज दरें अत्यधिक प्रतिस्पर्धात्मक हैं और हम डिजिटल बैंकिंग में भी सभी बैंकों की तुलना में बेहतर प्रदर्शन कर रहे हैं. इसलिए हमें अधिक से अधिक ग्राहक बनाने चाहिए और बैंक का व्यवसाय बढ़ाने में अधिक से अधिक योगदान देना चाहिए. हमारा बैंक आगे बढ़ेगा तभी हम सब भी आगे बढ़ेंगे इसलिए बैंक की प्रगति के लिए हम सभी को एक टीम के रूप में पूर्ण निष्ठा एवं लगन से उत्कृष्ट कार्य करना होगा.

धन्यवाद

(स्मृति रंजन दाश)
संपादक/महाप्रबंधक (मासंवि/राजभाषा)

यदि तुम में सहनशक्ति है तो तुम में किसी बात की कमी नहीं - नारायण दास

राष्ट्रीय आंदोलन में हिंदी की भूमिका

- घनश्याम दास अहिरवार
संकाय सदस्य एसपीबीटीसी,
मुंबई.

भारत के स्वाधीनता आंदोलन में हिंदी का बड़ा महत्व रहा. महात्मा गांधी गुजरात से थे, सी. राजगोपालाचारी मद्रास से थे, राजा राम मोहन राय, ईश्वर चंद्र विद्यासागर व देवी प्रसाद चट्टोपाध्याय जैसे महान दार्शनिक व क्रांतिकारी बंगाली थे, ऐसे ही देश के अलग-अलग प्रांतों के क्रांतिकारियों ने स्वतंत्रता आंदोलन में खुद को खपा दिया. उन्होंने स्वाधीनता का संदेश देशभर में जन-जन तक पहुंचाने के लिए हिंदी को चुना.

"स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है जिसे मैं प्राप्त करके रहूंगा" का नारा देने वाले नेता बाल गंगाधर तिलक का स्वाधीनता संग्राम के इतिहास में विशिष्ट स्थान है. भाषा के बारे में तिलक का विचार था कि हिन्दी ही एक मात्र भाषा है जो राष्ट्रभाषा हो सकती है. हिन्दी का समर्थन करते हुए 'नागरी प्रचारिणी पत्रिका' में उन्होंने लिखा था "यह आंदोलन उत्तर भारत में केवल एक सर्वमान्य लिपि के प्रचार के लिए नहीं है, यह तो उस आन्दोलन का एक अंग है जिसे मैं राष्ट्रीय आन्दोलन कहूंगा और जिसका उद्देश्य समस्त भारत वर्ष के लिए एक राष्ट्रीय भाषा की स्थापना करना है, क्योंकि सबके लिए समान भाषा राष्ट्रीयता का महत्वपूर्ण अंग है, अतएव अदि आप किसी राष्ट्र के लोगों को एक दूसरे के निकट लाना चाहें तो सबके लिए समान भाषा के बढ़कर सशक्त अन्य कोई बल नहीं है."

तिलक जहां हिन्दी को राष्ट्रभाषा मानते थे वहां देवनागरी को हिन्दी की लिपि मानते थे. तिलक ने राष्ट्रीय चेतना को प्रबल करने के लिए सन् 1903 में 'हिन्दी केसरी' नामक पत्रिका का प्रकाशन भी प्रारंभ किया और इस बात का परिचय दिया कि जन साधारण तक अपने विचारों को पहुंचाने के लिए केवल हिन्दी ही एक सरल और सशक्त माध्यम है. साथ ही तिलक ने अंग्रेजी की बजाय हिन्दी में भाषण देने की परम्परा आरंभ कर अन्य नेताओं के समक्ष एक आदर्श प्रस्तुत किया.

महात्मा गांधी भाषा के प्रश्न को राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम के प्रश्नों में सबसे अधिक महत्वपूर्ण मानते थे. उन्होनें प्रारंभ से ही हिन्दी को स्वतंत्रता संग्राम की भाषा बनाने के लिए अथक परिश्रम किया. उनका अनुभव था कि "पराधीनता चाहे राजनीतिक क्षेत्र की हो अथवा भाषाई क्षेत्र की, दोनों ही एक दूसरे की पूरक और पीढ़ी-दर-पीढ़ी सदा परमुखापेक्षी बनाये रखने वाली है" सन् 1917 में उन्होंने एक परिपत्र निकाल कर हिन्दी सीखने के कार्य का सूत्रपात किया. गांधीजी की प्रेरणा से 1925 में काँग्रेस ने यह प्रस्ताव पास किया कि कांग्रेस का, काँग्रेस की महासमिति का और कार्यकारिणी समिति का कामकाज आमतौर पर हिन्दुस्तानी में चलाया जायेगा. इसी का परिणाम था कि सन् 1925 में अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन का अधिवेशन भरतपुर में हुआ जिसकी अध्यक्षता गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने की और उन्होंने हिन्दी में बोलकर हिन्दी का प्रबल समर्थन किया.

01 जुलाई

1925 : भारत के प्रसिद्ध हिन्दी कथा साहित्यकार अमरकांत का जन्म हुआ था.

02 जुलाई

1949 : वियतनाम को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता मिली.

2002 : हेपेटाइटिस सी की जांच को पूरे भारत में अनिवार्य किया गया

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने विभिन्न राज्यों में हिन्दी-प्रचार करने के लिए नेताओं को जहाँ प्रेरित किया वहीं लोगों के अलग-अलग जत्थों को राज्यों में भेजा. उन्होंने खुद अपने बेटे श्री देवदास गांधी को हिन्दी-प्रचार के लिए भारत के दक्षिण में भेजा था. आज़ादी के इस मुहिम में इसे पुनीत कर्तव्य मानकर विभिन्न राज्यों में विभिन्न हिन्दी-प्रचारक गए और वहाँ उन्होंने अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया. राष्ट्रीय आंदोलन में शिरकत करते हुए राष्ट्रीय चेतना से युक्त हमारे ये हिन्दी-प्रचारक आज़ादी में और आज़ादी के बाद भी लोगों को जागृत करते हुए उनके बीच हिन्दी का प्रचार-प्रसार करते रहे. गांधीजी के प्रयत्नों से तमिलनाडु में हिन्दी के प्रति ऐसा उत्साह प्रवाहित हुआ कि प्रांत के सभी प्रभावशाली नेता हिन्दी का समर्थन करने लगे. यह वह समय था जब चक्रवर्ती राजगोपालाचारी जैसे नेता हिन्दी के प्रचार को अपना भरपूर सहयोग दे रहे थे.

'पंजाब केसरी' के नाम से प्रसिद्ध लाला लाजपतराय एक महान देशभक्त शिक्षाशास्त्री ही नहीं, एक प्रभावशाली पत्रकार भी थे. पंजाब में हिन्दी के प्रचार का पूरा श्रेय लालाजी को जाता है. जब उर्दू हिन्दी का विवाद जोरों से चल रहा था, तब लालाजी ने हिन्दी का बड़ा समर्थन किया और उन्हीं के प्रयत्न से पंजाब के शिक्षा क्षेत्र में हिन्दी को स्थान मिला. उन्होंने अनेक शिक्षण संस्थाओं की स्थापना की जिनमें हिन्दी का अध्ययन अनिवार्य बनाया गया. लालाजी की प्रेरणा से ही पंजाब विश्वविद्यालय के पाठयक्रम में हिन्दी को स्थान मिला.

स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास पुरूष के रूप में विख्यात पंडित मदनमोहन मालवीय जी का नाम हिंदी प्रचारकों में बड़े आदर और सम्मान के साथ लिया जाता है. वे न केवल एक महान हिंदीव्रती थे बल्कि हिंदी आंदोलन के अग्रणी नेता भी थे. हिंदी के प्रचार एवं प्रसार और हिंदी के स्वरूप निर्धारण इन दोनों ही दृष्टियों से उन्होंने हिंदी की अभूतपूर्व सेवा की. यह उन्हीं का प्रोत्साहन, समर्थन और प्रेरणा थी जिसकी बदौलत हिंदी प्रशासन एवं राजकाज की भाषा बनी. 'हिन्दी, हिन्दू और हिन्दुस्तान' की सेवा उनका संकल्प था. उनके सार्वजनिक जीवन की सक्रियता, उनके आदर्श और उनकी योजनाएँ इसी संकल्प से प्रेरित थी. मालवीयजी आजीवन भारतीय स्वराज्य के लिए कठोर तप करते रहे. उसी के समानान्तर हिन्दी की प्रतिष्ठापना के लिए भी वे अनवरत साधना में लीन रहे. सन् 1986 के काँग्रेस अधिवेशन में श्री मालवीय के भाषण से प्रभावित होकर कालाकांकर के राजा ने अपने हिन्दी दैनिक 'हिन्दुस्तान' का उन्हें संपादक बनाया उसके बाद उन्होंने हिन्दी साप्तहिक 'अभ्युदय' प्रारंभ किया और 1910 में प्रयाग से 'मर्यादा' नामक हिन्दी पत्रिका का भी प्रारंभ किया. उन्हीं की प्रेरणा से कई और हिन्दी पत्रिकाओं का जन्म हुआ.

राष्ट्रीय नेताओं में देशरत्न डॉ. राजेन्द्र प्रसादजी की हिन्दी सेवा से कौन परिचित नहीं है. भारतीय संविधान सभा के अध्यक्ष के रुप में हिन्दी को उचित स्थान दिलाने का श्रेय डॉ. राजेन्द्र प्रसाद को ही है. उन्होंने ही भारतीय संविधान की भारतीय भाषाओं में परिभाषिक कोष तैयार करवाने का महत्वपूर्ण कार्य किया है. भारत के प्रथम राष्ट्रपति के पद से उन्होंने जो हिन्दी की सेवा की उसका विशेष महत्व है. उनके कार्यकाल में सरकारी स्तर पर हिन्दी को मान्यता मिली.

हमने प्रमुख राष्ट्रीय नेताओं के योगदान का अत्यंत संक्षिप्त उल्लेख किया है. इसके अतिरिक्त अन्य बहुत से महत्वपूर्ण नेताओं के नाम गिनाये जा सकते हैं, जिन्होंने हिन्दी का उपयोग कर स्वतंत्रता संग्राम मे योगदान दिया.

सारांश:- यहां हमने देखा कि हिन्दी की भूमिका स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में महत्वपूर्ण रही है. देश की आजादी की लड़ाई में जन-जन को जोडने का काम हिन्दी ने किया.

03 जुलाई

1661 : पुर्तगाल ने बॉम्बे को ब्रिटिश राजा चार्ल्स द्वितीय को उपहार में दिया.

1884 : स्टॉक एक्सचेंज डाउजोंस ने अपना पहला स्टॉक इंडेक्स जारी किया.

04 जुलाई

1881: सिलिगुड़ी और दार्जिलिंग के बीच छोटी पटरी पर 'टॉय ट्रेन' चलाई गई.

1897: आंध्रप्रदेश के महान स्वतंत्रता सेनानी अल्लूरी सीताराम राजू का जन्म.

बैंक की प्रगति - मेरी प्रगति

- अनिन्दिता दास
सहायक प्रबंधक
क्षेत्रीय कार्यालय, बांकुड़ा
आंचलिक कार्यालय, कोलकाता

बैंक एक ऐसी सुरक्षित संस्थान है जहाँ लोग विश्वास के साथ अपने पैसे को जमा करते हैं और ज़रूरत के समय अपने पैसे को उपलब्ध भी कर सकते हैं. बैंक केवल पैसे जमा ही नहीं करता बल्कि ज़रूरत पड़ने पर लोन के माध्यम से व्यक्ति या फर्मों को पैसे उपलब्ध भी करवाता है. ये एक बैंक के प्राथमिक कार्य हैं लेकिन एकमात्र नहीं हैं. बैंक अपने ग्राहकों को कई अन्य सेवाएँ भी प्रदान करते हैं जैसे लॉकर सुविधा, धन का हस्तांतरण, ड्राफ्ट और पोर्टफोलियो प्रबंधन जारी करना आदि. बैंक देश का एक महत्त्वपूर्ण संस्थान है. देश के अर्थव्यवस्था के लिए बैंक का काफी महत्त्व है. बैंक ना हो तो देश की अर्थव्यवस्था अस्त व्यस्त हो जाएगी. बैंक देश में धन के प्रवाह को बनाए रखते हैं और साथ ही देश के आर्थिक विकास के लिए भी महत्त्वपूर्ण हैं. देश में वित्तीय स्थिरता बनाए रखने में बैंक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं. ये अपने वित्त को बेहतर ढंग से प्रबंधित करने में सहायता करने के लिए कई सेवाएँ प्रदान करती हैं. उपलब्ध कराई जा रही सेवाएँ और कार्य समय के साथ - साथ बढ़ते चले गए हैं.

सदियों से बैंकिंग प्रणाली चली आ रही है. 14 वीं सदी में इटली के कुछ हिस्सों में बैंकिंग सेवा की शुरूआत हुई थी. यह प्राचीन युग के बाद से लोगों के बीच उधार देने और उधार लेने के अवधारणा के तर्ज पर शुरू की गई थी. समय के साथ - साथ धन जमा करने और धन उधार देने की प्रणाली विकसित होती चली गई. फागर्स, मेडिसिस , बीरेनबर्क्स, रोथस्चिल्स बैंकिंग राजवंशों में से हैं जो बैंकिंग के इतिहास में केंद्रीय भूमिका निभाने के लिए जाने जाते हैं. 17 वीं सदी में बैंकनोट्स और रिजर्व बैंकिंग जारी करने जैसी कुछ आधुनिक बैंकिंग सेवाएं शुरू हुई. भारत में बैंकिंग प्रणाली वैदिक सभ्यता के जमाने से है. उस युग में जरूरतमंदों को ऋण दिया जाता था. उस अवधि में ऋण को ऋणलेख या ऋणपत्र के नाम से जाना जाता था. बैंक ऑफ हिंदुस्तान भारत में स्थापित पहला बैंक था. यह 1770 में कलकत्ता में खोला गया था. बैंक ऑफ बंबई, बैंक ऑफ कलकत्ता और बैंक ऑफ मद्रास की स्थापना 19 वीं शताब्दी की शुरुआत में हुई थी.

किसी भी देश की उन्नति का आधार उसके बैंक होते हैं. लोगों को जितना कम ब्याज पर ऋण मिलेगा, लोग समयानुसार अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करके उसे यथासमय में चुका देंगे. बैंकों के ईमानदार अधिकारी ही बैंक की शान होते हैं. हमारे देश में भी बैंकों की स्थापना देश की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बनाने हेतु की गई थी. बैंक हमारे देश की अर्थव्यवस्था की सबल धुरी है.

देश में अठारहवीं शताब्दी के प्रारम्भ में मुम्बई एवं कोलकाता में एजेंसीघरों में बैंकों का कार्य प्रारम्भ किया. इनका प्रमुख कार्य प्रतिबन्धित व्यापार एवं उद्योगों को विशेष बैंकिंग सेवाएं प्रदान करना था. स्वतंत्रता आंदोलन के कारण भारतीय बैंक स्थापना को अनुकूल स्थिति मिल गई. व्यापारियों एवं उद्योगपतियों में

05 जुलाई

1968 : भारत की पहली पनडुब्बी सोवियत रूस से पहुंची

1994 : जेफ बेजोस ने ई-कॉमर्स वेबसाइट अमेजन की स्थापना की

06 जुलाई

1885: महान वैज्ञानिक लुई पाश्चर ने रेबीज रोधी टीके का पहली बार इस्तेमाल किया

1892: दादा भाई नौरोजी ब्रिटेन की संसद में चुने जाने वाले प्रथम अश्वेत एवं भारतीय बने

अपने खाते विदेशी बैंकों से हटाकर भारतीय बैंकों में खोले.

सन् 1921 ई. में इम्पीरियल बैंक की स्थापना हुई जो सरकार के बैंकर के रूप में विकसित हुआ. 1933 ई. में केन्द्र सरकार ने भारतीय हाथों में ज़िम्मेदारी देने से पूर्व संविधान में सुधार किया तथा अप्रैल, 1935 ई. को 'रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया' की स्थापना की गई. स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद इम्पीरियल बैंक ऑफ इंडिया का राष्ट्रीयकरण जुलाई, 1955 ई. में कर दिया गया. इसके समस्त परिसम्पत्तियों एवं देयताओं को लेकर 'स्टेट बैंक ऑफ इंडिया' की स्थापना की गई. भारतीय बैंकिंग के विकास तथा सुदृढ़ व्यवस्था हेतु बैंकों का एकीकरण हुआ. 1967 ई. में निजी क्षेत्रों के बैंकों पर सामाजिक नियंत्रण व्यवस्था लागू की गई. 19 जून, 1969 ई. में देश के 14 बड़े व्यापारिक बैंकों का राष्ट्रीयकरण किया गया. फलत: रिज़र्व बैंक ऑफ इंडिया के नियम एवं आदेशों का पालन प्रत्येक बैंक के लिए अनिवार्य हो गया. बैंकों के राष्ट्रीयकरण के उपरान्त व्यावसायिक बैंकों की अनेकानेक शाखाएँ खुलने लगीं.

बैंक राष्ट्र के आर्थिक तंत्र की रीढ़ है. बैंकों के स्वामित्व के विषय में अनेक राजनीतिज्ञों एवं अर्थशास्त्रियों का मत है कि बैंक गैर- सरकारी व्यक्तियों के हाथों में नहीं रहना चाहिए. राष्ट्रहित की दृष्टि से ही भारत सरकार ने श्रीमती इंदिरा गांधी के प्रधानमंत्रित्व काल में बैंकों का राष्ट्रीयकरण कर उनके प्रबंध, संचालन तथा लाभ पर अपना अधिकार प्राप्त कर लिया.

आम आदमियों के जीवन - स्तर को ऊँचा उठाने के लिए बैंकों ने विविध ऋण योजनाएँ चला रखी हैं. बैंक मकान हेतु ऋण देते हैं, मकान क्रय, सुधार एवं जीर्णोद्धार हेतु ऋण देते हैं. घर के लिए उपयोगी सामान खरीदने हेतु ऋण देते हैं. मोटर साइकिल, कार एवं अन्य वाहनों के लिए बैंकों द्वारा ऋण दिया जाता है. बेरोज़गारों को दुकान चलाने हेतु भी ऋण का विधान है. इतना ही नहीं, अच्छे तथा योग्य छात्रों को देश - विदेश में अध्ययन करने के लिए भी ऋण की व्यवस्था है. इससे योग्य एवं दरिद्र छात्र अपने जीवन को उन्नत बना सकते हैं. इन ऋणों के अतिरिक्त अन्य अनेक ऋण योजनाएँ चालू हैं जिसमें औद्योगिक ऋण योजना प्रमुख है. इसके साथ - साथ बैंक ने कृषि क्षेत्र को बढ़ावा देने में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है. कृषि क्षेत्र अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है. विशेष बैंक हैं जो कृषि गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए कम ब्याज पर किसानों को ऋण प्रदान करते हैं.

बैंक सामाजिक संस्था है जो आर्थिक क्षेत्र में ही नहीं अपितु अन्य क्षेत्रों में एक समान कल्याण प्रेरक के रूप में मानी जाती है. आधुनिक युग में राष्ट्र की अर्थव्यवस्था बैंकों द्वारा नियंत्रित होती है. राष्ट्र एवं समाज के साथ बैंकों का घनिष्ठ सम्बन्ध है. बैंक ग्राहक सेवा के माध्यम से ही समाज सेवा करते हैं. मानव की आर्थिक, सामाजिक तथा राजनीतिक विकास बैंकों से जुड़ा है. बैंक के समक्ष अनेक महत्त्वपूर्ण दायित्व हैं. उनमें से एक है उपेक्षाग्रस्त जनजाति समाज का उद्धार एवं उत्थान करना. उपेक्षित वर्ग को आत्मनिर्भर बनाने में योगदान में सक्षम है. अंधे, बधिर तथा विकलांगों के संस्थानों को आर्थिक सहायता देकर बैंक उन्हें रोजगार के अवसर सुलभ कराते हैं. नगरों के विकास में बैंक बढ़ - चढ़कर अपना योगदान कर रहे हैं. मलिन बस्तियों के निवासियों, मध्यमवर्गीय परिवार के लोगों एवं अन्य तिरस्कृत समाज के लोगों को बैंक सहानुभूतिपूर्वक सहायता दे रहे हैं. चिकित्सा शिविर, औषधि वितरण, शौच - स्नानादि व्यवस्था तथा बच्चों को अध्ययन सामग्री आदि की सुविधाएँ जुटाने में बैंक भरपूर सहयोग प्रदान कर रहे हैं. कलाकार चाहे किसी वर्ग का हो बैंक उन्हें सहायता प्रदान

07 जुलाई

1656: सिखों के आठवें गुरू हर किशन का जन्म

1948: बहुउद्देश्यीय परियोजना के लिए दामोदर घाटी निगम की स्थापना

08 जुलाई

1497: पुर्तगाली नाविक वास्को डी गामा अपने जहाज से रवाना हुये और भारत की यात्रा समुद्र से करने वाले पहले यूरोपीय बने

करके कला के साथ - साथ कलाकार को भी समृद्ध बना रहे हैं. कुटीर उद्योगों हेतु विपणन सुविधाएँ भी प्रदान की जा रही है. इस प्रकार जीवन को विकासोन्मुख बनाने में बैंक अपना योगदान कर समाज एवं राष्ट्र को सेवा करते हुए जीवनाधार स्तम्भ बन गए हैं.

कोविड- 19 की बात करें तो कोई भी इस विषय में अनभिज्ञ नहीं है. कोविड - 19 महामारी के चलते पिछले दो साल विश्व अर्थव्यवस्था के लिए कठिन रहे हैं. संक्रमण की नई लहरों, आपूर्ति श्रृंखला में व्यवधान, और हाल ही में मुद्रास्फीति के कारणवश नीति - निर्माण के लिए यह समय विशेषत: चुनौतीपूर्ण रहा है. कोरोना वायरस के कारण देशभर में लॉकडाउन रहा है. सभी फैक्ट्रीयां, कार्यालय, मॉल्स, व्यवसाय आदि सब बंद रहे हैं. जिसके फलस्वरूप भारत की अर्थव्यवस्था कठिन दौर में पहुँच चुकी है. इस दौर में पुलिस, सेना, डॉक्टर्स आदि के साथ - साथ बैंक भी एक ऐसा महत्त्वपूर्ण वर्ग है जो उतनी ही लगन से अपने कर्तव्य और जनता की सेवा में लगा हुआ है. आज की तारीख में बैंक कर्मी ही हैं जिन्हें सबसे ज्यादा लोगों के सम्पर्क में रहना पड़ता है. देश की आर्थिक स्थिति के खराब होने के बावजूद बैंक कर्मी तमाम तरह की नई योजनाओं के द्वारा लोगों के आर्थिक उद्धार का काम कर रहे हैं. भारतीय रिज़र्व बैंक ने भी कई उपायों की घोषणा की जो देश के वित्तीय प्रणाली को ₹ 374000 करोड़ उपलब्ध कराएंगे. साथ ही भारतीय रिज़र्व बैंक ने अर्थव्यवस्था को पुनर्जीवित करने के लिए मार्च के बाद प्रमुख ब्याज दरों में 115 आधार अंको (1.15 प्रतिशत अंकों) की कमी की है. कोविड -19 की स्थिति में भी बैंक ने अपने सभी ग्राहकों को डिजिटल प्लाटफॉर्म के माध्यम से सारी सेवाएँ उपलब्ध करवाई हैं. अब ग्राहकों को अपने खाते से संबंधित सभी जानकारी घर बैठे ही प्राप्त हो जाती है. इतना ही नहीं प्रमुख बैंकों ने तो बुजुर्गों के लिए डोरस्टेप बैंकिंग की सुविधा भी शुरू की है ताकि उन्हें इस संकट की स्थिति में बैंक ना जाना पड़े. डोरस्टेप बैंकिंग में उन्हें पैसे जमा और निकासी के साथ - साथ कई अन्य आवश्यक सुविधाएँ भी उपलब्ध करवाई गई हैं.

बैंक किसी भी देश का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा है. सामान्य जनता के साथ - साथ पूरे देश के वित्तीय मुद्दों को कम करने के लिए बैंकों की स्थापना की गई है. विभिन्न प्रकार के बैंक विभिन्न उद्देश्यों की पूर्ति करते हैं और विभिन्न वर्गों की जरूरतों को पूरा करने के लिए स्थापित किए गए हैं. राष्ट्रीय बैंक आर्थिक तंत्र के आधार के साथ जन - जन का सुकर बन चुके हैं. कृषि कार्यों के लिए ऋण देकर किसानों के जीवन स्तर सुधार हेतु भी बैंक प्रयत्नशील हैं. आज बैंक अपनी सेवाओं के बल पर समाज में अपनी गहरी जड़ें जमा चुके हैं और जनसाधारण तक पहुँच चुके हैं. बैंक केवल शहरों तक ही सीमित नहीं रहे बल्कि ग्रामों में भी इनका विस्तार हो चुका है. बैंकों के विस्तार से देश की सम्पन्नता का विस्तार हो रहा है. आधुनिक बैंकिंग सेवाओं ने व्यापार, उद्योगों के विकास और अन्य गतिविधियों की प्रक्रिया को आसान बनाने में मदद की है. जो देश की अर्थव्यवस्था के विकास में मदद करते हैं. कोविड- 19 के समय में भी बैंक ने डिजिटल बैंकिंग और डोरस्टेप बैंकिंग जैसी आधुनिक सेवाएँ उपलब्ध करवाई हैं जो ना केवल सामान्य जनता के लिए बल्कि बड़े - बड़े व्यापारियों के लिए भी मददगार रही हैं. बैंक और अन्य वित्तीय संस्थान जो व्यवसायों को बढ़ावा देते हैं और व्यक्तियों के धन तथा अन्य मूल्यवान संपत्तियों की रक्षा करते हैं, निश्चित रूप से देश की अर्थव्यवस्था के विकास में एक अभिन्न भूमिका निभाते हैं. इसमें कोई सन्देह नहीं है कि भविष्य में बैंकों की प्रगति से देश की भौतिक और आर्थिक सुसम्पन्नता में भी उन्नति होगी.

09 जुलाई

1816: अर्जेंटिना ने स्पेन से स्वतंत्रता हासिल की.

1875: बंबई स्टॉक एक्सचेंज की स्थापना.

10 जुलाई

1973 बांग्लादेश को पाकिस्तान ने स्वतंत्र राष्ट्र स्वीकार किया.

1972 : मुम्बई के माझगांव बंदरगाह से पूर्ण वातानुकूलित पोत हर्षवर्धन का जलावतरण.

बैंक के लिए मेरा कर्तव्य

- दिपांकर दत्ता
प्रबंधक
क्षेत्रीय कार्यालय, अपर असम
आंचलिक कार्यालय, गुवाहाटी

प्रस्तावना : बैंक एक ऐसा सुरक्षित संस्थान है जहां लोग विश्वास के साथ अपने पैसे जमा करते है. घर पर हमेशा पैसे और गहने सुरक्षित नहीं रहते है. बैंक में हम सब निश्चित होकर अपनी जमा पूंजी को रख सकते है. बैंक अपने उपभोगकर्ताओं को काफी सेवाएं प्रदान करते हैं. बैंकों के कारण लोगों को अपने भविष्य की चिंता कम सताती है. अभी सिर्फ शहरों में ही नहीं गाँवों में भी किसानों की सुविधा को देखते हुए बैंक खुल गए है. बैंक कई तरह के होते हैं जैसे रिटेल बैंक, सेविंग्स बैंक, राष्ट्रीय बैंक, निवेश बैंक, सहकारी बैंक, कंज्यूमर बैंक, एक्चेंज और औद्योगिक बैंक.

भारत में बैंकिंग का इतिहास : भारत के आधुनिक बैंकिंग की शुरुआत ब्रिटिश राज में हुई. 19वीं शताब्दी के आरंभ में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने 3 बैंकों क शुरुआत की - बैंक ऑफ बंगाल, बैंक ऑफ बॉम्बे और बैंक ऑफ मद्रास. लेकिन बाद में इन तीनों बैंकों का विलय एक नये बैंक 'इंपीरियल बैंक' में कर दिया गया. इलाहाबाद बैंक भारत का पहला निजी बैंक था. भारतीय रिजर्व बैंक 1935 में स्थापित किया गया था और बाद में पंजाब नेशनल बैंक, बैंक ऑफ इंडिया, कैनरा बैंक और इंडियन बैंक स्थापित हुए. भारत में प्रारंभ में बैंकों की शाखायें और उनका कारोबार वाणिज्यिक केन्द्रों तक ही सीमित थी. बैंक अपनी सेवायें केवल वाणिज्यिक प्रतिष्ठानों को ही उपलब्ध कराते थे. स्वतंत्रता से पूर्व देश के केंद्रीय बैंक के रूप में भारतीय रिजर्व बैंक ही सक्रिय था. जबकि सबसे प्रमुख बैंक इम्पीरियल बैंक ऑफ इण्डिया था. उस समय भारत तीन तरह के बैंक कार्यरत थे - भारतीय अनुसूचित बैंक, गैर अनुसूचित बैंक और विदेशी अनुसूचित बैंक.

बैंक की विशेषताएँ

1. जमा राशि का भुगतान करना - बैंक जमाकर्ता द्वारा निकासी पर्ची प्रस्तुत किये जाने पर जमा राशि का भुगतान भी करते है.
2. साख का सृजन करना - बैंक साखपत्र सृजन कर साख का सृजन करते है.
3. बैंक ग्राहकों की प्रतिनिधि, प्रन्यास एवं देनदार हैं - बैंक ग्राहकों के कहने पर बिजली, पानी, किराया का भुगतान ग्राहक के खाते में से करते हैं - सिर्फ थोड़ा सा कमीशन लेकर. एक प्रन्यास के रूप में लॉकर्स सुविधा व देनदार के रूप में जमा धन की वापसी संबंधी कार्य करते है.
4. जनता से जमा प्राप्त करना - बैंक जनता से चार प्रकार से जमा प्राप्त करते हैं - स्थायी जमा, आवर्ती जमा, चालू जमा एवं बचत जमा.
5. ऋण देना अथवा विनियोग करना - बैंक कम ब्याज पर जमा स्वीकार कर अधिक ब्याज पर ऋण प्रदान करते है.
6. बैंकिंग व्यवसाय का उद्देश्य लाभ प्राप्त करना है - बैंक लाभ प्राप्ति की इच्छा से जमा स्वीकार करती है एवं ऋण प्रदान करती है. साथ ही ग्राहक सुविधा प्रदान करते हुए अन्य कार्य करती है.

बैंकों के प्रकार: अलग - अलग प्रकार के कार्यों को करने के लिए बैंक भी अलग - अलग प्रकार के होते हैं. नीचे हमने आपको कुछ प्रमुख प्रकार के बैंकों के बारे में जानकारी दी है -

1. **वाणिज्यिक बैंक :** वाणिज्यिक बैंक को व्यवसायिक बैंक या व्यापारिक बैंक भी कहा जाता है. कमर्शियल बैंकों को बैंकिंग विनियमन अधिनियम, 1949 के तहत विनियमित किया जाता है. इस प्रकार के बैंकों को लाभ कमाने के उद्देश्य से बनाया गया है. देश के आर्थिक संगठन में वाणिज्यिक बैंक की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होती है. वाणिज्यिक बैंक जनता के पैसों को जमा करते हैं और जनता तथा सरकार को ऋण देते हैं.

11 जुलाई

1921: मंगोलिया को चीन से आजादी मिली.

12 जुलाई

1823 - भारत में निर्मित प्रथम बाष्प इंजन युक्त जहाज 'डायना' का कलकत्ता (अब कोलकाता) में जलावतरण.

1960 - भागलपुर और रांची यूनिवर्सिटी की स्थापना.

विनम्रता श्रेष्ठ गुण है.

2. **अनुसूचित बैंक :** अनुसूचित बैंक उन बैंकों को कहा जाता है जिनका नाम भारतीय रिजर्व बैंक अधिनियम, 1934 के दूसरी अनुसूची में शामिल होता है. इस प्रकार के बैंकों की प्रदत पूंजी तथा संचयों का कुल मूल्य न्यूनतम 5 लाख रूपये होना चाहिए और अनुसूचित बैंकों को आरबीआई को संतुष्ट करवाना होता है कि उनका कारोबार किसी ऐसे तरीकों से नहीं चलाया जा रहा है जो जमाकर्ता के हितों के विरुद्ध हो. अगर कोई बैंक आरबीआई के इन नियमों का पालन नहीं करता है तो आरबीआई उन्हें अपनी अनुसूची से हटा सकता है. अनुसूचित बैंकों को आरबीआई बैंक की दरों में लोन प्रदान करवाता है.

3. **सहकारी बैंक :** सहकारी बैंकों को सहकारी समितियां अधिनियम, 1912 के तहत स्थापित किया गया है. इस प्रकार के बैंक No Profit No Loss के सिद्धांत पर काम करते हैं. इन बैंकों का मुख्य कार्य देश के छोटे व्यवसायों, उद्यमियों, उद्योग, स्वरोजगारों और किसानों को आपातकालीन लोन प्रदान करवाना होता है. देश के विकास में सहकारी बैंक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं.

4. **विकास बैंक :** इस प्रकार के बैंकों को किसी एक विशेष क्षेत्र में स्थापित किया जाता है. इन बैंकों का मुख्य उद्देश्य क्षेत्र में विकास करना होता है. विकास बैंक अपने क्षेत्र में लोगों को व्यवसायों के लिए लंबी अवधि लोन प्रदान करवाते हैं जिससे कि क्षेत्र का विकास हो सके.

5. **विनिमय बैंक :** अगर आपके पास किसी दूसरे देश की मुद्रा है तो आप विनिमय बैंक में विदेशी मुद्रा को भारतीय रूपये में बदल सकते हैं. और अगर आप किसी दूसरे देश में घूमने का प्लान बना रहे हैं तो विनिमय बैंक के द्वारा अपनी मुद्रा को विदेशी मुद्रा में बदल सकते हैं. विनिमय बैंक का मुख्य कार्य मुद्राओं का एक्सचेंज करना होता है.

6. **पेमेंट बैंक :** पेमेंट बैंक एक आधुनिक प्रकार का बैंक है जिसका मुख्य उद्देश्य है कि दूर दराज के गांवों, कस्बों में बैंकिंग की सुविधा पहुंचाना. पेमेंट बैंकों को Financial Inclusion को बढ़ावा देने के लिए खोला गया है जिससे कि देश के हर क्षेत्र का व्यक्ति बैंकिंग की सुविधाओं का लाभ उठा सके.

7. **औद्योगिक बैंक :** औद्योगिक बैंक वे बैंक होते हैं जो उद्योगों में इस्तेमाल होने वाले उपकरणों के लिए लोन प्रदान करते हैं. भारत में बहुत कम औद्योगिक बैंक हैं लेकिन विदेशों में अनेक सारे औद्योगिक बैंक होते हैं.

8. **केन्द्रीय बैंक :** केन्द्रीय बैंक किसी भी देश के सर्वोच्च बैंक होते हैं जो पूरे देश की बैंकिंग प्रणाली को दिशा - निर्देश देते हैं. देश के सभी बैंक केन्द्रीय बैंक के अंतर्गत ही काम करते हैं. केन्द्रीय बैंक में पूरी तरह से सरकार का स्वामित्व होता है. देश की बैंकिंग प्रणाली को मैनेज करने के अलावा केन्द्रीय बैंकों के अनेक सारे कार्य होते हैं. सभी देशों में केवल एक ही केन्द्रीय बैंक होता है. भारत का केन्द्रीय बैंक आरबीआई है.

बैंक के लिए मेरा कर्तव्य : हर कर्मचारी का अपने कार्यस्थल के प्रति कर्तव्य होता है. वैसे ही बैंक के कर्मचारियों का भी अपने बैंक और काम के प्रति कुछ कर्तव्य होता है. इन कर्तव्यों को निम्नलिखित रूप से दर्शाया गया है -

1. **ग्राहकों के प्रति कर्तव्य -** बैंकरों का मुख्य कर्तव्य ग्राहकों को उत्कृष्ट सेवा प्रदान करना है. बैंक के लिए अपना ग्राहक ही सब कुछ है.

2. **निष्ठा -** अपने कार्यों को निष्ठा के साथ करना किसी भी कर्मचारी के लिए जरूरी है. उसी तरह बैंक में कार्यरत कार्मिकों के लिए भी यह जरूरी है कि वे अपना काम सत्य निष्ठा से करें.

3. **बैंक के लिए लाभ कमाना -** बैंक के मुख्य लक्ष्यों मे से एक है लाभ कमाना, और बैंक के प्रत्येक कर्मचारी का यह दायित्व है कि वह अपने बैंक के लिए लाभ कमाने के लिए जितना हो सके उतना काम करें.

4. **पारदर्शिता -** बैंक के कार्यों में पारदर्शिता होना भी अत्यंत जरूरी है. चूंकि यह धन से जुड़ा काम है, इसलिए इसमें किसी भी प्रकार की छल-कपट और झिझक का कोई स्थान नहीं है.

निष्कर्ष : निष्कर्ष के रूप में हम कह सकते हैं कि किसी भी अन्य कर्मचारियों के तरह बैंक के कर्मचारियों का भी अपने बैंक के प्रति कर्तव्य और जिम्मेदारियां होती है, जिसके पालन से ही बैंक के साथ-साथ वे खुद भी विकास की ओर जा सकते हैं.

13 जुलाई

1803: राजा राम मोहन राय और एलेग्जेंडर डफ ने पांच छात्रों के साथ स्कॉटिश चर्च कॉलेज शुरू किया.

14 जुलाई

1850: मशीन द्वारा जमाई गई बर्फ का पहला सार्वजनिक प्रदर्शन.

1965: मंगल के पास से गुजरने वाले नासा के अंतरिक्ष यान ने किसी दूसरे ग्रह की पहली क्लोज अप तस्वीरें लीं.

सर्वसमावेशी भाषा - हिंदी भाषा

- दीपा,
(प्रबन्धक)
क्षेत्रीय कार्यालय, लुधियाना

भाषा- एक ऐसा संपर्क सूत्र है जो हर व्यक्ति, हर समाज, हर सभ्यता को एक दूसरे से बांधे रखती हैं. इस माध्यम से ही हम अपने मन के भाव, विचार एक दूसरे के साथ साझा कर सकते हैं. मानव मस्तिषक में आने वाले विचारों को सार्थक रूप देने का कार्य भाषा ही करती है. भिन्न भिन्न क्षेत्रो में जाने पर भाषा के रूप में बहुत ही बदलाव हो जाता है और अपनी मातृ भाषा के प्रति लोगो में अलग तरह का प्रेम उत्पन्न होता हैं, और समय के साथ साथ यह रिश्ता बिलकुल अपनी माता के साथ रिश्ते के जैसा हो जाता है, जिससे खुद को अलग कर पाना या इसमे बदलाव व्यक्ति के मन मस्तिष्क पर बहुत ही ज्यादा प्रभाव डालते हैं. भारत हमारा देश एक विशाल राष्ट्र है यहाँ पर भौगोलिक परिस्थितिया बहुत ही अलग अलग है और यहाँ के लोगों में एक विचित्र सी भिन्नता होने के पश्चात भी एक सम्पूर्ण साथ बना हुआ है. इस भिन्नता का एक स्वरुप भाषा का अलग अलग होना भी है. कबीर साहब की वो पंक्ति यहाँ पर बिलकुल सही बैठती है की यहाँ "कोस कोस पर बदले पानी और कदम कदम पर वाणी" यहाँ हर छोटे से छोटे क्षेत्र में भाषा का एक अलग ही स्वरूप देखने को मिलता है. तो ऐसे में उलझन ये पैदा होती है की कौन सी भाषा को हम अपनी राष्ट्रभाषा का दर्जा प्रदान कर सकते हैं. क्योंकि एक व्यक्ति का अपनी भाषा के लिए व्यक्तिगत प्रेम जब आहत होता है तो कही ना कही वह रौद्र रूप भी धारण कर सकता हैं. परन्तु देश का प्रतिनिधित्व करने के लिय हमे एक ऐसी भाषा की आवश्यकता की जरुरत है जो देश का प्रतिनिधित्व करने के साथ साथ जो सबको एक सूत्र में बाँध कर रख सकें. इन बातों को संज्ञान में रख कर जब हम प्रतिनिधि भाषा का अगर चुनाव करते हैं तो सबसे आगे "हिंदी" भाषा को

ही पाते हैं, क्योंकि यह ऐसी भाषा है जो बाकी भाषाओं की प्रतिद्वंदी न होकर सभी भाषाओ को साथ लेकर चलने का हूनर रखती है. हिंदी भाषा का विस्तार संस्कृत से हुआ हैं, संस्कृत भाषा का शब्द भण्डार बहुत ही विस्तृत है और इसी के चलते हिंदी भाषा का रूप भी बहुत ही ज्यादा विस्तृत है एवं इस भाषा का स्वभाव इस प्रकार का है कि बाहरी होने के कारण यह किसी भी शब्द का या भाषा का बहिष्कार नहीं करती, बल्कि उन्हें भी अपने रंग में रंगकर खुद में समाहित कर लेती है. हिंदी भाषा को नेतृत्व की बागड़ोर सँभालने के पीछे काफी सारे कारण हैं- अगर हम बारीकी से हमारी भाषा की संरचना इसका स्वरुप समझने का प्रयास करेंगे तो पाएँगे कि हिंदी भाषा अपने अंदर कितने ही गुण समाहित किये हुए है. सर्वप्रथम अगर बात करे शब्द भंडार की तो देखेंगे की इसके अंदर स्वरों एवं व्यंजनों की भरमार है, मात्राओं के होने से किसी भी शब्द

15 जुलाई

1909: आंध्र प्रदेश की प्रथम महिला नेता दुर्गाबाई देशमुख का जन्म हुआ.

1926: बॉम्बे (अब मुंबई) में पहली मोटरबस सेवा की शुरुआत हुई.

16 जुलाई

1856: हिंदू विधवाओं के पुनर्विवाह को कानूनी मान्यता मिली.

1925: नैशनल जियोग्राफिक ने पहली बार समुद्र के भीतर के दृश्यों की प्राकृतिक रंगीन फोटो निकाली.

को सरलता के साथ कम से कम शब्दों के उपयोग के साथ लिखा जा सकता है. दूसरा इस भाषा के अंदर किसी भी व्यंजन को आधा करके लिखने का भी प्रावधान हैं.

जैसे उदाहरण के लिए किसी भी व्यंजन के नीचे हलंत लगाकर आप उसके रूप को आधा कर सकते है - क्, ख्, ग्, घ् इत्यादि. हिंदी भाषा की लिपि देवनागरी है और इसी तरह से संस्कृत,मराठी, नेपाली, सिन्धी, कश्मीरी,बोडो, डोगरी, इन भाषाओ की लिपि भी देवनागरी हैं तो इन भाषाओं के साथ तो हिंदी का निकटतम रिश्ता बनता हैं. हिंदी भाषा में हर एक ध्वनि के लिए एक चिन्ह निहित हैं, अर्थात जो बोला जाता है वहीं लिखा जाता है जैसे "क" ध्वनि के लिए हिंदी में 'क' का ही उपयोग होता है, परन्तु अगर आप इसकी तुलना अंग्रेजी से करेंगे तो पाएंगे की यहाँ एक ध्वनी को अलग अलग तरह से लिखा जाता है उदहारण के लिए क - K,Ch,Ca,Q इत्यादि का प्रयोग किया जाता है.

तीसरा हिंदी भाषा में क्रमबद्धता एवं नियमानुसार शब्दों को पिरोया जाता हैं - जैसे स्वरों को एक अलग वर्गीकृत श्रेणी में और उसके पश्चात व्यंजनों को रखा जाता हैं. व्यंजनों में भी जो वर्गीकरण किया गया है वह भी ध्वनी के उद्गम स्थल को लेकर है जैसे क,ख,ग,घ,ड इन सबकी ध्वनी का उद्गम स्थल कंठ हैं इसलिए इन्हें एक साथ रखा गया हैं. अन्य भाषाओ में इस तरह का वर्गीकरण थोडा सा दुर्लभ जान पड़ता है. उदाहरण के लिए अगर अंग्रेजी भाषा का स्वरुप देखें तो ज्ञात होता है कि यहाँ पर स्वरों और व्यंजनों को मिश्रित रूप से रखा हुआ हैं. हिंदी भाषा की लिप्यान्तरण क्षमता काफी सशक्त हैं - हिंदी सभी भाषाओँ को लिपिबद्ध करने की क्षमता रखती हैं. हिंदी में अर्ध रूप करने में भी काफी सुगमता है बाकी भाषाओ में जोकि इतनी आसान जान नहीं पडती. हिंदी में पाई हटाकर या फिर हलन्त लगाकर अक्षर को आधा किया जा सकता हैं.

हिंदी भाषा में शब्दों का उच्चारण उनकी ध्वनि के अनुरूप ही रहता हैं, इसमें कोई बदलाव नहीं होता हैं, एवं हिंदी भाषा में कोई भी मूक अक्षर नहीं होता हैं. जैसे अगर हम अंग्रेजी भाषा को देखें तो वहाँ हमे अनिश्चितता जान पड़ती हैं जैसे Knife शब्द में K मूक हैं, PSYCHOLOGY में P मूक हैं, KNOW में K मूक हैं. इसलिए हम कह सकते हैं कि हिंदी भाषा निश्चितता का भाव प्रदान करती है. हिंदी भाषा का सबसे सुन्दर रूप हैं परिवर्तन को सहजता के साथ स्वीकार करना. भारतवर्ष पर अलग अलग देशों के शासकों ने अतिक्रमण किया और वे अपने साथ साथ अपनी भाषा को भी लेकर आए, लेकिन हिंदी भाषा ने विदेशी होने के कारण कभी भी किसी भी भाषा का बहिष्कार नहीं किया एवं उन्हें हमेशा अपने अंदर समाहित किया. जैसे नुक्ता का प्रयोग फ़ारसी भाषा में किया जाता था. परन्तु अब इसका उपयोग हिंदी भाषा में भी किया जाता है.

हिंदी भाषा विश्व पटल पर अपना परचम लहरा रही हैं, अगर हम वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में देखे तो भाषा जितनी संपन्न होगी वह देश भी उतना ही संपन्न होगा हिंदी भाषा के स्वरुप को आज के समय में अगर हम देखेंगे तो पाएंगे की जैसे जैसे भारतीय दूसरे देशो में अपना वर्चस्व स्थापित कर रहे हैं उनके साथ ही हिंदी भाषा विदेशो में अपना विस्तार कर रहीं हैं, क्योंकि विदेश में जब अलग अलग वर्गों के लोग जब साथ आते हैं तो हिंदी संपर्क भाषा बन जाती हैं. आज के समय में बड़ी बड़ी कम्पनियां भी अपने ग्राहकों को लुभाने के लिए हिंदी भाषा का भरपूर इस्तेमाल कर रहीं हैं जैसे - अमेज़न, वालमार्ट, अलीबाबा इत्यादि ने अपनी वेबसाइट का स्वरुप हिंदी में भी रखा हैं, साथ ही साथ इनके विज्ञापन भी हिंदी भाषा में दिए जाते हैं ताकि ये ज्यादा से ज्यादा लोगों तक अपनी पहुँच बना सकें

अत: हम कह सकते हैं कि हिंदी भाषा की पहुँच समय के साथ कम न होकर सूर्य के किरणों की भांति और भी ज्यादा बढ़ी हैं. अब ये हम सब का कर्त्तव्य बनता हैं कि हम अपनी भाषा के वर्चस्व को गंभीरता से लें, एवं इसकी उन्नति और प्रगति के लिए हर संभव प्रयास करें.

17 जुलाई

1948: भारत में महिलाओं को भारतीय प्रशासनिक सेवा और भारतीय पुलिस सेवा समेत सभी सार्वजनिक सेवाओं में भर्ती होने की पात्रता मिली.

18 जुलाई

1857: बंबई विश्वविद्यालय की स्थापना.

1980: पूर्ण रूप से भारत में निर्मित उपग्रह 'रोहिणी-1' पृथ्वी की कक्षा में स्थापित.

आत्मनिर्भर भारत की दिशा में हिंदी का योगदान

- सुश्री मीरा कोठावले
सहायक प्रबंधक
एसपीबीटीसी मुंबई.

प्रस्तावना - समूचा विश्व अपनी अनोखी दुनिया में एक गहरी नींद में सोया था और आंख खुलते ही सामने एक अलग ही दुनिया नजर आयी. जहाँ ना न्यूयॉर्क की शानोशौकत थी, ना पॅरिस का शृंगार, ना डीस्ने की जादू थी, ना चीन की अभेद्य दीवार. हर तरफ छायी थी विरानी और शमशान जैसी शान्ति. एक वायरस ने पूरी दुनिया को तहस नहस कर दिया. हमारा देश भी कोरोना महामारी आपदा से संक्रमित तो हुआ, लेकिन थकना, हारना, टूटना, बिखरना क्या भारतीयों को मंजूर था? भारत जैसे विकसणशील देश के लिए कोरोना महामारी की जंग में सतर्क रहते हुए और सरकार द्वारा घोषित सभी नियमों का पालन करते हुए भारतवासियों को बचना भी था और आगे बढ़ना भी था. इसी के मद्देनज़र आत्मनिर्भर भारत की संकल्पना ने जन्म लिया.

सरकार दवारा घोषित योजनाओं के सफल कार्यान्वयन का श्रेय भाषा को जाता है. भाषा ही योजनाओं की गुणवत्ता का बखान करते हुए उनकी खूबियों को जनसामान्य तक पहुँचाकर उनके लाभार्जन का दायरा बढ़ाने में सहायक बनती है. योजनाओं से संम्बंधित जानकारी जनसामान्य को अगर उन्हीं की भाषा में मुहैया की जाए तो योजनाओं को एक नया आयाम मिलता है. भारत को आत्मनिर्भर बनाने के सफल कार्यान्वयन में हिन्दी ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है. आइए, आत्मनिर्भर भारत मे हिन्दी की भूमिका पर विस्तार से चर्चा करते हैं

ऐतिहासिक पार्श्वभूमि- भारत का आत्मनिर्भरता शब्द से पुराना नाता है. यह शब्द पहली बार सन 1905 में इस्तेमाल किया गया था. जिसमे तत्कालीन नेताओं ने अपनी जनता से अपील की थी कि वह अपने देश में बनीं वस्तुओं का इस्तेमाल करें. आजादी के जंग के इस आन्दोलन के द्वारा भारतीयों से विदेशी माल का बहिष्कार और स्वदेशी माल का अंगीकार कर राष्ट्रीय शिक्षा एवं सत्याग्रह के महत्व पर बल दिया था. महात्मा गांधीजी हमेशा कहते थे कि पूर्ण रूप से स्वदेशी वस्तुओं को अपनाओ तथा अपने देश के प्राकृतिक संसाधनों व कच्चे माल से तैयार होनेवाली वस्तुओं का प्रयोग करो. लेकिन स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद हम अपनी नित्य दिनचर्या में लगभग 80 प्रतिशत विदेशी वस्तुओं का प्रयोग करते रहे.

आत्मनिर्भर भारत की दिशा में हिंदी का योगदान : कोरोना महामारी से उपजे संकट में देश में खाद्यान्नों व अन्य जरूरी सामानों की कमी के बाद हमने आत्मनिर्भरता का सही मतलब समझा. जब कोरोना वायरस पूरी दुनिया में बहुत तेजी से अपने पैर फैला रहा था, तब कोई भी देश चाह कर भी दूसरे देश की मदद नही कर पा रहा था. पर कहते हैं ना कि आवश्यकता अविष्कार की जननी है, हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए हमारे कदम आत्मनिर्भर भारत की तरफ़ बढ़ चले. पी.पी.ई. किट, टेस्टिंग किट और अन्य सामग्री के लिए आत्मनिर्भर बनना अनिवार्य हो गया.

12 मई 2020 को राष्ट्र के नाम एक सम्बोधन मे भारत के प्रधानमंत्री श्रीमान मोदीजी ने भारत को पूर्ण रूप से आत्मनिर्भर बनाने की बात जनता के सामने रखी और 'लोकल फॉर वोकल' स्लोगन के साथ देश की जनता से आत्मनिर्भर भारत बनाने का आहवान किया. आइए, चर्चा को आगे बढ़ाते हुए एक नजर डालते हैं आत्मनिर्भरता की परिभाषा पर -

19 जुलाई

1969: भारत सरकार ने देश के चौदह बड़े बैंकों का राष्ट्रीयकरण किया.

20 जुलाई

1969 : नील आर्मस्ट्रांग के रूप में मानव ने चंद्रमा की सतह पर पहला कदम रखा.

1997 : तीस्ता नदी जल बंटवारे पर भारत-बांग्लादेश में समझौत हुआ.

आत्मनिर्भर भारत - परिभाषा - आत्मनिर्भर का अर्थ है अपने आप पर निर्भर होना. आत्मनिर्भर भारत का अर्थ है भारत को किसी भी क्षेत्र जैसे खाद्य पदार्थ, टेक्नालॉजी, इलेक्ट्रॉनिक उपकरण या किसी भी अन्य तरह के उपकरणों, मशीनों, दवाइयों, रक्षा से जुड़े सैन्य सामानों आदि के लिए दुनिया के किसी भी देश पर निर्भर न रहना पड़े. यानि ट्रेन से लेकर प्लेन तक, सुई से लेकर भवन निर्माण तक, मोबाइल से लेकर सुपर कम्प्यूटर तक हर जरूरत की वस्तु का निर्माण पूर्ण गुणवत्ता व विश्वसनीयता के साथ भारत में ही किया जाय, ताकि दूसरे देशों पर हमारी निर्भरता बिलकुल खत्म हो जाये.

आत्मनिर्भर भारत अभियान को जन जन तक पहुँचाने में हिन्दी ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है. आइए आत्मनिर्भर भारत में हिन्दी की भूमिका के बारे में विस्तार से-जानते हैं

भाषा - संप्रेषण का एक महत्वपूर्ण साधन - मनुष्य और भाषा का आपसी संबन्ध कुछ इस प्रकार जुड़ा हुआ है कि एक के बिना दूसरे की कल्पना नहीं की जा सकती. भाषा ही हमारे चिंतन, भाव-बोध तथा संप्रेषण का उत्तम साधन है. हम न केवल भाषा के सहारे सोचते हैं, अपितु समझते समझाते भी भाषा के सहारे हैं. लोकतन्त्र में सरकार और जनता के प्रशासनिक संपर्क को सशक्त बनाने में भाषा की महत्वपूर्ण भूमिका है. सरकारी नीतियों और योजनाओं को जनता तक पहुँचाने में भाषा सहायक होती है.

हिन्दी - जनभाषा के रूप में सर्वोपरि - किसी भी भाषा की समृद्धि की पहचान उसके विभिन्न संदर्भो एवं प्रयोजनों में प्रस्तुत होने की क्षमता से की जाती है. आज हिंदी का प्रयोग विभिन्न प्रयोजनों के लिए किया जा रहा है. इससे उसकी अंतर्निहित शक्ति तथा क्षमता का परिचय मिलता है. आज हिन्दी किसी प्रदेश विशेष की भाषा न रहकर पूरे देश की राजभाषा बन गयी है. हिन्दी का राष्ट्रीय स्तरपर एक गरिमामय स्थान है. सौजन्यता, अभिजात्य शिष्टता के साथ सघनता व सरलता के गुणों से संपन्न हिन्दी व्यापक जनसमुदाय से बेहद आत्मीय संपर्क बनाने में सक्षम है. यदि हम चाहते हैं कि हमारा लोकतंत्र प्रगतिशील हो तथा विकास योजनाएँ जनता तक सुचारु रूप से पहुँचे तो संघ के कामकाज में हिन्दी का प्रयोग करना अनिवार्य है. हिन्दी का महत्व जनभाषा के रूप में सर्वोपरि है, क्योंकि वह सिर्फ साक्षरों की ही नहीं निरक्षरों की भी संपर्क भाषा है.

भारत एक कृषि प्रधान देश है और भारत की 70 प्रतिशत आबादी कृषि कार्यों पर अपना जीवन यापन करती है. अगर ग्रामीण क्षेत्र की आधारभूत समस्याओं का वास्तविक समाधान खोजना है तो यह जरूरी होगा कि ग्रामीण क्षेत्र के अधिकाधिक लोगों को आत्मनिर्भर बनाया जाए. यहाँ हिन्दी का महत्व रेखांकित हो जाता है. हमें इस बात पर गहराई से सोचना होगा कि कौशल विकास के लक्ष्य समूह अर्थात ग्रामीण क्षेत्रो में क्या अंग्रेजी के माध्यम से संवाद स्थापित किया जा सकता है? क्या इस लक्ष्य-समूह को अंग्रेजी के माध्यम से आत्मनिर्भरता का पाठ पढाया जा सकता है? भारतीय समाज में भारत की लिम्बा फ्रांका हिन्दी के जरिए ही सार्थक संवाद कर सकते है.

उपसंहार- स्वतंत्रता के बाद से भारत ने आर्थिक विकास का लम्बा रास्ता तय किया है, लेकिन मौजूदा हालात यही दर्शाते हैं कि आर्थिक विकास गरीबी उन्मूलन की गारंटी नहीं है. विकास के लाभों को निचले स्तरों तक पहुँचाना बेहद जरूरी है. ऐसा किये बगैर भारत को विकसित देशों की श्रेणी में ला पाना कठिन होगा. भारत को आत्मनिर्भर बनाना है तो केवल शहरों तक सीमित नहीं रहा जा सकता. देश की गरीब एवं वंचित ग्रामीण आबादी को सरकारी योजनाओं के दायरे में लाना आवश्यक है. ग्रामीणों और ना-पढ़े लिखे लोगों को उन्हीं की भाषा में यह समझाना आवश्यक है कि सरकारी योजनाएँ उनकी सुविधा के लिए और उनके भविष्य को सुखद बनाने के लिए हैं भारतीय समाज की बहुभाषिकता के बीच संपर्क भाषा के रूप में हिन्दी का महत्व अपरिहार्य है. आत्मनिर्भर भारत में हिन्दी का योगदान वंदनीय है. जो देश आर्थिक रूप से समृद्ध होते हैं, उनकी भाषा के पंख भी बड़े तेज़ होते हैं. आइए, स्वामी विवेकानंद की सदुक्ति को चरितार्थ करें - उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत अर्थात् उठो, जागो और तब तक बढ़ते रहो जब तक लक्ष्य की प्राप्ति न हो जाए. हमें आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि हम अपने देश को आत्मनिर्भर बनाने की संकल्पना को मूर्त रूप देने में कामयाब होंगे.

21 जुलाई

1883: कोलकाता में भारत के पहले सार्वजनिक थियेटर की शुरुआत हुई.

1960: श्रीलंका (तब सीलोन) में सिरिमावो भंडारनायके विश्व की पहली महिला प्रधानमंत्री बनीं.

2007: प्रतिभा पाटिल भारत की पहली महिला राष्ट्रपति बनीं.

स्टेच्यु ऑफ युनिटी यात्रा वृत्तांत

- श्री राकेश कुमार सैनी,
वरिष्ठ प्रबंधक/संकाय सदस्य
सर एसपीबीटी महाविद्यालय, मुंबई.

पिछले दिनों हमने स्टेच्यु ऑफ युनिटी का भ्रमण करने का प्लान बनाया. स्टेच्यु ऑफ यनिटी घूमने का हमने दो साल पहले भी प्लान बनाया था लेकिन कोविड-19 महामारी के चलते टिकट बुक होने के बावजूद हम नहीं जा पाए. इसके पश्चात मेरा स्थानांतरण गुजरात से पंजाब हो गया इसलिए हम स्टेच्यु ऑफ युनिटी का प्लान नही कर पाएं.

अब जब मेरा स्थानांतरण एसपीबीटी कॉलेज मुंबई में हुआ है, तो हमने 7 अक्तूबर को ट्रेन का टिकट बुक किया. स्टेच्यु ऑफ युनिटी का टिकट एक वयस्क के लिए रू.380/- है तथा 3 से 15 साल के बच्चों के लिए रू.230/- है. यह टिकट हमने ऑनलाईन ही बुक कर ली थी. स्टेच्यु ऑफ युनिटी जो कि गुजरात राज्य के भरूच जिले में केवडीया जगह पर बनाई गई है, मुंबई से लगभग 500 कि.मी. दूरी पर है. हमने दादर से एकता नगर (जो कि स्टेच्यु ऑफ युनिटी से निकटतम स्टेशन है) की ट्रेन दादर-एकतानगर सुपरफास्ट एक्सप्रेस में अपनी टिकट बुक की.

शुक्रवार रात लगभग 11.50 पर ट्रेन शुरू हुई और लगभग 469 कि.मी. की दूरी ट्रेन ने सात घंटे में पूरी की. हम (मैं और मेरी पत्नी सरोज) रातभर यात्रा करके शनिवार सुबह एकता नगर रेलवे स्टेशन पहुंचे. स्टेशन देखकर हमें आनंद हुआ और हमें ''स्वच्छ भारत'' का ज्वलंत उदाहरण देखने को मिला. एक साफ-सुथरा, सभी सुविधाओं से युक्त रेलवे स्टेशन की छवि यात्रा की थकान मिटाने के लिए पर्याप्त थी. यहां रूकने के लिए गेस्ट हाऊस भी बने हुए हैं.

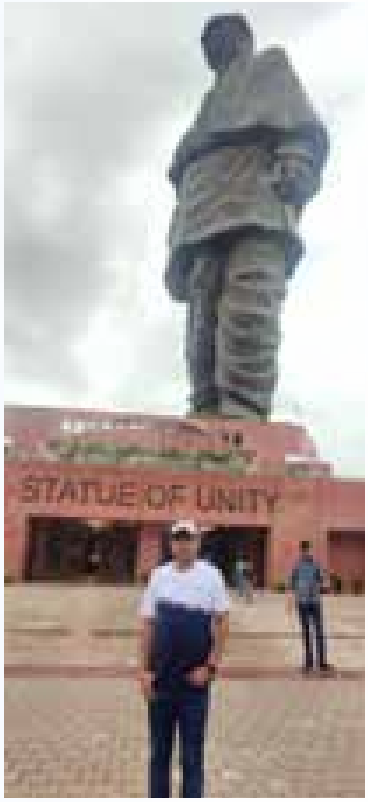

रेलवे स्टेशन के बाहर ही बसें पर्यटकों को स्टेशन से स्टेच्यु ऑफ युनिटी तक ले जाने के लिए लगी रहती है वो भी नि:शुल्क. ऐसी उत्तम व्यवस्था मैंने पहली बार देखी. स्टेशन से बस में बैठकर हम स्टेच्यु ऑफ युनिटी (केवडीया) पहूंचे. बस से ही हमें सरदार वल्लभ भाई पटेल की प्रतिमा दिखने लग गई थी. भारत के लोहपुरूष महानायक सरदार वल्लभभाई पटेल की विशालकाय, अप्रतिम प्रतिमा को ही स्टेच्यु ऑफ युनिटी का नाम दिया गया है.

स्टेच्यु ऑफ युनिटी विजिट करने का हमारा स्लॉट दो बजे से था तो गार्ड ने हमें वहां पर स्थित, अन्य आकर्षणों को देखने की सलाह दी और हम स्टेच्यु ऑफ युनिटी से ई-रिक्षा लेकर सरदार सरोवर बांध पहुंचे. ई-रिक्षा ड्राइवर एक महिला थी और यहां सभी ई-रिक्षा चालक महिलाएं ही थी, तो उत्सुकता से मैंने उनसे इसका कारण पूंछा तो पता चला कि वहां

22 जुलाई

1947: संविधान सभा ने तिरंगे को देश के राष्ट्रीय ध्वज के तौर पर अंगीकार किया

1999: अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन द्वारा समान कार्य के लिए समान पारिश्रमिक की कार्य योजना लागू

किसी का तिरस्कार नहीं करना चाहिए.

ई-रिक्षा चलाने का लाइसेंस केवल महिलाओं को ही मिलता है. महिला सशक्तिकरण की दिशा में उठाया गया सरकार का यह कदम सराहनीय है. दस मिनट में सुंदर पहाडी रास्तों से होते हुए हम सरदार सरोबर बांध पहुंचे.

सरदार सरोवर बांध भारत का दूसरा सबसे बडा बांध है, यह एक गुरूत्वीय बांध है. यह नर्मदा नदी पर बना 138 मीटर ऊंचा (नींव सहित 163 मीटर), इसकी लंबाई 1210 मीटर है. सरदार सरोवर बांध संयुक्त राज्य अमेरिका के ग्रांड कोली बांध के बाद विश्व का दूसरा सबसे बडा कांक्रीट (गुरूत्वीय बांध) है.

सरदार सरोवर बांध परियोजना भारत के प्रथम उप-प्रधानमंत्री व गृह मंत्री सरदार वल्लभभाई पटेल द्वारा प्रस्तावित की गई थी. इस बांध के निर्माण की नींव भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू द्वारा 1961 में रखी गई. यह बांध चार राज्यों गुजरात, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र और राजस्थान में पानी व बिजली की आपूर्ति करता है. सुबह के समय में बांध से गिरते पानी की कलकल करती हुई आवाज और चारों ओर फैला प्राकृतिक सौंदर्य मन को मंत्रमुग्ध कर रहा था. सुबह की ठंडी हवा, हसीन वादिया और शांत मन, एक सुखद अहसास था. कुछ समय वहां व्यतीत करने के बाद हम जंगल सफारी के लिए निकल पडे जो कि वहां से लगभग एक कि.मी. दूरी पर स्टेच्यु ऑफ युनिटी की ओर थी. सभी जगहों की बुकिंग हमने पहले ही ऑनलाइन कर रखी थी. जंगल सफारी का शुल्क एक वयस्क के लिए रू.200/- है. यह जंगल सफारी एक साहसिक सवारी है जो अज्ञात रास्तों और अनछुए प्राकृतिक क्षितिज की खोज करने का अवसर देती है. इस पार्क की खासियत यह है कि आगंतुक जानवरों को खुले वातावरण में देख सकते हैं और पूरा जंगल हमें जंगल सफारी जैसी यात्रा का आनंद देता है. विंध्य पहाडियों का अविरल इलाका इसे यहां के प्राणियों के लिए आदर्श स्थान बनाता है. सफारी गाडीयां आगंतुकों को सफर करवाती है. यहां का एक और मुख्य आकर्षण एवियरी से गुजरना है जो बेहतरीन देसी पक्षियों का सबसे अच्छा ठिकाना है. पर्यटक यहां विशिष्ट पक्षियों की बस्तियों के बीच चल सकते हैं जिन्हें प्रत्येक प्रजाती के प्राकृतिक आवास का अनुकरण करते हुए बनाया गया है.

पशुओं को सक्रिय और स्वस्थ बनाए रखने के लिए प्रत्येक बाडे को विशेष रूप से समृध्द किया गया है. यहां तक की बाडों के अंदर के लैंडस्केप को भी जानवरों और पक्षियों के मूल निवास के समान बनाया गया है. देश-विदेश के विभिन्न पशु-पक्षियों को उनके प्राकृतिक परिवेश में देखने का अनूठा अनुभव हमें मिला. दो घंटे जंगल सफारी करने के बाद हम पास में ही स्थित वैली ऑफ फ्लॉवर चले गए. फूलों की घाटी (वैली ऑफ फ्लॉवर) जिसे भारत वन के रूप में जाना जाता है. यह 24 एकड़ भूमि में फैली हुई है. पार्क के अलावा यहां कई फोटो बूथ और सेल्फी पॉइंट भी बनाए गए है जहां पर हमने फोटो खिंचवाएं ताकि हम यात्रा की सुनहरी यादों को वापस अपने साथ ले जा सकें. यह स्थान धरती पर फूलों

के इन्द्रधनुष सरीका दिखाई देता है.

इस उद्यान में 300 से अधिक प्रकार के फूल हमें देखने को मिले. सजावटी फूलों, पेडों, झाडियों, जडी-बुटियों, बेलों और लताओं के अनेक प्रकार और रंगों के पर्ण समूहों के साथ इस प्रकार सजाया गया है कि ये इस पूर्ण क्षेत्र को हरे रंग से आवृत कर देते हैं. इन प्रजातियों का संयोजन इस छोटे से क्षेत्र को मंत्रमुग्ध करने वाला चमकदार और मनमोहक बना रहा था. यहां पर प्राकृतिक सौदर्य

23 जुलाई

1903: मोटर कंपनी फोर्ड ने अपनी पहली कार बेची

1906: स्वतंत्रता सेनानी चंद्रशेखर आजाद का जन्म हुआ

को देखते-देखते हमारा स्टेच्यु ऑफ युनिटी को देखने के स्लॉट का समय हो गया था इसलिए हम उसी प्रकार ई-रिक्षा, महिला चालक द्वारा वहां से स्टेच्यु ऑफ युनिटी के लिए निकल पडे. कुछ ही समय में हम स्टेच्यु ऑफ युनिटी के द्वार पर पहूंचें. सामान हमने पहले ही वहां बाहर बने लॉकर कक्ष में रख दिया था जो कि नि:शुल्क है.

अब समय आ गया था माननीय सरदार पटेल के विशालकाय प्रतिमा से रूबरू होने का जिसे हम सुबह से विभिन्न स्थानों से दूर से देख रहे थे. स्टेच्यु ऑफ युनिटी सरदार पटेल के समग्र जीवन को सम्मानित करता है. यह स्मारक उनके कुशल राजनीतिज्ञ एवं एकता के आदर्श का भी प्रतीक है. स्टेच्यु ऑफ युनिटी दुनिया की सबसे बडी प्रतिमा है. इस प्रतिमा की ऊंचाई 182 मीटर है और यह इतनी बडी है कि इसे सात कि.मी. की दूरी से देखा जा सकता है. स्टेच्यु ऑफ युनिटी की ऊंचाई अमेरिका के 'स्टैच्यु ऑफ लिबर्टी' (93 मीटर) से दुगनी है. इसे बनाने में लगभग 44 माह का समय लगा है. विश्वप्रसिध्द एवं पद्मभूषण मूर्तिकार श्री राम वी.सुतार को स्टेच्यु ऑफ युनिटी के मूर्तिकार के रूप में नामित किया गया था. इस राष्ट्रीय स्मारक के निर्माण में लगभग 70,000 मेट्रीक टन

सिमेंट, सुदृढीकरण हेतु 18,500 मेट्रीक टन सलाखें और 6000 मेट्रिक टन स्ट्रक्चरल स्टील का उपयोग किया गया था. 22,500 वर्ग मीटर के सतह क्षेत्र को लगभग 1700 मेट्रिक टन कास्य से आवरित किया गया है.

प्रतिमा को नजदीक से देखना एक अविस्मरणीय अनुभव था. सभी पर्यटक वहां पर सरदार पटेल की प्रतिमा के साथ फोटो खिंचवाने व कुछ लोग अपने सोशल मिडिया प्रोफाइल के लिए रील बनाने में व्यस्त थे. सरदार पटेल की अटल व दृढ इच्छाशक्ति को दर्शाने वाली अविस्मरणीय और अनोखी प्रतिमा एक गर्व का अहसास करवा रही थी. कुछ देर तक इसे देखने के बाद हमने विजिटिंग गैलेरी का भ्रमण किया. इस प्रतिमा में दो लिफ्ट लगी हुई है जिनके द्वारा हम सरदार पटेल की छाती पर बने ऑब्जर्वेशन डेस्क पहुंचे जो कि 135 मीटर की ऊंचाई पर है. वहां से हमने सरदार सरोवर बांध का नजारा देखा और खूबसूरत वादियों के विहंगम दृश्य का लुफ्त उठाया. वहां से नीचे आकर हमने प्रदर्शनियां देखी तथा वहीं बने प्रतिज्ञा उपकरणों से डिजिटली प्रतिज्ञा भी ली तथा वहां पर महानायक सरदार पटेल की जीवन पर हिन्दी, अंग्रेजी व मराठी में प्रसारित हो रहे चलचित्र का लुफ्त उठाया जिससे हमें सरदार पटेल के जीवन से जुड़े विभिन्न पहलुओं के बारे में जानकारी मिली. हम प्रतिमा और वहां स्थित म्युजियम में इतने व्यस्त हो गए कि पता ही नहीं चला कब 6 बजें.

अब बारी थी रात में सात बजे से होने वाले लेजर शो की. एक मंत्रमुग्ध कर देने वाले लगभग 20 मिनट के लेजर लाइट एंड साऊंड शो आजादी के बाद भारत एकीकरण की गाथा को सुनाता है. इस शो ने भारत के लिए सरदार पटेल के दृष्टिकोण को दर्शाते हुए गर्व और राष्ट्रीय एकता की भावना को दिल से प्रज्वलित किया. इस शो के बाद रात्रीकालीन ट्रेन से फिर हम वापस मुंबई की ओर चल दिए. बहुत सारी अविस्मरणीय एवं सुनहरी यादों से भरा "स्टेच्यु ऑफ युनिटी" का भ्रमण हमें लंबे समय तक याद रहेगा.

24 जुलाई

1932: रामकृष्ण मिशन सेवा प्रतिष्ठान की स्थापना.

2000: एस विजयलक्ष्मी शतरंज की पहली महिला ग्रैंडमास्टर बनी.

कर्म ही भाग्य का द्वार होते हैं.

स्वच्छता और विकास

- उषा कुशवाहा
सहायक प्रबंधक
क्षेत्रीय कार्यालय जबलपुर

गांधी जी के लिए स्वच्छता सिर्फ जैविक आवश्यकता नहीं बल्कि जीवनशैली और सत्य की अनुभूति करने का एक अहम भाग है. राष्ट्रपिता के रूप में उन्होने राष्ट्र निर्माण में स्वच्छता की अनिवार्यता को महसूस किया और स्वच्छता की तुलना ईश्वर भक्ति से की. महात्मा गांधी के लिए स्वच्छता स्वराज्य यज्ञ के बराबर थी इसलिए उन्होने स्वच्छता जैसे रचनात्मक कार्यक्रम और स्वतंत्रता संग्राम के बीच अटूट संबंध बनाया.

भारत में आर्थिक विकास में लगातार बढ़ोतरी के बाबजूद सफाई और स्वास्थ्य की हालत अच्छी नहीं होने के कारण बड़े पैमाने पर आर्थिक नुकसान उठाना पड़ता है. स्वच्छता की बेहतर स्थिति न होने के कारण खराब सेहत, शिक्षा में नुकसान और सकल उत्पादकता पर प्रतिकूल असर देखने को मिलता है. विश्व बैंक ने भी इस संबंध में अपनी रिपोर्ट जारी की है. इन सभी को देखते हुये स्वच्छ भारत अभियान शुरू किया गया जिसका लक्ष्य महात्मा गांधी की 150वीं जयंती पर राष्ट्रियता को श्रद्धांजली के रूप में 2019 तक भारत को स्वच्छ और खुले में शौच से मुक्त बनाया है.

1942 में देश के स्वतंत्रता सेनानियों द्वारा 'अंग्रेजों भारत छोड़ो' की प्रतिज्ञा लेने के बाद 1947 में भारत को आजादी मिली. इसी तर्ज पर भारत छोड़ो आंदोलन की 75वीं वर्षगांठ पर प्रधानमंत्री ने 2022 तक 'नए भारत' के निर्माण हेतु सभी से एक साथ प्रतिज्ञा लेने की अपील की. इसे 'संकल्प से सिद्धी' नाम दिया गया है. इसमें स्वच्छ भारत, गरीबी मुक्त भारत, भ्रष्टाचार मुक्त भारत, आतंकवाद मुक्त भारत, सांप्रदायिकता मुक्त भारत, जातीयता मुक्त भारत के लिए संकल्प लेने की बात शामिल है और इसकी अवधि 2017-2022 तय की गई है, न्यू इंडिया मूवमेंट 2017-2022 का उद्देश्य सुशासन और तकनीकी के इस्तेमाल से भारत को गरीबी, भ्रष्टाचार, आतंकवाद, संप्रदायिकता, जातीयता और गंदगी से मुक्त करते हुये पूरे देश को एकजुट करना है.

इसके लिए देश में स्वच्छता का आधारभूत ढाँचा खड़ा किया गया है जिसके तहत शौचालय बनाए गए हैं और कूडे-करकट के प्रबंधन की व्यवस्था की गई है. इसके साथ ही लोगो की रोज़मर्रा की जिंदगी में साफ-सफाई की आदतों को अपनाने के लिए लगातार जागरूकता अभियान चलाये गए हैं. इसी के तहत 2015 में 'नमामि गंगे' कार्यक्रम शुरू किया गया ताकि गंगा से प्रदूषण को हटा कर उसे निर्मल बनाया जा सके. परिवहन को किफ़ायती एवं पर्यावरण की दृष्टि से अनुकूल बनाने के लिए जलमार्गों के उपयोग को बढ़ावा दिया जा रहा है. साथ ही पर्यावरण अनुकूल 'हरित बन्दरगाहों' के निर्माण पर ध्यान केन्द्रित किया गया है. गाँव के विकास में भी स्वच्छता एक प्रमुख घटक है.

स्वच्छ भारत से मानव जीवन अधिक स्वच्छ, स्वस्थ और उन्नत बनेगा. कोई भी समुदाय और समाज तब तक सफल नहीं हो सकता, जब तक कि वह स्वच्छ न हो. शिक्षा, स्वास्थ्य, गरीबी उन्मूलन, मानव विकास से संबंधित लक्ष्य स्वच्छता के अभाव में प्राप्त नहीं किए जा सकते. इसी प्रकार राष्ट्र के आर्थिक विकास में स्वच्छता का विशेष योगदान है. इसे ध्यान में रखते हुये स्वच्छता को नए भारत के निर्माण के लिए आवश्यक माना गया. भारत में स्वच्छता और आरोग्य के महात्मा गांधी के सपने को साकार करना सरकार के लिए बड़ी प्रतिबध्दता है. इसे देखते हुये हमारे प्रधानमंत्री ने स्वच्छता को 'नए भारत कि परिकल्पना का अभिन्न अंग बनाया और इसे राष्ट्रीय प्राथमिकता दी. भारत के नागरिक के रूप में यह हमारा सामाजिक दायित्व है कि हम स्वच्छ भारत कि गांधी जी की परिकल्पना को वर्ष 2024 में उनकी 155वीं जयंती तक साकार करने में सहयोग दें तभी नए भारत का सपना सच हो सकेगा.

25 जुलाई

1813: भारत में पहली बार नौका दौड़ प्रतियोगिता का कलकत्ता में आयोजन.

1978: दुनिया की पहली आईवीएफ शिशु लुई ब्राउन का इंग्लैंड के ओल्डहैम शहर में जन्म.

स्वच्छता एवं स्वास्थ्य

- एस.एस.मूर्ति
क्षेत्रीय प्रमुख
सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया
क्षेत्रीय कार्यालय, विजयवाडा

साफ-सफाई हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण पहलू है. यह हमारे जीवन की प्राथमिकता भी है. स्वच्छता जरूरी है, क्योंकि साफ-सफाई से हम जीवन में आने वाली कई परेशानियों से मुक्ति पा सकते हैं. स्वच्छता का अर्थ है सफाई से रहने की आदत. सफाई से रहने से जहां शरीर स्वस्थ रहता है, वहीं स्वच्छता तन और मन दोनों की खुशी के लिए आवश्यक है. स्वच्छता, सभी लोगों को अपनी दिनचर्या में अवश्य ही शामिल करना चाहिए.

महात्मा गांधी ने कहा था- 'स्वच्छता ही सेवा है. हमारे देश के लिए, हमारे जीवन में स्वच्छता की बहुत जरूरत है. गंदगी हमारे आसपास के वातावरण और जीवन को प्रभावित करती है. हमें व्यक्तिगत व आसपास भी सफाई अवश्य रखनी चाहिए और दूसरों को भी इसके लिए प्रेरित करना चाहिए. अभी कोरोना काल में रोगियों की बढ़ती जनसंख्या एवं अस्पतालों में साफ-सफाई को ध्यान देने की आवश्यकता से यह बात और भी स्पष्ट हो गई है कि जीवन में स्वच्छता की कितनी जरूरत है.

जीवन में स्वच्छता से तात्पर्य स्वस्थ होने की अवस्था से भी है. स्वच्छता एक अच्छी आदत है जो हमारे जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाती है. यह हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग है. हमारे लिए शरीर की भी स्वच्छता बहुत जरूरी है, जैसे रोज नहाना, स्वच्छ कपड़े पहनना, दांतों की सफाई करना, नाखून काटना, आदि. इसके लिए हमें प्रतिदिन सुबह जैसे ही हम सोकर उठते हैं, अपने दांतों को साफ करना चाहिए. चेहरा, हाथ पैर धोना चाहिए. साथ ही स्नानादि और दैनिक क्रियाओं को समय पर पूर्ण करना चाहिए. स्वस्थ रहने और शांति से जीवन जीने का अच्छा गुण है. इसके लिए घर के बड़े-बुजुर्गों को और माता-पिता और को अपने बच्चों में इस आदत को बढ़ावा देना चाहिए, ताकि वे स्वच्छता के महत्व को समझें.

स्वच्छ भारत अभियान - प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा 2 अक्टूबर 2014 को महात्मा गांधी की 145वीं जयंती पर चलाया गया स्वच्छ भारत अभियान एक महत्वपूर्ण अभियान है. यह अभियान नई दिल्ली के राजघाट से शुरू किया गया था. यह एक राष्ट्रीय स्तर का अभियान है और भारत सरकार द्वारा चलाया जा रहा है. स्वच्छ भारत मिशन के अंतर्गत कई योजनाएं शामिल की गई है, जिसमें ग्रामीणों के घरों में शौचालाय निर्माण प्रमुख हैं, जिससे लोग आस पास की स्वच्छता का महत्व समझेंगे और वातावरण को स्वच्छ रखेंगे.

स्वच्छता को लेकर महात्मा गांधी के विचार

1. महात्मा गांधी ने कहा था कि राजनीतिक स्वतंत्रता से ज्यादा जरूरी स्वच्छता है.
2. यदि कोई व्यक्ति स्वच्छ नहीं है तो वह स्वस्थ नहीं रह सकता है.
3. बेहतर साफ-सफाई से ही भारत के गांवों को आदर्श बनाया जा सकता है.
4. शौचालय को अपने ड्रॉइंग रूम की तरह साफ रखना जरूरी है.
5. नदियों को साफ रखकर हम अपनी सभ्यता को जिंदा रख सकते हैं.

26 जुलाई

1965: मालदीव ब्रिटेन के कब्जे से स्वतंत्र हुआ.

2008 : यूरोपीय वैज्ञानिकों ने सौरमंडल के बाहर एक और नये ग्रह की खोज की.

27 जुलाई

1987 : खोजकर्ताओं ने टाइटैनिक का मलबा खोजा.

6. अपने अंदर की स्वच्छता पहली चीज है जिसे पढ़ाया जाना चाहिए. बाकी बातें इसके बाद होनी चाहिए.

07. स्वच्छता को अपने आचरण में इस तरह अपनालो कि वह आपकी आदत बन जाए.

प्लास्टिक बंद और वृक्षारोपण - प्लास्टिक मानव जीवन में लगातार जहर घोल रहा है. मानव सुबह से लेकर शाम तक प्लास्टिक का उपयोग करता है. जिसे मानव वरदान की तरह समझता है, दरअसल वह पर्यावरण, पशु और हम सभी के लिए बहुत घातक है. प्रकृति में संतुलन बनाए रखने के लिए तथा आसपास के वातावरण को स्वच्छ बनाए रखने के लिए पेड़-पौधे लगाना बहुत ही आवश्यक है. अत: प्लास्टिक बंद का आह्वान कर कई कड़े कानून बनाए गए. यह भी स्वच्छता के प्रति एक अच्छा सराहनीय कदम है. वातावरण को स्वच्छ रखने के लिए अधिक से अधिक पौधे लगाने चाहिए.

गंदगी से कई तरह की बीमारियां पैदा होती है जो मानव के विकास में बाधा डालती है. अत: स्वच्छता हमारे जीवन के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है. स्वच्छता को अपना कर ही हम बीमारियों को खत्म कर सकते हैं. हमें अपने घर के अलावा आसपास की स्वच्छता का ध्यान रखना चाहिए.

'स्वच्छता को बनाए रखने के लिए हमें इधर-उधर कचरा नहीं भेजना चाहिए. कचरा हमेशा कूड़ेदान में ही फेंकना चाहिए. कहा भी गया है "स्वच्छता में ईश्वर का वास होता है". अत: स्वच्छता को अपनाएं और देश को आगे बढ़ाएं. बेहतर साफ-सफाई से ही भारत को आदर्श बनाया जा सकता है. अत: स्वच्छता के लिए दूसरों को भी प्रेरित करें.

राजभाषा नियम 1976 का नियम 5

राजभाषा नियम 1976 के नियम 5 के अनुसार हिन्दी में प्राप्त पत्र का उत्तर हिन्दी में दिया जाना अनिवार्य है.

28 जुलाई

1821: पेरू ने स्पेन से स्वतंत्रता की घोषणा की.

1925: हेपेटाइटिस का टीका खोजने वाले बारुक ब्लमर्ग का जन्म 28 जुलाई को ही विश्व हेपेटाइटिस डे मनाया जाता है.

29 जुलाई

1980 : मॉस्को ओलंपिक में भारत ने हॉकी में स्वर्ण पदक जीता.

1983 : पहले चालक रहित विमान का परीक्षण किया गया.

राजभाषा एवं वैश्विक हिंदी

- मुव्वला श्रीधर
(प्रबन्धक, मानव संसाधन विभाग)
वरंगल क्षेत्रीय कार्यालय

ऐसा कहा जाता है कि भाषा किसी देश की वह आईना होती है जिसमें भविष्य भी देखा जा सकता है. भाषा विचारों के आदान प्रदान का माध्यम होती है. कोई भी भाषा जितनी सुबोध, सरल और सहज होती है उसका भाव संप्रेषण उतना ही सफल और सशक्त होता है. हिंदी पूरे विश्व में बोली जाने वाली संपूर्ण भाषाओं में सबसे सरल, सुबोध एवं सहज है और यही कारण है कि आज भारतवर्ष में हिंदी को वह स्थान प्राप्त है जो प्राचीन काल में संस्कृत को दिया जाता था. वर्तमान समय में हिंदी को भारत के राजभाषा का दर्जा प्राप्त है. हिंदी को राजभाषा का दर्जा 14 सितंबर 1949 को दिया गया क्योंकि हिंदी एक ऐसी भाषा है जो भारत में सबसे ज्यादा बोली एंव समझी जाती है. हिंदी भारतवर्ष का स्वाभिमान है और हिंदी के विकास तथा प्रचार-प्रसार में वास्तविक रुप से भारत के भविष्य की झाँकी देखी जा सकती है. आज हिंदी का स्वरुप वैश्विक हो चला है, वह अंतरार्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पकड़ मजबूत कर रही है साथ ही वह अपने स्वरुप को निरंतर निखार भी रही है. आज हिंदी का प्रयोग भारत के अलावा कई अन्य देशों में हो रहा है. दुनिया में अनेक देशों के सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिदृश्य में भारतीय मूल के नागरिकों और हिंदी भाषा की उपस्थिति अब प्रभावी मानी जा रही है और यही कारण है कि आज राजभाषा कार्यान्वयन समिति का गठन भारत के अलावा लंदन, सिंगापुर, फिजी, दुबई और पोर्ट लुई जैसे शहरों में भी की जा रही है.

वैश्वीकरण आधुनिक विश्व का वह स्तम्भ है जिसपर खड़े होकर दुनिया के हर समाज को देखा, समझा और महसूस किया जा सकता है. वैश्वीकरण आधुनिकता का वह मापदण्ड है जो किसी भी व्यक्ति, समाज, राष्ट्र को उसकी भौगोलिक सीमाओं से परे हटाकर एक समान धरातल उपलब्ध कराता है, जहाँ वह पहचान के साथ अपने स्थान को पुष्ट करता है. वैश्वीकरण के प्रवाह में आज कोई भी भाषा और साहित्य अछूता नहीं है, वह भी आपनी सरहदों को पारकर विश्व भर के प्रबुद्ध पाठकों तक अपनी पहचान बना चुका है.

14 सितंबर 1949 को संविधान सभा ने हिन्दी को भारतीय संघ की राजभाषा घोषित किया. तब से लेकर अब तक हिन्दी के स्वरुप में काफी विकास एवं परिवर्तन हुआ है. आज हिन्दी भी वैश्वीकरण से अछूत नहीं है. आज हम कह सकते हैं कि हिन्दी भाषा अपने चौमुखी विकास की ओर तेजी से बढ़ रही है. बीसवी सदी के अंतिम दशको एवं इक्कीसवी सदी के पहले दशक में हिन्दी भाषा में जो परिवर्तन हुए वो साधारण नहीं है. आज हिन्दी वैश्वीक भाषा बन गयी है. इसके भाषा और व्याकरण

30 जुलाई

1886: देश की पहली महिला विधायक और समाज सुधारक एस. मुथुलक्ष्मी रेड्डी का जन्म.

1909: राइट बंधुओं ने सेना के लिए पहला विमान बनाया.

31 जुलाई

1880: प्रसिद्ध हिन्दी कहानीकार और उपन्यासकार प्रेमचंद का जन्म.

1948: भारत में कलकत्ता में पहली राज्य परिवहन सेवा की स्थापना.

संतोष से सर्वोत्तम सुख प्राप्त होता है - पतंजलि

में नए नए प्रयोग किए जा रहे हैं. आज हिन्दी भाषा का अध्ययन विश्व के अनेक देशों में प्राथमिक स्तर पर, माध्यमिक स्तर पर, तो कहीं विश्वविद्यालय स्तर पर हो रहा है. विश्वमें हिन्दी शिक्षण को बढ़ावा देने के लिए निजी संस्थाएँ, धार्मिक संस्थाएँ और सामाजिक संस्थाएँ तो आगे आ ही रही हैं, सरकारी स्तर पर विद्यालय एवं विश्व विद्यालय द्वारा भी हिन्दी शिक्षण का बखूबी संचालन किया जा रहा है. वर्तमान समय में भारत सरकार भी अपने पूरे प्रयास कर रही है कि हिन्दी को पूर्ण रुप से विश्व स्तर पर स्थापित करें लेकिन यह बात तो हम भी जानते हैं कि दूसरे को सुधारने से पहले खुद को सुधारना चाहिए और वही कार्य वर्तमान सरकार कर रही है आज भारत सरकार द्वारा ई-गवर्नेंस और डिजिटल-इंडिया आदि में हिन्दी व भारतीय भाषाओं का प्रयोग किया जा रहा है, चिकित्सा की पुस्तकों का हिन्दी संस्करण उपलब्ध कराया जा रहा है. विश्व में हिंदी के प्रचार प्रसार के लिए प्रत्येक वर्ष वैश्विक हिन्दी सम्मेलन भारत सरकार द्वारा आयोजित किया जा रहा है इस सम्मेलन का प्रयास है कि भारत में शिक्षा व रोजगार भारतीय भाषाओं के माध्यम से उपलब्ध हो तथा हिन्दी एवं भारतीय भाषाओं के लिए भाषा-टेक्नोलॉजी का भी विकास एवं प्रसार हों. विद्यालयों में विद्यार्थियों को कम्प्युटर-मोबाइल व इस प्रकार के नवीनतम उपकरणों पर हिन्दी एवं भारतीय भाषाओं में कार्य की शिक्षा दी जाए ताकि इंटरनेट एवं सोशल मीडिया पर हिन्दी एवं अन्य भाषाओं को महत्वपूर्ण स्थान मिले तथा हिन्दी भाषाओं के साहित्य का विश्व स्तर पर प्रसार हो. हिन्दी भाषा में ज्ञान-विज्ञान, व्यापार- व्यवसाय, तथा जनसूचना व जनसंचार का प्रसार हो ताकि विदेशी भाषा की बाधा से मुक्त हो कर देश के लोग अपनी भाषा के माध्यम से विभिन्न क्षेत्रों में विकास की ऊंचाइयों को छू सकें एवं एक दिन हिन्दी जो वर्तमान में भारत की राजभाषा है उसे राष्ट्रभाषा का दर्जा दिलाया जा सके.

आज हिंदी का विस्तार नि: संदेह हुआ है. भारत के साथ-साथ हिंदी विश्व भाषा बनने को तैयार है. आज हिंदी में वह सामर्थ्य है की वह पूरे देश को एक सूत्र में पिरोकर रख सकती है.

राजभाषा नियम 1963 की धारा 3.3

राजभाषा नियम 1963 की धारा 3.3 के अनुसार सामान्य आदेशों, प्रेस विज्ञप्तियों, इत्यादि को हिन्दी - अंग्रेजी में एक साथ जारी किया जाना अनिवार्य है.

01 अगस्त

1916: भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की पूर्व अध्यक्ष एनी बेसेंजंट ने होम रूल लीग की शुरुआत की.

1920: महात्मा गांधी ने असहयोग आंदोलन की शुरुआत की.

02 अगस्त

1858: ब्रिटिश सरकार ने गवर्नमेंट ऑफ इंडिया ऐक्ट पारित किया, जिसके बाद भारत का शासन ईस्ट इंडिया कंपनी से ब्रिटिश राजशाही के हाथ में चला गया भारत में ब्रिटिश सरकार के शीर्ष प्रतिनिधि के रूप में वाइसराय का पद बनाया गया.

1870: लंदन में विश्व का प्रथम भूमिगत ट्यूब रेलवे टावर सबबे शुरू हुआ.

स्वच्छ भारत, श्रेष्ठ भारत

- शिवम कुमार पाण्डेय
सहायक प्रबंधक(राजभाषा)
क्षेत्रीय कार्यालय, विशाखापट्टनम

चर्चा के आधार पर स्वच्छता के अलग-अलग अर्थ हैं. धर्म के संबंध में, साफ - सफाई नैतिक रूप से 'शुद्ध' होने की स्थिति है. जब विषय-वस्तु पर्यावरण पर होती है तो वह गंदगी से मुक्त होने की स्थिति होती है. दैनिक जीवन में वाद- संवाद होने के कारण पर्यावरण की स्वच्छता से अधिकांश लोग परिचित होते हैं. पर्यावरण में विभिन्न प्रकार की स्वच्छता है. ज्यादातर, जब समाज में स्वास्थ्य शिक्षा एवं प्रदूषण के रोकथाम की मुहिम चलती है तभी पर्यावरणीय स्वच्छता की बात होती है. धार्मिक स्वच्छता का रूप विभिन्न धर्मों के विश्वासों के साथ बदलता रहता है. स्वच्छता का महत्व आध्यात्मिक और भौतिक दोनों पहलुओं में महसूस किया जाता है.

स्वच्छता के प्रकार:

स्वच्छता के दो प्रमुख प्रकार हैं - शारीरिक स्वच्छता और आध्यात्मिक स्वच्छता. भौतिक स्वच्छता के कई उप-प्रकार होते हैं जो साफ किए जा रहे वस्तु के अनुसार होते हैं. शारीरिक स्वच्छता में शरीर, कपड़े, भोजन, घर और बाहर के वातावरण से गंदगी और अशुद्धियों का उन्मूलन शामिल है. शरीर की सफाई साबुन और पानी के साथ पूर्ण शरीर स्नान, निरंतर हाथ धोने और गंदगी से दूर रखने के माध्यम से की जाती है. कपड़े साफ करने की एक प्रक्रिया है जिसमें हाथ अथवा आधुनिक मशीन का उपयोग किया जाता है. पर्यावरण की स्वच्छता पर्यावरण में गंदगी का संग्रह कर उसको उचित प्रक्रिया द्वारा डिस्पोज करने के साथ-साथ पर्यावरण के तीनों पहलुओं अर्थात वायु, जल और भूमि की शुद्धता का अवलोकन किया जाता है. घरों और घरेलू वस्तुओं को भी साफ रखा जाना चाहिए, विशेष रूप से लिविंग स्पेस, किचन, बेडरूम और बाथरूम, क्योंकि हम अक्सर घर के पर्यावरण से परस्पर जुड़े होते हैं.

आध्यात्मिक स्वच्छता मूल रूप से नैतिक संदूषण को दूर करने और धर्म के आस्था एवं विश्वासों में शुद्ध होने पर केंद्रित है. क्रिस्चियन में स्वच्छता का अर्थ है, गुनाहों तथा कुकर्मों को क्षमा कर बाइबल की शिक्षाओं को आधार बनाकर जीवनयापन करना. क्रिस्चियन मनुष्यों में स्वच्छता पर ज़ोर देते हैं. इस्लाम में, स्वच्छता का अर्थ है व्यक्तियों के दिलों की स्वच्छता और समाज के सदस्यों के अच्छे व्यवहार. मुसलमानों का मानना है कि नकारात्मकता और ईर्ष्या जैसी बुरी आदतों से लोगों के दिलों को शुद्ध करना समाज को हर समय शांति बनाए रखने में सक्षम बनाता है. हिंदुओं का मानना है कि स्वच्छता एक दिव्य गुणवत्ता है जिसे व्यक्तियों द्वारा अभ्यास किया जाना चाहिए. भगवद् गीता में हिंदू समाज के गुणों और गुणों के संबंध में स्वच्छता का वर्णन किया गया है. हिंदू धर्म में भी अपने पापों को धुलने तथा अपने मन तथा शरीर को स्वच्छ व शुद्ध करने के लिए गंगा स्नान की हिदायत दी जाती है.

स्वच्छता का महत्व: स्वच्छता शारीरिक और आध्यात्मिक रूप से मानव जीवन का एक महत्वपूर्ण घटक है. अपने परमेश्वर के साथ जुड़ने और अपने धर्म के विश्वासों और अनुष्ठानों का पालन करने के लिए आध्यात्मिक स्वच्छता ज़रूरी है. दूसरी ओर, मानवता के कल्याण और अस्तित्व में शारीरिक स्वच्छता महत्वपूर्ण है.

03 अगस्त

1886 : हिंदी के विद्वान मैथिली शरण गुप्त का जन्म.

1985 : बाबा आमटे को जनसेवा के लिए रेमन मैगसेस पुरस्कार प्रदान किया गया.

04 अगस्त

1935: गवर्नमेंट ऑफ इंडिया ऐक्ट 1935 को ब्रिटिश राजशाही की मंजूरी मिली.

1967: विश्व के सबसे लंबे चिनाई बांध नागार्जुनसागर का निर्माण.

विद्वानों की संगति जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि है - रामतीर्थ

लोगों और समाज के स्वास्थ्य और कल्याण के लिए स्वच्छता आवश्यक है. स्वास्थ्य और स्वच्छता एक दूसरे से संबंधित हैं और एक दूसरे को प्रभावित करते हैं. अच्छे स्वास्थ्य के लिए स्वच्छता का अभ्यास करना चाहिए. स्वच्छता मूल रूप से अच्छे स्वास्थ्य को बनाए रखने और अच्छे स्वास्थ्य के माध्यम से बीमारियों को रोकने का अभ्यास है. शरीर, भोजन और पर्यावरण की स्वच्छता एक व्यक्ति के स्वास्थ्य में बड़ा योगदान करती है. स्वच्छता रोग को रोकती है क्योंकि गंदगी आमतौर पर संक्रामक रोगजनकों को आश्रय देती है जिसके संपर्क में आने से मनुष्य बीमार पड़ता है. डॉक्टरों द्वारा स्वच्छ आदतों की काफी वकालत की जाती है क्योंकि किसी भी बीमारी को रोकने के लिए उसके इलाज से बेहतर रोकथाम है जिसका सबसे बड़ा उदाहरण कोविड-19 महामारी है. स्वास्थ्यकर अभ्यास व्यक्तियों को विभिन्न जानलेवा बीमारियों से बचाते हैं जिसके फलस्वरूप उनके जीवन प्रत्याशा में बढ़ोत्तरी होती है .

संगठनात्मक परिप्रेक्ष्य में जिसका हम भी एक अभिन्न हिस्सा हैं, एक स्वच्छ कार्यस्थल एक स्वस्थ, प्रतिस्पर्धी, और फलता-फूलता व्यवसाय को चित्रित करता है. कार्यस्थल पर सफाई कई कारणों से महत्वपूर्ण है. स्वच्छता के कुछ खास फायदे इस प्रकार हैं:

- सबसे पहले, एक स्वच्छ और संगठित कार्यस्थल वातावरण ग्राहकों पर सकारात्मक प्रभाव डालता है. उनके संतोषजनक अनुभव होने की अधिक संभावना होती है और वे वहां से बैंक की एक अच्छी छवि लेकर घर जाते हैं .
- यह कार्यबल की गुणवत्ता और उस स्थान के प्रति उनके समर्पण और प्रतिबद्धता के स्तर को निर्धारित करता है जहां वे सप्ताह में पांच से छ: दिन, दिन में लगभग 8 से 10 घंटे बिताते हैं. जाहिर है, कार्यस्थल आपके दूसरे घर की तरह है और इसलिए, यह आपके और आपके संगठन के बारे में भी बहुत कुछ दिखाता है.
- कार्य स्थल अधिक आबादी वाले स्थान हैं, इसलिए वे गंदगी, रोगाणु और बैक्टीरिया के हॉटबेड हैं. इसलिए उनकी नियमित साफ़ सफाई कई खतरनाक बीमारियों से हमें बचाएंगी.
- स्वच्छता आपको मानसिक रूप से सुदृढ़ करती है और मन को तरोताजा रखने में आपकी मदद करती है. एक गंदा वातावरण अपने निवासियों को थका हुआ और सुस्त बना देता है, जबकि एक सुव्यवस्थित कार्यस्थल प्रतिस्पर्धी और प्रगतिशील माहौल बनाने में मदद करता है.

निष्कर्ष: स्वच्छता, चाहे वह व्यक्तिगत हो, सामाजिक हो या संगठनात्मक हो, चुनाव का विषय नहीं है बल्कि एक बाध्यता है. यह सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक उपायों को शामिल करना आवश्यक है कि पर्यावरण अपने प्राकृतिक रूप में बने रहे. अंत में, व्यक्तियों के जीवन में स्वच्छता अपरिहार्य है.भारत सरकार द्वारा भी स्वच्छता अभियान चलाया गया परन्तु वह अपने मकसद में पूर्ण रूप से सफल न हो सका. इसका सबसे बड़ा कारण यह है कि लोगों ने इसे मात्र एक औपचारिक अभियान समझा जिसकी सफलता केवल सोशल मीडिया पर फ़ोटो-विडियो शेयर करने तक ही सीमित रह गई. सरकार को यह समझने की आवश्यकता है कि मानसिक एवं भौतिक स्वच्छता को शिक्षा प्रणाली में अभिन्न रूप से शामिल करने की जरूरत है. जब हम अपने बच्चों को इसके फायदे को समझाने में सफल हो जाएंगे तो समाज में परिवर्तन आना भी शुरू हो जाएगा. एक समाज के रूप में हमें यह समझना होगा कि भौतिक स्वच्छता से कहीं ज्यादा जरुरी मानसिक स्वच्छता है. अगर हम मानसिक रूप से स्वच्छ एवं शुद्ध होंगे तो भौतिक स्वच्छता खुद ही आत्मसात कर लेंगे तथा उसके लिए किसी भी प्रकार के अभियान की आवश्यकता नहीं होगी. महात्मा गांधी ने कहा था अन्दर की स्वच्छता पहली चीज है जिसे पढ़ाया जाना चाहिए, बाकी बातें इसके बाद होनी है. स्वच्छता एक विकसित समाज की अवधारणा को साकार करने में योगदान देती है.

05 अगस्त

1874: जापान ने इंग्लैंड की तर्ज पर डाक बचत प्रणाली शुरू की

1945: अमेरिकी हवाई जहाज ने जापान के हिरोशिमा पर परमाणु बम गिराया

06 अगस्त

1862 : मद्रास उच्च न्यायालय की स्थापना

1906 : प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी चितरंजन दास और अन्य कांग्रेस नेताओं ने मिलकर 'वंदेमातरम' समाचार पत्र का प्रकाशन शुरू किया

जूठन : पुस्तक समीक्षा

- सौरभ तिवारी
सहायक प्रबन्धक-राजभाषा
क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नई

'जूठन' ओम प्रकाश वाल्मीकि (1950-2013) द्वारा लिखी गई एक दलित आत्मकथा है. इस आत्मकथा का दलित साहित्य के साथ ही साथ हिन्दी साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान है. इस आत्मकथा का प्रारम्भिक स्वरूप 'एक दलित की आत्मकथा' शीर्षक से 'हरिजन से दलित' नामक पुस्तक में एक लंबे लेख के रूप में प्रकाशित हुआ था. इसकी संरचना आत्मकथात्मक थी. पाठकों के आग्रह पर वाल्मीक जी ने अपनी आत्मकथा को विस्तार से लिखा. यह आत्मकथा दो खंडों मे प्रकाशित हुई है, पहला खंड 1997 में प्रकाशित हुआ इसमें लेखक के बचपन, शिक्षा ग्रहण, रोजगार, शादी तथा साहित्यकार के रूप मे स्थापित होने तक की कहानी है तथा दूसरा खंड जो वाल्मीक जी के मरणोपरांत 2015 में प्रकाशित हुई इसमें लेखक के एक साहित्यकार के रूप में स्थापित होने में किए गए संघर्ष का वर्णन किया गया है.

लेखक का समाज किसी भी आत्मकथा का बहुत ही महत्वपूर्ण अंग होता है. अधिकांश आत्मकथा समाज, परिवार, क्षेत्र के परिचय वर्णन से ही आरंभ होती है. एक दलित व्यक्ति की आत्मकथा, जिसको समाज के द्वारा सब से ज्यादा शोषित किया गया हो, यह परिचय बहुत ही महत्वपूर्ण हो जाता है. जूठन में वाल्मीक जी ने चूहड़ा अथवा भंगी समाज के चित्रण पर पूरा ध्यान दिया है. वे अपने जीवन, चाहे वे जिस भी स्थान पर रहे हों मुजफ्फरनगर, देहरादून, या फिर बंबई उन्होंने वहाँ का एक खांचा अपनी आत्मकथा में खींचा है. एक दलित व्यक्ति चाहे गाँव मे रहे अथवा शहर में, शिक्षित हो अथवा अशिक्षित, वो कितना भी योग्य क्यों न हो उसकी जाति व्यवस्था उसका शोषण सुनिश्चित कर ही देती है. उनका यह चित्रण अधिकांशत: दलित व्यक्तियों तथा उनके ऊपर किए जा रहे शोषण तथा अत्याचारों को प्रस्तुत करता है.

लेखक ने अपने गाँव के धार्मिक, सामाजिक और आर्थिक तथा जातीय संरचना को दर्शाया है. वहां के रीतिरिवाजों, प्रथाओं यथा जूठन की प्रथा, सूअर के बच्चे की बलि की प्रथा, उनके द्वारा मृत जानवरों की खाल उतार कर बेचना, शिक्षा का संघर्ष, अंधविश्वास, बरसात के दिनों की बाढ़ और भूख का चित्रण लेखक ने मार्मिकता के साथ किया है. इन वर्णनों के लिए लिए पुस्तक में कोई भाग विशेष नहीं चुना बल्कि प्रसंग के साथ साथ उन्होंने ने अपने समाज और परिवेश को उभारा है. बचपन में बरसात के दिनों की लाचारी, गरीबी तथा भूखमरी का वर्णन करते हुए उन्होंने लिखा है;

"शादी विवाह के मौकों पर जब उनके घर में दाल चावल बनते थे, तो हमारी बस्ती के बच्चे बर्तन लेकर माँड़ लेने दौड़ पड़ते थे. फेंक दिया जाने वाला माँड़ हमरे लिए गाय के दूध से ज्यादा मूल्यवान था."

वास्तविक जीवन से परिचय एक आत्मकथा की महत्वपूर्ण

07 अगस्त

1905 : भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने ब्रिटिश वस्तुओं के बहिष्कार का आह्वान किया.

1947 : मुंबई नगर निगम को बिजली और परिवहन व्यवस्था औपचारिक रूप से हस्तांतरित हुई.

08 अगस्त

1509 : विजय नगर साम्राज्य के सम्राट के रूप में महाराज कृष्णदेव राय की ताजपोशी.

1942 : महात्मा गांधी ने भारत छोड़ो आंदोलन की शुरुआत की.

विशेषता होती है. आत्मकथा लेखक के जीवन से वास्तविक परिचय कराती है. क्योंकि उस में उन बातों का भी विवरण होता है, जिन बातों से पाठक वर्ग अनभिज्ञ होता है. इस आत्मकथा में लेखक ने भी अपने जीवन की कथा कही है और साथ ही साथी मोहनदास नैमिशराय, राजेन्द्र यादव आदि रचनाकारों से अपने संबंधों की झाँकिया भी दी है.

जीवन की कहानी होने के कारण लेखक की रचनाओं की पुष्टि भी आत्मकथा से होती है. विभिन लेखकों नें अपनी आत्मकथा में अपनी रचना के विषय में बात कर उनके मूल संदर्भ, तथा उन संदर्भों से संबंधित घटनाओं के विषय में बात की है (उदाहरण के लिए मन्नू भण्डारी ने अपनी आत्मकथा मे अपनी कहानियों तथा उपन्यासों की चर्चा की है). वाल्मीक जी ने भी अपनी आत्मकथा में अपने जीवन की घटनाओं यथा शिक्षा, प्रेम, विवाह रोजगार आदि का वर्णन तो किया ही है साथ ही साथ अपनी विभिन रचनाओं के मूल आधार की जानकारी भी हमे इस आत्मकथा मे दी है. उदाहरण के लिए लेखक ने अपने मित्र हिरम सिंह की शादी की घटना को अपनी कहानी सलाम (1993) का आधार बनाया.

इस आत्म कथा में लेखक ने विभिन्न दलित समस्याओं पर विचार किया है. ये समस्याएं कुछ दलित समाज के बाहर से आती है तो कुछ स्वयं दलित समज के अंदर से ही उठ कर.

समाज के बाहर से आने वाली समस्याओं में लेखक ने 'कौन जात हो?' प्रश्न के उत्पीड़न का वर्णन किया है. यह छोटासा प्रश्न कितना मानसिक उत्पीड़न से भरा है इसका वर्णन आत्मकथा में बार बार आया है. जाति भेद और छुआछूत की विकृत मानसिकता को दलितों के उत्थान में प्रमुख समस्या मानते हुए लेखक ने आत्मकथा में बहुत सी ऐसी घटनाओं को उठाया है जिनमें मात्र जाति से दलित होने के कारण पहले लेखक को शिक्षा ग्रहण करने में समस्याएं आती है तथा जब वह अपने परिवार के द्वारा किसी तरह पढ़ाया जाता है तो दलित होने के कारण स्कूल में सहपाठियों के साथ साथ अध्यापकों के बुरे व्यवहार के कारण बहुत संघर्ष करना पड़ता है. नौकरी लग जाने पर उसे किराया चुकाने के बाद भी उचित घर नहीं प्राप्त हो पता. इस तरह से बाहरी समाज का उत्पीड़न उसके साथ बना रहता है.

दलित समस्याओं का शत प्रतिशत जिम्मेदार वाल्मीक जी ने उच्च जाति वर्ग नहीं माना है. वे शिक्षित हो चुके दलित वर्ग के द्वारा दलितों के उत्थान में पर्याप्त सहभागिता न लेने को भी दलित समस्या का एक कारण मानते हैं. 'सरनेम' को लेकर लेखक को अपने परिवार तथा मित्रों से विरोध का सामना करना पड़ता है.

दलित समाज विभिन्न प्रकार के उत्पीड़नों से गुजरता है. जिनमें शारीरिक, आर्थिक शोषण के साथ साथ मानसिक उत्पीड़न भी शामिल है जिसे सभी दलित रचनाकार प्रमुखता देते हैं. लेखक ने इस मानसिक उत्पीड़न को प्रमुखता के साथ चित्रित किया है. छुआछूत का उन्मूलन स्वतंत्रता के साथ हो चुका था लेकिन उसके बाद भी दलितजनों के साथ छुआछूत का व्यवहार, मृत जानवरों की खाल को उतार बाजार में बेचने जाना और रास्ते मे सहपाठियों के मिल जाने का भय, अच्छा व बुरा दोनों ही तरह के कपड़े पहनने पर अन्य विद्यार्थियों द्वारा किया जाने वाला व्यंग्य, किसी के अच्छे व्यवहार करने पर उसको जाती का पता चल जाने पर व्यवहार में आने वाले परिवर्तन का भय आदि उसी मानसिक शोषण का हिस्सा है.

कोई भी कृति निर्दोष नहीं हो सकती यह कथन 'जूठन' के लिए भी सत्य है. यदि इस कृति में कोई भी कमजोर पहलू दिखाई पड़ता है वह है इस आत्मकथा के स्वर की. लेखक

09 अगस्त

1881 : सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया के संस्थापक सर सोराबजी पोचखानावाला का जन्म.

1970 : देश के महान स्वतंत्रता सेनानी और गुमनाम नायक त्रिलोकीनाथ चक्रवर्ती का निधन. उन्होंने अपने जीवन के 30 वर्ष जेल में गुजारे. वह संभवत: सबसे लंबे समय तक जेल में रहने वाले स्वतंत्रता सेनानी थे.

1971 : भारत-रूस मैत्री संधि पर हस्ताक्षर.

बहुत से स्थानों पर चीजों को ले कर काफी आक्रामक हो जाता है जिससे की बहुत से पाठक इस रचना को पढ़ कर सहज नहीं हो पाते. साथ ही साथ पूरी आत्मकथा की कथा वस्तु जातिगत शोषण तथा उत्पीड़न के इर्द गिर्द ही निर्मित होती है. आत्म कथा में कहीं भी इस तत्व से हट किसी और विषय अथवा घटना पर नहीं जाती अत: लेखक का स्वतंत्र व्यक्तित्व इस रचना में उभर आने के स्थान पर मात्र जातिगत शोषण पर आश्रित नजर आता है. लेखक ने स्वयं ही अपनी इस खामी का स्पष्टीकरण इन शब्दों मे दिया है

"कई मित्र मेरी रचनाओं में मेरे लाउडनेस, ऐरोगैंट हो जाने का इशारा करते हैं. उनका इशारा होता है कि मैं संकीर्ण दायरों में कैद हूँ..... यानि मेरा दलित होना और किसी विषय पर अपने परिवेश, अपनी सामाजिक- आर्थिक स्थिति के अनुसार दृष्टिकोण बनाना ऐरोगैंट हो जाना है."

जब कोई भी व्यक्ति अपनी आत्मकथा लिखता है तब वह अपने मन में कुछ उद्देश्यों को ले कर चलता है. यद्यपि आत्मकथा उसके अपने जीवन पर लिखी गई होती है लेकिन लेखक अपने उद्देश्य के अनुसार ही घटनाओं का वर्णन और उनका विश्लेषण करता है. यह उद्देश्य आत्म-अभिव्यक्ति, पाठकों को अपने जीवन से परिचित करवाना तथा कभी-कभी लेखकों द्वारा अपने लेखन की परिस्थितियों से अवगत करना भी हो सकता है, जैसा की हरिवंश राय बच्चन ने अपनी आत्मकथा मे अपने जीवन के साथ अपने भावनात्मक विकास को अपनी आत्मकथा 'क्या भूलूँ क्या याद करूँ' में तथा मन्नू भण्डारी ने अपनी आत्मकथा 'एक कहानी ये भी' में अपने लेखकीय जीवन का वर्णन किया है. एक दलित आत्मकथा का उद्देश्य इन आत्मकथाओं से भिन्न होता है. यह किसी एक व्यक्ति अथवा लेखक की अपनी अभिव्यक्ति न हो कर पूरे दलित समाज को अभिव्यक्त करता है. दलित आत्मकथा दलितों के अमानवीय जीवन स्थितियों को, दलित जन के साथ होने वाले दुर्व्यवहार, शोषण तथा जातिवादी समाज के द्वारा उन्हें इसी अवस्था मे बांधे रहने की चालों, आदि को पाठकों के सामने लाती है.

वाल्मीकि जी ने इस आत्मकथा को पाठकों दलित पाठकों के आग्रह पर विस्तृत रूप में लिखा. एक दलित आत्मकथा की ही भांति इस आत्मकथा में दलित विषयों को बहुत ही मार्मिक और संवेदनशील तरीके से उठाया है तथा यह अन्य प्रसिद्ध आत्म कथाओं यथा डॉ. तुलसी राम की आत्मकथा 'मुर्दहिया' की अपेक्षा अधिक तीखा स्वर ले कर चलती है. घर, स्कूल, कॉलेज, ऑफिस, सार्वजनिक परिवहन आदि स्थानों पर होने वाले शोषण, गरीबी, भुखमरी, छुआछूत आदि के कारण होने वाली व्यथाओं को चित्रित किया है साथ ही साथ दलित समाज में प्रचलित बहुत सी अमानवीय तथा प्रथम दृष्टि में पतित लगने वाली प्रथाओं के पीछे छिपी मजबूरी और उनके उपाय भी इस आत्मकथा में बताए गए हैं. कुल मिला कर यह कहा जा सकता है कि इस आत्मकथा का मुख्य उद्देश्य दलित समाज की पीड़ा के उस दंश का चित्रण करना है जिसे वही जानते हैं जिन को सहना पड़ा है.

अंत मे यह कहा जा सकता है, कि जूठन यह हिन्दी की एक सफल दलित आत्मकथा है. यह आत्मकथा दलित जीवन का एक यथार्थवादी चित्र पाठक के सामने रखती है. इस आत्मकथा का स्वर धार्मिक और जातीय विभेद के लिए काफी तीखा है. आज जब दलित समाज पर होने वाले अत्याचार बढ़ते जा रहे हैं, तब इस तरह की आत्मकथा की आवश्यकता और भी बढ़ जाती है. परंतु इस आत्मकथा से यह उम्मीद की जा सकती है की इसे पढ़ने के बाद कोई भी व्यक्ति यह प्रश्न नहीं पूछेगा की 'कौन सी जाति हो?'

10 अगस्त

1966 : अमरीका ने अंतरिक्ष में रॉकेट उतारने की लिए उपयुक्त स्थान का चित्र लेने पहला अंतरिक्ष यान भेजा.

11 अगस्त

1960: अफ्रीकी देश चाड ने फ्रांस से स्वतंत्रता हासिल की.

1961: दादर नगर हवेली का भारत में विलय और इसे केंद्रशासित प्रदेश बनाया गया.

हिन्दी: आज और कल

- मेनका कुमारी
सहायक प्रबन्धक (राजभाषा विभाग)
क्षेत्रीय कार्यालय जोधपुर

एँथनोलॉग द्वारा जारी की गई रिपोर्ट के अनुसार हिंदी विश्व की तीसरी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है और 615 मिलियन लोग हिंदी भाषा बोलते हैं. विश्व के 200 से ज्यादा विद्यालयों में हिंदी की पढ़ाई करवाई जाती है. भारत की राजभाषा हिंदी धीरे-धीरे विश्व स्तर पर अपने आप को स्थापित करती जा रही हैं. संपूर्ण विश्व में हिंदी के कारण भारतवासियों का सम्मान बढ़ रहा है. आज हिंदी को बोलने व समझने वाले लोगों की संख्या निरंतर बढ़ती जा रही है और साथ ही हिंदी के अध्ययन करने वालों की संख्या भी बढ़ रही है. इंटरनेट भी हिन्दी की बढ़ोतरी में बहुत सहायक सिद्ध हो रहा है. हिंदी मात्र एक भाषा ना होकर कई बोलियों और भाषाओं का योग है इसी कारण मैथिली बोलने वाला व्यक्ति अवधी को और अवधी बोलने वाला ब्रज भाषा को समझ पाने में सक्षम है. आज शिक्षा, पत्रकारिता, विचार-विनिमय, राज-काज सभी का माध्यम हिंदी स्वीकृत किया जा रहा है. भारत के सभी व्यक्ति विदेश में स्वयं को हिंदी भाषी के रूप में दर्शाते हैं. हिंदी न सिर्फ स्वाभिमान एवं स्वावलंबन का घोतक है बल्कि हमें आत्मनिर्भर बनाने के लिए भी आवश्यक है. भारत को आत्मनिर्भर बनने के लिए सभी क्षेत्रों को हिंदी से जोड़ना होगा. रवीन्द्र नाथ टैगोर का यह कथन भारत की बहुभाषिता में हिंदी का महत्व दर्शाता है:

“भारतीय भाषाएँ नदियां है और हिन्दी महानदी.”

स्वभाषा के बिना राष्ट्र का विकास संभव नहीं इसी कारण चीन, जापान जैसे कई देश अपनी भाषा को महत्व देते हैं और अपने राज-काज से जुड़े हुए सभी काम अपनी भाषा में ही करते हैं. भारत की भाषाई विविधता के कारण त्रिभाषा सूत्र भारत की शिक्षा नीति में जोड़ा गया ताकि हिन्दी के उत्थान के साथ साथ अन्य भारतीय भाषाओं का वजूद भी बना रहें.

पिछले कुछ वर्षों में हिंदी ने विश्व पटल पर अपनी वैश्विक पहचान बनाई है बहुत से संस्थान आज हिंदी में कामकाज कर रहे हैं और हिंदी को प्राथमिकता दे रहे हैं. पूरा विश्व हिंदी की क्षमता और शक्ति को समझ गया है. हिंदी एक सरल भाषा होने के साथ समृद्ध और तर्कसंगत भाषा भी है और अपने व्याकरणिक गुणों व उच्चारण के कारण ये एक वैज्ञानिक भाषा भी है. हिंदी भारत की एकता को सुदृढ़ करने का सशक्त माध्यम बन रही है. आज हमें हिंदी के सरलतम रूप को अपनाने की जरूरत है ताकि यह संघ में राजकीय कार्य एवं कामकाज में ज्यादा से ज्यादा प्रयोग की जा सके. हिन्दी के सरल रूप का प्रयोग करने से खासकर ग्रामीण इलाकों के लोगों तक हिन्दी के राजकाजीय स्वरूप की पहुंच आसानी से हो पाएगी.

हिंदी देशवासियों के अभिव्यक्ति का माध्यम है और हिंदी भाषी होने के नाते इसके राजभाषा के रूप में विकास का दायित्व हम पर आता है. भारत सरकार द्वारा आयोजित विभिन्न कार्यक्रम जैसे आजादी का अमृत महोत्सव, सरकारी नीतियां, प्रधानमंत्री जी के भाषण, सरकार की योजना और अन्य कई सारे कार्यक्रम हिंदी भाषा में आयोजित किए जा रहे हैं और इनके हिंदी में आयोजन होने से अन्य कार्यक्रमों को भी हिंदी में करने को बढ़ावा मिला है. इन आयोजनो में हमारी प्राचीनतम संस्कृति, इतिहास हमारे स्वतंत्रता सेनानियों के संघर्षों से जुड़े कार्यक्रम भी हो रहे हैं. यह

12 अगस्त

1919 : भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम के जनक और भारतीय भौतिक वैज्ञानिक विक्रम साराभाई का जन्म.

1960 : नासा ने अपना पहला सफल संचार उपग्रह ईको-ए प्रक्षेपित किया.

13 अगस्त

1784: भारत में प्रशासनिक सुधारों के लिए पिट्स इंडिया विधेयक ब्रिटिश संसद में पेश.

2008: भारत ने मल्टी-बैरल रॉकेट लॉन्चर (एमबीआरएल) हथियार प्रणाली पिनाक का सफल परीक्षण किया.

देख कर बहुत अच्छा लगता है कि इसमें अधिक से अधिक हिंदी को शामिल किया जा रहा है और अधिक से अधिक कार्यक्रम हिंदी में ही किए जा रहे है. स्वतंत्रता दिवस से लेकर गणतंत्र दिवस तक और अन्य कई सारे कार्यक्रमों में संचालन भी हिंदी में किया जा रहा है. हिंदी एकमात्र ऐसी भाषा है जो पूरे देश को एक सूत्र में पिरोने की क्षमता धारण किए हुए हैं और इसी कारण इसने पूरे देश को एक सूत्र में बांधा हुआ है और इसका कारण यही है कि पूरे भारत में हिंदी को समझा और बोला जाता है .

भारत एक बहुभाषी राष्ट्र है. यहां कई भाषाओं का समृद्धशाली परिवेश लंबे समय से चलता आ रहा है.₹10 के नोट में भी भारत की भाषाई विविधता परिलक्षित होती है. हिन्दी समस्त भारतीय भाषाओं के बीच एक सेतु के समान है. हिंदी लिखने, बोलने, समझने में अधिक सरल है और इसी कारण हिंदी को राष्ट्र हित की भाषा मानते हुए संविधान के निर्माताओं ने इसे राजभाषा का स्थान दिया. हिंदी को राजभाषा बनाने के बहुत से अन्य कारण भी हैं जैसे यह सभी क्षेत्र में बोली जाने वाली भाषा है. हिन्दी को सभी वर्गों के लोगों का समर्थन प्राप्त है. हिंदी का वर्चस्व समस्त हिंदुस्तान पर है और यह भाषा अभिव्यक्ति की क्षमता रखने वाली भाषा है. हिन्दी में संचित ज्ञान की एक परंपरा है जिसके कारण प्राचीन काल से देश-विदेश के लोग हिंदी सीखने के लिए भारत आते रहे हैं. अपने साथ-साथ अन्य भाषाओं के उत्थान के लिए भी हिंदी सहायक सिद्ध होती है और हिंदी के लिपि देवनागरी विश्वविख्यात है जिस से हिंदी का महत्व अधिक बढ़ जाता है.

भारत को स्वतंत्र राष्ट्र बनाने में भी हिंदी का प्रमुख योगदान रहा है. रामधारी सिंह दिनकर, महादेवी वर्मा, अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध', सुभद्रा कुमारी चौहान, सोहनलाल द्विवेदी, मैथिलीशरण गुप्त, हरिवंश राय बच्चन आदि जैसे कई प्रमुख लेखक हुए हैं जिन्होंने भारत की जनता को अपने नारों और अपने हिंदी के लेखन से झकझोर कर रख दिया था. इनके लेखन ने आम जनता के मध्य आजादी के महत्व को और बढ़ाने की भूमिका निभाई . हिन्दी स्वतन्त्रता आंदोलन की संपर्क भाषा रही है. पत्र पत्रिकों के हिन्दी संस्करण ने आम जनता के बीच लोकप्रियता प्राप्त की व मार्गदर्शन किया.

इसी कारण संविधान निर्माताओं ने हिंदी के योगदान को ध्यान में रखते हुए ये समझा कि हिंदी ही राजभाषा बनाने का सर्वोत्तम विकल्प है. लंबी चर्चा के बाद 14 सितंबर सन 1949 को हिंदी राजभाषा के रूप में स्वीकार की गई. इसलिए प्रतिवर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है. इसी कारण देश के सभी केंद्रीय कार्यालयों में हिंदी दिवस, हिंदी कार्यक्रम, हिंदी माह, हिन्दी पखवाड़ा इस अवधि के अंतर्गत आयोजित किए जाते हैं. जिसमें प्रतिभागियों को प्रोत्साहन हेतु नगद पुरस्कार भी दिए जाते हैं. सरकार की राजभाषा नीति प्रेरणा, प्रोत्साहन और सद्भावना पर आधारित है और भारत की राजभाषा नीति के अंतर्गत भारत की बहुभाषिकता को मध्य नजर रखते हुए हिंदी को थोपने की जगह उत्तरोत्तर विकास करते हुए अमल में लाने की व्यवस्था की गई है. हिंदी सभी क्षेत्रीय भाषाओं के मध्य एक सेतु का कार्य कर रही है जैसे किसी भी क्षेत्रीय भाषा की पुस्तक का किसी अन्य क्षेत्रीय भाषा में अनुवाद करना थोड़ा कठिन कार्य है लेकिन यदि उसका अनुवाद हिंदी में कर दिया जाए तो क्षेत्रीय भाषा में अनुवाद कर पाना आसान हो जाता है.

हिन्दी भाषा जीवन को जोड़ती है और भाषा जीवन के प्रमुख आयामों में से एक है और भारतीयों के लिए हिंदी इसी प्रकार जीवन को जोड़े रखने में सहायक है. अब व्यापारिक तौर पर भी हिंदी भाषा का प्रयोग किया जा रहा है क्योंकि भारत विश्व स्तर पर स्वयं को एक बड़े बाजार के रुप में स्थापित कर रहा है इससे यह तो सुनिश्चित किया जा सकता है कि आने वाले समय में हिन्दी को और बृहद और वैश्विक स्तर पर और बढ़ावा मिलेगा.

डॉ रघुवीर का कथन है जनतंत्र का माध्यम जनभाषा है.

हिन्दी एक केंद्रीय भाषा है हिन्दी का प्रचार प्रसार करना हमारा कर्तव्य बनता है. हमें संकल्प करना चाहिए कि हम सब मिलकर हिन्दी का सम्मान करेंगे, हिन्दी का विकास करेंगे.

14 अगस्त

1862 : बंबई उच्च न्यायालय की स्थापना.

1947 : भारत का विभाजन हुआ और पाकिस्तान पृथक राष्ट्र बना.

1968 : मोरारजी देसाई पाकिस्तान के सर्वोच्च नागरिक सम्मान निशान-ए-पाकिस्तान से सम्मानित.

रहिमन देख बड़न को लघु न दीजै डार.

राजभाषा हिन्दी का महत्त्व एवं बैंकिंग व वित्तीय संस्थानों में हिन्दी की उपयोगिता एवं प्रशिक्षण

- तरुण कुमार गोयल
प्रबन्धक, मा.सं.वि.
क्षेत्रीय कार्यालय हैदराबाद

राजभाषा, किसी राज्य या देश की घोषित भाषा होती है जो कि सभी राजकीय प्रयोजन अर्थात सरकारी काम-काज में प्रयोग होती है. भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343(1) के अंतर्गत देवनागरी लिपि मे हिन्दी को संघ की राजभाषा घोषित किया गया है.

भारतीय संविधान में राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों के लिए हिन्दी के अतिरिक्त 21 अन्य भाषाएँ राजभाषा के रूप में स्वीकार की गयी हैं. संविधान कि आठवीं अनुसूची में कुल 22 भारतीय भाषाओं को स्थान प्राप्त हुआ है. संविधान सभा ने लम्बी चर्चा के बाद 14 सितम्बर 1949 को हिन्दी को भारत की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया. इसके बाद संविधान में अनुच्छेद 343 से 351 तक राजभाषा के सम्बन्ध में व्यवस्था की गयी. इसी महत्त्वपूर्ण निर्णय के महत्त्व को प्रतिपादित करने के लिए राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के अनुरोध पर वर्ष 1953 से सम्पूर्ण भारत में 14 सितम्बर का दिन प्रतिवर्ष हिन्दी दिवस के रूप में मनाया जाता है.

वैसे तो भारत देश में बहुत भाषायें बोली जाती हैं परंतु हिन्दी भाषा का अपना ही एक महत्त्व है जिसके कारण यह लोगों के हृदय में एक महत्त्वपूर्ण स्थान लिए हुये है. हिन्दी भारत में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है.

स्वतंत्रता से पूर्व हिन्दी की स्थिति:

अंग्रेज़ी शासन से पूर्व मुगल शासन में हिन्दी संपर्क भाषा के रूप में तो थी किंतु राजकाज की भाषा फ़ारसी या उर्दू ही थी . यद्यपि निचले स्तर पर सर्वसाधारण के हिसाब-किताब हिन्दी में रखे जाते थे. अ. कबर के राजस्व मंत्री टोडरमल के आदेश से सरकारी कागजात . फारसी में लिखे जाने लगे तथा फ़ारसी सरकारी नौकरी से जुड़ गई और तीन शताब्दियों तक एक विशिष्ट मुंशी वर्ग के द्वारा फ़ारसी ही राजभाषा के रूप में काम में ली गई . सन् 1830 तक ईस्ट इंडिया कंपनी ने फ़ारसी और हिन्दी को राजभाषा के रूप में यथावत रखा और 20 नवंबर, 1831 को कानून बनाकर बंगाल, उड़िया, गुजराती, असमिया आदि को तो संबंधित प्रांतों में राजभाषा बना दिया किंतु हिन्दी प्रदेशों में फ़ारसी के स्थान पर हिन्दी के बजाए उर्दू को राजभाषा बना दिया. फलस्वरूप उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश, बिहार आदि में उर्दू, जिसमें फ़ारसी के शब्दों की बहुतायत थी, के स्थान पर देवनागरी लिपि में हिन्दी को राजभाषा बनाने का आंदोलन भी हुआ . इसलिए 1870 से 1981 तक अनेक आदेश जारी हुए जिसमें देवनागरी लिपि को अनिवार्य करना भी शामिल था किंतु बीसवीं शताब्दी शुरू होने तक धीरे-धीरे उच्च स्तरों पर एवं उच्च शिक्षा के क्षेत्र में फ़ारसी एवं हिन्दी के स्थान पर अंग्रेज़ी का फैलाव

15 अगस्त

1854 : ईस्ट इंडिया रेलवे ने कलकत्ता (अब कोलकाता) से हुगली तक पहली यात्री ट्रेन चलाई, हालांकि आधिकारिक तौर पर इसका संचालन 1855 में शुरू हुआ

1947: भारत को अंग्रेज़ों की हुकूमत से आजादी मिली.

1947: रक्षा वीरता पुरस्कारों-परमवीर चक्र, महावीर चक्र और वीर चक्र की स्थापना

होता गया. 1857 ई. के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के बाद हिन्दी को संपर्क भाषा और राष्ट्रभाषा के रूप में बराबर स्थान मिलता गया. हिन्दी को राष्ट्रभाषा का दर्जा देने के लिए बीसवीं शताब्दी के पूर्वाब्ध में आंदोलन चला किंतु भाषाई-राजनीति के कारण स्वतंत्र भारत के संविधान में हिन्दी को राष्ट्रभाषा का नहीं 'राजभाषा' का दर्जा मिला .

हमारा संविधान और राजभाषा हिन्दी:

भारतीय संविधान में अनुच्छेद 343 से 351 तक हिन्दी के राजभाषा संबंधी व्यवस्था के निर्देश हैं. अनुच्छेद 343(1) में देवनागरी लिपि में लिखी जानेवाली हिन्दी को संघ की राजभाषा कहा गया है, साथ ही प्रारंभ के 15 वर्षों तक अंग्रेज़ी के प्रयोग को भी सभी शासकीय कार्यों के लिए मान्यता दी गई. अनुच्छेद 344 के अनुसार प्रत्येक पाँच वर्ष के पश्चात् राष्ट्रपति एक भाषा आयोग की नियुक्ति करेंगे. वह आयोग हिन्दी का उत्तरोत्तर अधिक प्रयोग करने और अंग्रेज़ी का प्रयोग घटाने की सिफ़ारिश करेगा. अनुच्छेद 345, 346, 347 के अनुसार दो प्रदेशों के बीच अथवा एक प्रदेश और संघ के बीच संवाद विनिमय के लिए अंग्रेज़ी अथवा हिन्दी का और परस्पर समझौते से केवल हिन्दी का प्रयोग किया जा सकेगा. किसी राज्य की विधानसभा विधि द्वारा अपने प्रदेश की भाषा को मान्यता प्रदान कर सकेगी. यदि कोई राज्य अंग्रेजी को जारी नहीं रखना चाहता तो विधि द्वारा उस प्रदेश की भाषा राजभाषा हो जाएगी. उच्च न्यायालय तथा उच्चतम न्यायालय की भाषा अंग्रेज़ी होगी किंतु राष्ट्रपति या राज्यपाल की पूर्व सम्मति से हिन्दी अथवा उस राज्य की भाषा का प्रयोग उच्च न्यायालय की कार्यवाही के लिए प्राधिकृत किया जा सकेगा.

राजकीय प्रयोजनों में हिन्दी के विकास के लिए अनुच्छेद 351 का विशेष महत्व है. संघ को यह कार्य 15 वर्षों में कर लेना चाहिए था किंतु राजनीतिक इच्छा के अभाव में छह दशकों के बाद भी संघ अपने कर्तव्य को बहुत कम पूरा कर पाया है. राजभाषा अधिनियम, 1967 के द्वारा अंग्रेज़ी के प्रयोग को अनिश्चित समय तक जारी रखने का उपबंध भी किया गया है जिसके फलस्वरूप अब कोई प्रदेश जब तक चाहेगा, अंग्रेजी को भी संघ की राजभाषा के रूप में अपनाता रह सकेगा. इस प्रावधान से अब मिज़ोरम, नागालैंड आदि प्रदेश जिन्होंने अपनी प्रादेशिक भाषा ही अंग्रेजी अपना रखी है, हिन्दी से जुड़ने की मानसिकता से मुक्त हो गए हैं.

राजकाज में हिन्दी का प्रयोग:

संघीय स्तर पर राजभाषा के रूप में अंग्रेज़ी का वर्चस्व आज भी कायम है. जो स्थिति मुगल काल में फ़ारसी की थी, कमोबेश वही स्थिति आज अंग्रेज़ी की है. अंग्रेज़ी आज दक्षिण भाषा-भाषियों के विरोध के कारण ही नहीं, बल्कि प्रशासकों एवं समाज के उच्च वर्ग के अपने निहित स्वार्थ के कारण, राजकाज के स्तर पर, उच्च शिक्षा के स्तर पर छाई हुई है. जब तक अंग्रेज़ी के साथ प्रतिष्ठा, सत्ता, नौकरी और पैसा जुड़ा रहेगा, तब तक लोगों से यह अपेक्षा करना कि वे अपने बच्चों को अंग्रेज़ी न पढ़ाएँ, एक तथ्य को अनदेखा करना होगा. जब तक ये अंग्रेज़ी के मानस-पुत्र सत्तारूढ़ रहेंगे, तक तब अंग्रेज़ी शिक्षा भी प्रचलन में रहेगी और राजभाषा के रूप में भी. गाँधी जी ने अंग्रेज़ी के इस मोह से पिंड छुड़ाना 'स्वराज' का अनिवार्य अंग माना था, किंतु देश की विडंबना है कि वह इस मोह से छूटने की बजाय दिन-प्रतिदिन उसमें जकड़ता जा रहा है. यही हमारी गुलाम मानसिकता का परिचायक है और हिन्दी की अपनी त्रासदी भी है.

राजभाषा की वर्तमान स्थिति:

हिन्दी को राजभाषा के रूप में अपनाने में राष्ट्रीय-प्रतिबद्धता की कमी तथा क्षेत्रीयवाद एवं चंद शासक वर्ग द्वारा आम जनता को पिछड़ा रखने की साज़िश तो है ही साथ ही राजभाषा के रूप में कभी हम अंग्रेज़ी के अनुवाद बहुत जटिल कर बैठते हैं, कभी वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा निर्मित तकनीकी शब्दों का प्रयोग नहीं करके भ्रम फैलाते हैं, कभी हिन्दी के शब्द-कोश, टंकण, कंप्यूटर आदि खरीदने में शिथिलता बरतते हैं,

16 अगस्त

2008: कॉन्गो में तैनात 125 भारतीय पुलिस अफ़सरों को संयुक्त राष्ट्र शांति पुरस्कार से सम्मानित किया गया.

17 अगस्त

1947 : भारत की आजादी के बाद पहली ब्रिटिश सैन्य टुकड़ी स्वदेश रवाना.

1978 : तीन अमरीकियों ने हॉट एयर बैलून से अटलांटिक महासागर को पार किया.

कभी अंग्रेज़ी का जो ढर्रा चला आ रहा है उसे बदलने में संकोच या आलस करते हैं. प्रत्येक 14 सितंबर को सरकारी कार्यालय प्राय: हिन्दी दिवस, सप्ताह, पखवाड़ा या मास का आयोजन करते हैं किंतु जितनी निष्ठा से हिन्दी को अपनाने का कार्य होना चाहिए वह नहीं करते . दरअसल हर सरकारी कर्मचारी यदि अपने राष्ट्रीय एवं भाषाई बोध से गर्वित होकर कष्ट उठाकर भी हिन्दी को अपनाने का संकल्प कर ले तो राजभाषा के रूप में हिन्दी का शत-प्रतिशत व्यवहार संभव हो सकता है . हम संकल्प लें और करें, अन्य कोई उपाय नहीं है.

राजभाषा हिन्दी- राष्ट्रीय अस्मिता और सांस्कृतिक गरिमा का सवाल:

संघ की राजभाषा के रूप में हिन्दी को अपनाना और अंग्रेज़ी से मुक्ति चाहना न केवल प्रबल राजनीतिक इच्छा की अपेक्षा करता है बल्कि राष्ट्रीय अस्मिता और भारतीय जनता की अपनी भाषा को गौरवान्वित करने की समझ से भी जुड़ा हुआ है. हिन्दी का प्रश्न आम जनता के विकास का प्रश्न भी है क्योंकि अंग्रेज़ी के 3 प्रतिशत लोग हैं जबकि 44 प्रतिशत जनता की भाषा हिन्दी ही है. अत: न केवल राजनीतिक निर्णय के रूप में बल्कि आम जनता के भावात्मक एवं बौद्धिक विकास की दृष्टि से हिन्दी को संघ की राजभाषा के रूप पूरे देश में, सभी प्रादेशिक सरकारों द्वारा अंगीकार करना चाहिए तथा अपनी सामाजिक-सांस्कृतिक गरिमा एवं राष्ट्रीयता को सम्मान देने का परिचय देना चाहिए.

बैंकिंग व अन्य वित्तीय संस्थानों में हिन्दी का महत्व:

वित्तीय व्यवसाय सामान्यजन से जुड़ा है. पिछले 2 दशक में बैंकिंग व अन्य वित्तीय संस्थानों का स्वरूप काफी बदल गया है. घंटों-घंटों कतार में खड़े रहने वाला, थका देने वाला माहौल आज कितना आसान हो गया है. नई तकनीक के प्रचार व प्रसार, उसकी महत्ता, गुण, उपयोगिता ने आज मानव को उसके घर में ही सीमित कर, उसे पूरी तन्मयता के साथ नये-नये साधनों का प्रयोग करते हुए, एक छोर से दूसरे छोर तक संपर्क करने व लेन-देन करने के योग्य बना दिया है. आज तकनीक चाहे कितनी भी आधुनिक हो जाए, नये-नये आयामों को प्राप्त कर ले, फिर भी मूल इकाई क्या है, जिससे हमें लक्ष्यों को पाना है, कारोबार को बढ़ाना है, वह है-ग्राहक, उपभोक्ता, एक आम आदमी, जो हिन्दी ही जानता है, हिन्दी ही समझता है, हिन्दी ही बोलता है. बैंकिंग व अन्य व्यवसाय में हिन्दी का महत्व और भी बढ़ जाता है. आपको अपने कार्यक्षेत्र का विस्तार हिन्दी भाषा को बिंदु बना कर, उसे लक्ष्य मान कर करना होगा. बदलते वित्तीय परिवेश में हिन्दी को जितना अधिक लोगों के बीच लायेंगे, उन्हें हर बात हिन्दी में ही समझायेंगे, तभी वह दिल से-मन से जुड़ पाएंगे. वह आपके कार्य, व्यवहार की, योजनाओं की चर्चा करेंगे और लोग जुड़ते चले जाएंगेत वास्तव में यही तो बैंकिंग व अन्य वित्तीय व्यवसाय में हिन्दी के महत्व को उजागर करता है.

भारत गांवों में बसता है और सबसे अधिक आवश्यकता इन्हीं ग्रामीण लोगों को बैंकिंग प्रणाली से जोड़ने की है. यह वर्ग अधिकांश हिन्दी भाषा ही समझता है और बोलता है.आज बैंकिंग व अन्य वित्तीय व्यवसाय में प्रतिस्पर्धा है, चुनौती है, आगे बढ़ने की होड़ है, क्षेत्र विस्तृत ही होता जा रहा है, तो ऐसे में तो हिन्दी का महत्व और भी बढ़ जाता है. जो भी तकनीक आम आदमी से जुड़ी है, उसमें असीम वृद्धि की हमारे यहां गुंजाइश है, अपेक्षा है. हमारी अर्थव्यवस्था उठान पर है, इसलिये तकनीक का प्रयोग करने वालों की संख्या में आश्चर्यजनक बढ़ोतरी हुई हैत यह बैंकिंग व अन्य वित्तीय संस्थानों में हिन्दी के महत्व को समझने व उसके प्रचार-प्रसार के कारण ही है. आज सभी सरकारी व निजी बैंक, बीमा कम्पनी में भी प्रयोग में आने वाली सारी सामग्री, दस्तावेजी काम अधिकतर हिन्दी में है, या हिन्दी-अंग्रेजी में है. यहां तक कि विदेशी बैंक भी हिन्दी का एक स्तर तक प्रयोग कर रहे हैं. संसार के सभी सभ्य और स्वाधीन देश अपना काम अपनी भाषा में करते हैं, पर भारत इसका अपवाद है.

18 अगस्त

1800: लार्ड वेलेजली ने कलकत्ता में फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना की.

1872: महाराष्ट्र के महान संगीतज्ञ पंडित विष्णु दिगंबर का जन्म. नेत्रहीन होने के बावजूद संगीत के क्षेत्र में उन्होंने यादगार उपलब्धियां हासिल कीं.

आज़ादी के 75 वर्ष बाद भी हमारा अधिकांश कार्य अंग्रेजी में हो रहा है, जबकि हिन्दी सरल एवं वैज्ञानिक भाषा है. हिन्दी जानना, बोलना और लिखना पिछड़ेपन की निशानी नहीं, अपितु यह तो गरिमामयी राष्ट्रीय अभिव्यक्ति है. हिन्दी राष्ट्रीय गौरव और अस्मिता का प्रतीक ही नहीं, भारत की आत्मा की आवाज़ है. यही आवाज़ बैंकिंग व अन्य वित्तीय व्यवसाय में हिन्दी की महत्ता को समझते हुए जब गुंजायमान होगी, तो हिन्दी हिन्द का गौरव होगी, माँ भारती के माथे का तिलक होगी. जब हिन्दी का बैंकिंग व अन्य वित्तीय संस्थानों में भरपूर प्रयोग होगा, जन-जन तक लोगों को अपनी भाषा में योजनाओं की जानकारी मिलेगी, उनका लाभ उठा कर, अपने व्यवसाय को, रोजगार को, अपनी दुकान, अपने कार्य को बढ़ावा देकर गति देंगें, तो देश भी प्रगति के रास्ते पर चल पड़ेगा, दौड़ेगा, उम्मीदों के आसमाँ को अपने कदमों में ले आएगा. उसके साथ-साथ राष्ट्र का भी विकास होगा, राष्ट्र तरक्की के रास्ते पर अग्रसर होगा, विश्व में बुलंदियों पर अपने भारत का नाम होगा.

वित्तीय व्यवसाय में हिन्दी को तभी सम्पूर्ण महत्व मिल पाएगा, जब वह सूचना प्रौद्योगिकी को अपने अंदर आत्मसात कर लेगी. यह तकनीक भी अपने प्रवाह के लिये भाषा का माध्यम ढूंढती है और जनभाषा से बेहतर कोई अन्य सशक्त माध्यम नहीं हो सकता. इसी कारण ही विश्व के किसी भी कोने तक हमारा संपर्क हो गया है. आज हम वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग द्वारा अपने घर पर या कार्यालय में बैठे अपने अन्य कार्यालयों में काम कर रहे लोगों से संवाद कर सकते हैं. ऐसे ही मुख्यमंत्री अपने सचिवालय से ही सभी जिलाधीशों से एक ही समय में बात कर सकते हैं. यह वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग अधिकतर हिन्दी में ही होती है. आम कम्प्यूटर उपभोक्ता के कामकाज से लेकर डाटा बेस तक में हिन्दी पूरी तरह उपलब्ध है. यह बात अलग है कि अब भी हमें बहुत दूर जाना है, बहुत आगे जाना है, पर एक बड़ी शुरुआत हुई और इसे होना ही था. आज घर बैठे, भाषा चयन करके मोबाइल, लैपटॉप पर बैलेंस, स्टेटमेंट देखिए, नेट बैंकिंग के माध्यम से लेन-देन कीजिये, कितना आसान हो गया है सब-कुछ, वो भी सब हिन्दी में. आखिर जन-जन की भाषा-हिन्दी, दुलारी हिन्दी, करोड़ों लोगों की हृदय स्पंदन कैसे पीछे रह सकती है. बैंकिंग व अन्य वित्तीय व्यवसाय में हिन्दी के महत्व को बढ़ाता यह अनवरत निरंतर प्रयास कवि दुष्यंत की यह पंक्तियां ही दोहराता-सा लगता है-

"कौन कहता है आसमां में छेद नहीं हो सकता,

एक पत्थर तो तबियत से उछालो यारों."

तबियत से उछाला गया यह पत्थर ईमानदारी, निष्ठा, आत्मविश्वास से भरा प्रयास एक दिन हिन्दी को आसमां की ऊंची ऊंचाईयों तक ले जाएगा. हिन्दी का अधिकतम प्रयोग ही, बैंकिंग व अन्य वित्तीय व्यवसाय को प्रगति देगा, उन्नति के नए कीर्तिमान स्थापित करेगा, आखिर अधिकांश लोगों की भाषा, जन-जन की भाषा को कैसे नकार सकते हैं. हमें तो स्वयं को हिन्दी के प्रयोग में ढालना ही होगा. यह तो अपरिहार्य है, कारण स्पष्ट है, हमारे पास तो संख्या बल है, युवा शक्ति है, पढ़े-लिखे, समझदार और मातृभाषा हिन्दी को महत्व देने वालों की तादाद करोड़ों में है. अगर इन करोड़ों तक पहुंचना है, बैंकिंग व अन्य वित्तीय व्यवसाय में निरंतर विस्तार लाना है, लाभप्रदता बढ़ानी है, विकास की ऊंचाइयों को छूना है तो रोजमर्रा के काम में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देना ही है. सरलतम, सुलभ ढंग से नित नई तकनीक का प्रयोग कर, हर आदमी की पहुंच में, आम आदमी की पहुंच में ला कर ही बैंकों व अन्य सभी वित्तीय संस्थानों के लिये अपने लक्ष्यों को पाना आसान होगा. जन-धन योजना के तहत 22 करोड़ से ज्यादा खाते खुले. योजना की घोषणा होने पर 5 साल पहले तो 12 करोड़ से ऊपर खाते तो 6 माह में ही खुल गए थे. ये खाता खुलवाने वाले अधिकतर आम गरीब मज़दूर, छोटे किसान थे, यह सब हिन्दी की सर्वसुलभता, आम बोलचाल की भाषा के कारण हुआ. बैंक का कारोबार बढ़ा, ग्राहक संख्या का व्यापक विस्तार हुआ, जन-जन तक पहुंचने पर बैंक की स्वीकार्यता बढ़ी. हिन्दी के महत्व को, हिन्दी की महत्ता को सभी वित्तीय संस्थानों ने अमीर-गरीब, बड़े-छोटे, सभी ने अनुभव किया, महसूस किया. इन्हीं सब वर्गों

19 अगस्त

1919: अफगानिस्तान ने ब्रिटेन से अपनी स्वतंत्रता की घोषणा की.

1949: भुवनेश्वर ओडिशा की राजधानी बना.

के ग्राहकों ने ही हिन्दी की सुलभता, सरलता को अपना कर, जुड़ कर, आज बैंकिंग व अन्य वित्तीय संस्थानों के क्षेत्र को व्यापक आकाश में दैदीप्यमान कर दिया है. हमें सिर्फ हिन्दी में ही कार्य द्वारा सन्तोष नहीं करना है, बल्कि लोगों के दिल तक घर करना है. ज्यादा से ज्यादा लोगों तक पहुंचना है, हमारी पहुँच का आधार व्यापक, विस्तृत और विशाल होना चाहिए. इसके लिये हमें अपने इरादों को मजबूत करना होगा, दृष्टि को गहराई देनी होगी. दृढ़ निश्चय, कर्मठता, निष्ठा का फल फलीभूत होगा. आज वित्तीय क्षेत्र में प्रतिस्पर्धा विस्तृत, विशाल व असीमित है. हर दिन एक नई तकनीक को जन्म देता है. ग्राहक की अपेक्षा व महत्वाकांक्षा बढ़ती ही जा रही है. यह ग्राहक अधिकतर हिन्दीभाषी हैं. अंग्रेजी के वर्चस्व के बावजूद भी हिन्दी का भविष्य उज्जवल है. राष्ट्रीयता की भावना, राष्ट्रभाषा के प्रति अगाध प्रेम इन संभावनाओं को कभी मिटा नहीं सकता. इससे एक नया आयाम, नया आकार मिलेगा. हम सब मिल कर इसे एक नया जोश प्रदान करेंगे. जो बातें, जो चीजें कभी परी लोक की कल्पनाएं लगती थीं, आज मूर्त व साकार रूप ले रहीं है. यह सच है कि नित नए बदलाव के युग में हिन्दी के वर्चस्व की संभावनाएं अनंत हैं. इनका कभी अंत नहीं होगा. नित नई संभावनाएं जन्म लेंगी और लेती ही रहेंगी. याद रखिए कि सुलभ, आसान, सरल तकनीक से परिपूर्ण व्यवस्था होगी, तो यह महत्व अनवरत रूप से स्वमेव ही बढ़ता जाएगा, और यही तो हमारी अर्थव्यवस्था को नई ऊंचाइयों के पार ले जाएगा. नित नई आशाओं को मूर्त रूप देने में हिन्दी की महती भूमिका है. यही भूमिका ही नये रंग व नये आयाम में प्रस्तुत होगी. इरादा मजबूत हो तो हर चुनौती का पूर्ण समाधान होगा. इरादों को कभी बांधा नहीं जा सकता-

"बांधे जाते इंसान कभी,
तूफान न बांधे जाते हैं.
काया जरूर बांधी जाती,
बांधे न इरादे जाते हैं."

बैंकिंग का बदलता स्वरूप-प्रशिक्षण और हिन्दी:

आर्थिक जगत के भूमंडलीय परिवेश में पिछले दो दशक से व्यापक परिवर्तन हो रहा है जिसमें से पिछले दशक में आर्थिक जगत में नित नए परिवर्तनों की आँधी सी आ गई है. किसी भी समाज या राष्ट्र के आर्थिक जगत की धुरी उस देश की बैंकिंग व्यवस्था होती है. सामाजिक परिवर्तनों के साथ-साथ आवश्यकताएँ, आकांक्षाएँ और अभिलाषाएँ भी परिवर्तित होती हैं जिससे नव चेतना, नव उमंग का प्रादुर्भाव होता है. इन सबके परिणामस्वरूप बैंकिंग को भी तदनुसार परिवर्तन करना पड़ता है. भूमंडलीकरण के साथ-साथ देशगत परिस्थितियों ने भी बाजार के स्वरूप में लगातार परिवर्तन करना आरंभ किया. इस परिवर्तन से जनसामान्य के जीवन में भी बदलाव आना शुरू हुआ जिसके परिणामस्वरूप उनके आर्थिक जीवन में भी प्रगति की नई किरणें आनी शुरू हुई और फिर आरंभ हुआ नवधनाढ्यए वर्ग जिसने उपभोक्तावाद संस्कृति को बढ़ाना शुरू किया. हमारे देश की उदार आर्थिक नीतियों से विश्व बाजार देश के बाजारों में दिखना आरंभ हुआ जिससे बाजार में नए उत्पादों के आगमन के साथ जनसामान्य में एक आकर्षण पैदा होने लगा. देश की आर्थिक स्थिति के सुधार होने की प्रक्रिया से जीवन शैली में वैभव की झलक मिलने लगी तथा बेहतर सुख और सुविधाओं की मांग बढ़ने लगी. इस प्रकार की आर्थिक प्रगति, सामाजिक परिवर्तन आदि ने जनसामान्य के मन में सपने सजाने शुरू किए तथा हैसियत से बढ़कर जीने की ललक ने व्यक्ति को बैंकों की ओर मुड़ने पर विवश किया. बैंकों ने इस स्थिति का भरपूर लाभ उठाया और नई-नई योजनाओं के साथ बेहतर सेवा प्रदान कर ग्राहक आधार बनाने लगा.

बैंकिंग के इस बदलते स्वरूप को एक प्रतियोगितापूर्ण तेज गति देने में विदेशी बैंकों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया. विदेशी बैंकों की ग्राहक सेवा एक गति और आकर्षण लिए हुए थी. विदेशी बैंकों के परिसरों ने भी राष्ट्रीयकृत बैंकों के परिसर परिकल्पना को एक नई उर्जा प्रदान की. बैंकों के सामने एक तरफ शहरी तथा

20 अगस्त

1828: राजा राम मोहन रॉय के ब्रह्म समाज का पहला सत्र कलकत्ता (अब कोलकाता) में आयोजित.

2018: भारत की विनेश फोगाट ने जकार्ता एशियाई खेलों की महिला कुश्ती प्रतियोगिता के 50 किलोग्राम वर्ग में स्वर्ण पदक जीता. यह उपलब्धि हासिल करने वाली वह देश की पहली महिला पहलवान बनीं.

महानगरीय जनता की आवश्यकताएँ थीं तो दूसरी ओर ग्रामीण जनता की जरूरतों को पूरा करने का दायित्व भी था. इन दायित्वों के अंतर्गत राष्ट्रीयकृत बैंकों ने अपने बड़े आधार और विस्तृत ग्राहक अपेक्षाओं को दृष्टिगत रखते हुए स्वंय में इतना व्यापक परिवर्तन लाना आरंभ किया कि बैंक के स्टाफ तक हतप्रभ रह गए. बैंकों ने अपनी कार्यशैली में परिवर्तन लाया जिससे सूचना और प्रौद्योगिकी पर निर्भरता लगातार बढ़ती गई. बैंको की योजनाओं को नए नाम उत्पाद से जाना जाने लगा. बैंक ग्राहकों के पास जाने लगा तथा उनके घर तक अपनी सेवाएँ पहुँचाने लगा. प्रौद्योगिकी ने बैंकिंग के लगभग सभी कार्यकलापों को अपने अंदर समेट लिया जिससे कार्यनिष्पादन की गति में उल्लेखनीय वृद्धि हुई. परिवर्तनों को बैंकिंग के सभी स्तरों पर देखा जाने लगा तो इन परिवर्तनों में बैंकों के बीच बेहतर होने की होड़ सी लग गई. ग्राहक शहेनशाह बन गया. इस प्रकार बैंकिग के नए रूप में आकर्षक सेवाएँ, बेहतर शाखा परिसर, रोमांचकारी ग्राहक सेवाओं ने बैंकिंग सेवा की विश्वसनीयता में वृद्धि की तथा 24 घंटे बैंकिंग को साकार किया.

एक अत्यधिक तेज गति के साथ प्रगति करती हुई बैंकिंग दुनिया को बहुत जल्दी समझ में आने लगा कि ग्राहकों के लिए सारी व्यवस्थाएँ और सुविधाएँ एकत्र कर लेने के बावजूद भी ग्राहक के बौद्धिक और भावनात्मक रूप को भी समझना आवश्यक है. इस जरूरत को पूर्ण करने के लिए बैंक को विज्ञापन तथा ग्राहक संपर्क का सहारा लेना पड़ा तो यहाँ पर भाषा का महत्व प्रमुखता से उभरकर आया. बैंकों की आपसी होड़ में उनके उत्पाद, उनकी ब्याज दरें आदि सभी लगभग एकसमान हो गई तब इस स्थिति में स्टाफ की कुशलता में निखार लाने के लिए गहन प्रशिक्षण की आवश्यकता का भी अनुभव किया जाने लगा.

बैंकों के प्रशिक्षण महाविद्यालयों पर एक नया दायित्व आने लगा तथा बेहतर और प्रभावशाली सम्प्रेषण के लिए अधिकांश महाविद्यालयों में प्रशिक्षण मिली-जुली भाषा हिन्दी और अंग्रेजी में दिया जाना आरंभ किया गया. इस प्रकार के प्रशिक्षण प्रदान करने से पहली बार बैंकिंग प्रशिक्षण में राजभाषा की उपयोगिता का सफल परीक्षण हो सका तथा साथ ही साथ प्रशिक्षणार्थियों की उत्साहवर्धक प्रतिक्रिया ने इस दिशा में आगे बढ़ने का प्रोत्साहन दिया. महाविद्यालयों द्वारा केवल हिन्दी में भी प्रशिक्षण दिया जाना आरंभ किया गया. केवल हिन्दी में दिए गए प्रशिक्षण को प्रशिक्षणार्थियों ने एक प्रयोग के रूप में सराहा किंतु इसमें कुछ कठिनाईयों का भी अनुभव किया गया. इस प्रकार प्रशिक्षण में हिन्दी ने अपने महत्व और उपयोगिता को सफलतापूर्वक स्थापित किया तथा संकाय-सदस्यों में भी हिन्दी प्रशिक्षण के प्रति आत्मविश्वास पैदा किया. बैंकिंग और हिन्दी के आपसी ताल-मेल में एक स्वाभाविक लयबद्धता भी स्पष्ट हुई. राजभाषा हिन्दी के सरलीकरण, हिन्दी में तैयार किए गए हैंडआउट, बैंकिंग के विभिन्न विषयों पर हिन्दी में लिखी पुस्तकों की माँग बढ़ने लगी.

बैंकिंग के विभिन्न विषयों पर अंग्रेजी में जितनी पुस्तकें उपलब्ध हैं उसकी तुलना में हिन्दी में लिखी पुस्तकें काफी कम है. इस दिशा में भारतीय रिज़र्व बैंक तथा भारतीय बैंक संघ द्वारा उठाए गए कदम उल्लेखनीय है. हिन्दी में बैंकिंग की नई विधाओं पर पुस्तकें आनी शुरू हो गई हैं जो अनुदित नहीं हैं बल्कि मूल रूप से हिन्दी में लिखी गई हैं. हिन्दी की इन पुस्तकों द्वारा यह तथ्य स्पष्टतया उभरा है कि बैंकिंग के गंभीरतर विषयों को हिन्दी में अभिव्यक्त किया जा सकता है. इससे यह भी स्पष्ट होता है कि साहित्य, रंगमंच, फिल्मों तथा बोलचाल में अपनी उपयोगिता और धाक जमानेवाली हिन्दी के लिए बैंकिंग प्रशिक्षण के लिए साहित्य सरल, सहज और सर्वमान्य भाषा में दे पाना हिन्दी भाषा की विशिष्टता का द्योतक है. यदि बैंककर्मियों की हिन्दी भाषा के प्रति रूझान का विश्लेषण किया जाए तो अभी भी वह लिखित रूप की तुलना में बोलचाल के रूप में ज्यादा प्रयोग में लाई जाती है. बैंकिंग प्रशिक्षण में उपयोग में लाई जानेवाली मिलीजुली भाषा सर्वाधिक लोकप्रिय है जिसमें यह स्वतंत्रता रहती है कि जब चाहें तब हिन्दी और अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग करें. भारतीय रिज़र्व बैंक मिली-जुली भाषा के स्थान पर हिन्दी भाषा के प्रयोग की सिफारिश करता है तथा रिपोर्ट में भी मिली-जुली भाषा विषयक कोई कॉलम नहीं है. यह संकाय-सदस्यों

21 अगस्त

2005: बांग्लादेश और भारत की सीमा सुरक्षा बल के जवानों के बीच संघर्ष विराम का समझौता सम्पन्न.

2008: मून मिशन पर भारत ने नासा से हाथ मिलाया.

22 अगस्त

1921: राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने विदेशी वस्त्रों की होली जलाई.

के लिए एक चुनौतीपूर्ण कार्य है क्योंकि यदि अखिल भारतीय स्तर का कार्यक्रम है तो उसमें केवल हिन्दी में चर्चा करने पर सम्प्रेषण की समस्या हो सकती है. हिन्दी में सहजतापूर्वक कार्य करने वाले ही हिन्दी माध्यम से प्रशिक्षण का लाभ ले सकते हैं. हिन्दी में हैंडआउट तैयार करना प्रशिक्षण में हिन्दी की दूसरी चुनौती है. अंग्रेजी के हैंडआउटों का अनुवाद किया जाना इस समस्या का एक अल्पकालिक व आपातकालीन उपाय है. जब तक संबंधित विषय के संकाय द्वारा हिन्दी में मूल रूप से हैंडआउट तैयार नहीं किया जाता है तब तक प्रशिक्षण में हिन्दी अपनी जड़ें गहरी नहीं जमा सकती हैं. अनुदित हैंडआउट की अपनी सीमाएँ होती हैं जिसमें विषय की सही अभिव्यक्ति, भाषा की सहजता आदि की समस्याएँ उभर सकती हैं. प्रशिक्षण महाविद्यालयों के लिए यह आवश्यक है कि सर्वप्रथम वे अपने सभी हैंडआउटों का अनुवाद कर लें जिससे कि मूल रूप में हैंडआउट तैयार करने की एक रूपरेखा संकाय-सदस्यों को मिल सके. इस दिशा में बैंकिंग प्रशिक्षण महाविद्यालयों को एक सार्थक पहल करनी चाहिए. इस दिशा में प्रगति कर चुके महाविद्यालय हिन्दी का प्रभावशाली उपयोग सफलतापूर्वक कर रहे हैं. प्रशिक्षणार्थियों की ओर से भी हिन्दी के हैंडआउटों की मांग बढ़ रही है किंतु मूल रूप से हिन्दी के अधिकांश हैंडआउट न बन पाने के कारण अंग्रेजी के हैंडआउटों पर निर्भरता अभी भी ज्यादा है. हैंडआउट को अधिकाधिक हिन्दी में तैयार किया जाए इसके लिए बैंकों को अपनी योजनाएँ तैयार करनी चाहिए. इस विषय पर संकाय-सदस्यों की संगोष्ठी एक कारगर उपाय हो सकता है. हैंडआउटों को हार्ड प्रतियों के साथ-साथ सॉफ्ट प्रति जैसे सी.डी. के रूप में भी महाविद्यालयों ने देना आरम्भ किया है जिसमें केवल सी.डी. की मांग ही होती है. यदि हिन्दी हैंडआउटों की भी सी.डी. तैयार करा ली जाए तो प्रशिक्षण में हिन्दी की उपयोगिता को गति मिलेगी यद्यपि इस दिशा में अभी पहल करना शेष है.

प्रशिक्षण में हिन्दी का प्रयोग बढ़ाने में हिन्दी में बनाए गए पॉवर प्वांइट का भी सराहनीय योगदान है. विषय पर चर्चा करने वाले संकाय को हिन्दी के पॉवर प्वांइट से जहाँ एक तरफ हिन्दी के शब्द सरलता से मिलते हैं वहीं दूसरी तरफ प्रशिक्षणार्थियों को भी विषय को और गहराई से समझने में सुविधा होती है. बैंकिंग के बदलते स्वरूप में विपणन एक प्रमुख नायक के रूप में उभरा है. प्रत्येक बैंक एक निर्धारित राशि विज्ञापन पर खर्च कर रहा है जिसमें राज्य विशेष की भाषाओं के साथ प्रमुखतया हिन्दी और अंग्रेजी को स्थान दिया जा रहा है. बैंककर्मियों को अब शाखा से बाहर निकलकर अपने उत्पादों को बेचने के लिए नए ग्राहकों को तलाशना पड़ता है जिसमें भाषा की प्रमुख भूमिका रहती है. प्रशिक्षण महाविद्यालय भी भविष्य की भाषा आवश्यकता को समझकर अपनी नई-नई भूमिकाएँ निर्धारित कर रहे हैं. हिन्दी अब तक शाखा के फाइलों के बीच घूमती रहती थी जिसमें प्रशासन, बैंकिंग आदि की गंभीर और शुष्क शब्दावलियाँ रहती थीं किंतु बैंकिंग के बदलते परिवेश ने हिन्दी को फाइलों से बाहर खींचकर जनता के बीच खड़ा कर दिया है. ऐसी स्थिति में हिन्दी को अपने कार्यालयीन शैली को बरकरार रखते हुए भाषा में भावुकता का भी मिश्रण करना है जिसे कि लोग आकर्षित होकर बैंक के उत्पाद को खरीद सकें.

बैंकिंग के बदलते स्वरूप में प्रशिक्षण में हिन्दी के उत्तरोत्तर प्रयोग को बढ़ाने के लिए यह आवश्यक है कि भाषा प्रयोगशाला की स्थापना की जाए. विभिन्न भाषा-भाषियों को राजभाषा हिन्दी सीखने में क्या-क्या कठिनाईयाँ होती हैं इन मुश्किलों को हल करने के उपाय किए जाए. हिन्दी में तैयार प्रशिक्षण सामग्री का समय-समय पर मूल्यांकन किया जाना चाहिए तथा उसमें आवश्यक सुधार किया जाना चाहिए. हिन्दी में मूल रूप से हैंडआउट तैयार करनेवाले संकाय को प्रोत्साहित करना चाहिए जिससे कि वे मूल रूप से हिन्दी में अपने विषय की पुस्तक लिख सकें. प्रति तिमाही में आंचलिक स्तर और अखिल भारतीय स्तर पर एक-एक कार्यक्रम प्रत्येक प्रशिक्षण महाविद्यालय द्वारा हिंदी में आयोजित किए जाने चाहिए तथा छमाही में इनकी समीक्षा की जानी चाहिए. इस प्रकार प्रशिक्षण में हिन्दी की आकर्षक, आसान और आत्मसक्षम छवि निर्मित हो सकती है.

23 अगस्त

1947: वल्लभ भाई पटेल को देश का उप प्रधानमंत्री नियुक्त किया गया.

1995: देश का पहला सेलुलर फोन कलकत्ता में व्यावसायिक तौर पर पेश किया गया.

24 अगस्त

1690 : कलकत्ता शहर की स्थापना हुई.

स्वच्छता एक जीवन प्रणाली

-अनिल कुमार चौधरी
सहायक प्रबंधक
क्षेत्रीय कार्यालय बाकुड़ा

स्वच्छ शब्द का अर्थ है अत्यंत साफ, विशुद्ध, उज्ज्वल व स्वस्थ तथा इसमें ता प्रत्यय जोडने पर भाववाचक स्वच्छता का आशय सब प्रकार से साफ-सफाई, निर्मलता एवं पवित्रता से है. स्वच्छता का अर्थ हम केवल बाहरी स्वच्छता से न ले, अंतर मन की स्वच्छता भी आवश्यक है. भारतीय दर्शन में शरीर, आत्मा, मन, बुद्धि व पर्यावरण को शुद्ध रखना मानव जीवन का महत्वपूर्ण कार्य बताया गया है. पर्यावरण को स्वच्छ रखने से हम विभिन्न प्रकार के बीमारियों से बचे रहते हैं और हमारा वातावरण भी स्वच्छ रहता है.

हमारे जीवन में स्वच्छता का महत्व जीवन में स्वच्छता के साथ रहना मतलब स्वस्थ रहना है. स्वच्छता से रहने की आदत हमारे जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाती है. स्वच्छता हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है स्वच्छ रहने की कुछ आदतें जैसे रोज नहाना, साफ-सुथरे कपड़े पहनना, रोज दांत साफ करना, नाखूनों को समय-समय पर काटते रहना आदि को दैनिक क्रियाओं में शामिल कर लेना चाहिए. एक स्वस्थ इंसान शांति के साथ जीवन को जीता है. अत: जीवन में स्वच्छता के महत्व को समझते हुए हमें खुद भी स्वच्छ रहने की आदत डालनी चाहिए और घर के बच्चों को भी यही आदतें सिखानी चाहिए.

स्वच्छता की आवश्यकता : साफ-सुथरा रहना मनुष्य का प्राकृतिक गुण है. वह अपने और आस-पास के क्षेत्र को साफ रखना चाहता है. वह अपने कार्यस्थल पर गंदगी नहीं फैलने देता. अगर वह सफाई नहीं रखेगा तो साँप, बिच्छु, मक्खी, मच्छर तथा अन्य हानिकारक कीड़े-मकोड़े आपके घर में प्रवेश करेंगें जिससे अनेक प्रकार के रोग और विषैले कीटाणु घर में चारों तरफ फैल जायेंगे.

बहुत से लोगों का यह कहना होता है कि यह काम सरकारी एजंसियों का होता है इसलिए खुद कुछ न करके सारी जिम्मेदारी सरकार पर छोड़ देते हैं जिसकी वजह से चारों तरफ गंदगी फैल जाती हैं और अनेक प्रकार के रोग और बीमारियाँ पैदा हो जाती हैं. जब तक हम स्वच्छता के महत्व को नहीं समझेंगे तब तक हम अपने आप को सभ्य और सुसंस्कृत नहीं कह सकते हैं.

आज के समय में अभी भी लोगों का खुले में शौच करने जैसी बुरी आदतों की वजह से बहुत सी जानलेवा बीमारियां उत्पन्न हो रही हैं. अच्छे स्वास्थ्य के लिए शरीर की सफाई बहुत आवश्यक होती है. ऐसा माना जाता है कि गंदगी और बीमारी हमेशा एक साथ शरीर में जाते हैं. शरीर को स्वस्थ और बीमारियों से रहित रखने के लिए स्वच्छता बहुत ही आवश्यक होती है.

अस्वच्छता से हानियाँ : जब लोग ऐसे स्थानों पर रहते हैं जहाँ पर चारों तरफ कूड़ा-कचरा फैला होता है और नालियों में गंदा जल और सडती हुई वस्तुएं पड़ी रहती हैं जिसकी वजह से उस क्षेत्र में बहुत बदबू उत्पन्न हो जाती है, वहां से गुजरना भी बहुत मुश्किल हो जाता है. ऐसे स्थानों पर लोग अनेक प्रकार की संक्रामक बीमारियों से ग्रस्त हो जाते हैं. वहां की गंदगी से जल, थल, वायु आदि पर बहुत ही विपरीत प्रभाव पड़ता है. अगर हम बाजार के मैले और अधिक कीटाणुयुक्त भोजन को खाते हैं तो हमारे शरीर में बहुत से रोग उत्पन्न हो जाते हैं. आधुनिक सभ्यता और हानिकारक उद्योगों के फैलाव की वजह से पूरी दुनिया में प्रदूषण का संकट खड़ा हो

25 अगस्त

2006 : अंतर्राष्ट्रीय खगोलीय संघ ने प्लूटो (यम) का ग्रह का दर्जा समाप्त किया.

26 अगस्त

1982 : नासा ने टेलीसेट-एफ का प्रक्षेपण किया.

रहा है. भारतीय कहीं भी कूड़ा-कचरा फेंकने की आदत से मजबूर होते हैं और चारों ओर साफ-सफाई के लिए गंभीर नहीं होते है. अगर स्वच्छता नहीं रखी जाती है तो मनुष्य को बहुत जल्दी अनेक प्रकार के रोग हो जाते हैं. अपने चारो तरफ स्वच्छ वातावरण बनाना हमारा ही कर्तव्य है, हम इससे पीछे नहीं हट सकते और अपने साथ-साथ अपने आस पास के लोगों को भी स्वच्छता के प्रति जागरूक करना है क्योंकि अगर हम सब मिलकर कार्य करगें तभी अस्वच्छता जैसी गंभीर समस्या से लड़ सकते है.

स्वच्छता के लिए भारत सरकारने भी स्वच्छ भारत अभियान चलाया है. यह एक राष्ट्रव्यापी सफाई अभियान है, जिसकी शुरूआत प्रधानमंत्री द्वारा महात्मा गांधी के 145 वें जन्म दीन के अवसर पर 2 अक्टूबर 2014 को की गई थी. यह अभियान सफाई के उद्देश्य को पूरा करने के लिए शुरू किया गया है. इस अभियान में शौचालय का निर्माण, ग्रामीण क्षेत्रों में स्वच्छता कार्यक्रम को बढ़ावा देना, गलियों व सड़को की सफाई, देश के बुनियादि ढ़ाचे को बदलना आदि शामिल है. प्रधानमंत्री ने लोगों से अपिल की है कि वो स्वच्छता के इस मिशन से जुड़े और अन्य लोगों को भी इससे जुड़ने के लिए प्रेरित करें ताकि हमारा देश दुनिया का सबसे अच्छा और स्वच्छ देश बन सके.

स्वच्छता केवल घर तक ही सीमित नहीं रखनी है बैंक, सरकारी दफ्तर, स्कूल, कॉलेज, अस्पताल आदि सभी जगहों पर सफाई होनी चाहिए तभी स्वच्छता के लक्ष्य को पूरा किया जा सकता है. देश का सबसे पुराना बैंक सेन्ट्रल बैंक ऑफ इण्डिया ने भी स्वच्छता के प्रति अपने दायित्व का निर्वहन किया है. सेन्ट्रल बैंक ने स्वच्छता को लेकर बड़े पैमाने पर अभियान चलाया और सेन्ट्रल ऑफिस, आचंलिक कार्यालय से लेकर क्षेत्रीय कार्यालय तक इसमें अपनी सहभागिता दिखाई और अपने-अपने परिसर को सफाई कर उनकी फोटो सोशल मीडिया साईट पर अपलोड की गई ताकि सभी इसे देखे और स्वच्छता के प्रति जागरूक बने. सफाई के लिए हम सबकों मिलकर प्रयास करना होगा तभी हम इसके लक्ष्य को प्राप्त कर सकते है. स्वच्छता के मिशन के तहत स्वच्छ सर्वेक्षण पुरस्कार 2022 में इंदौर को लगातार छठी बार भारत का सर्वाधिक स्वच्छ शहर घोषित किया गया, जबकि सूरत एवं नवी मुंबई ने अगले दो स्थानों पर इसका अनुसरण किया.

निष्कर्षत: हम कह सकते हैं कि भारत को हरा-भरा बनाने कि लिए स्वच्छता का अभियान एक स्वागत योग्य कदम है. जैसे कि हम सभी ने कहावत में सुना है स्वच्छता भगवान की ओर अगला कदम है. हम विश्वास के साथ कह सकते हैं कि अगर भारत की जनता द्वारा प्रभावी रूप से इसका अनुसरण किया गया तो आने वाले चंद वर्षो में पूरा देश भगवान का निवास स्थल बन जाएगा.

कार्यालय परिसर में सभी प्रकार की सूचनाएं नियमानुसार द्विभाषी / त्रिभाषी प्रदर्शित की जानी चाहिए

27 अगस्त

1604: अमृतसर के स्वर्ण मंदिर में आदि ग्रंथ साहिब की स्थापना.

1999: सोनाली बैनर्जी भारत की प्रथम महिला मरीन इंजनियर बनीं.

स्वच्छता का महत्व

- नेहा पटवा
सहायक प्रबंधक
क्षेत्रीय कार्यालय,जलपाईगुड़ी

स्वच्छता का शाब्दिक अर्थ, साफ-सुथरा, सफाई आदि होता है. किसी भी इंसान के लिए स्वच्छता बहुत ही जरूरी है. फिर चाहे वो स्वच्छता सामाजिक रूप से संबंधित हो या मानसिक रूप से संबंधित हो अथवा व्यक्तिगत रूप से संबंधित हो. स्वच्छता का तात्पर्य स्वच्छ होने की स्थिति से है. यह ऐसी चीज है जिसे जबरदस्ती नहीं बल्कि प्रोत्साहित किया जाना चाहिए. स्वच्छता एक अच्छी आदत है जो किसी के जीवन की गुणवत्ता को बढ़ा सकती है. सभी प्रकार की स्वच्छता का भार समान होता है.

स्वच्छता ही अच्छे स्वास्थ्य की कुंजी है.

यह केवल एक व्यक्ति का कार्य नहीं है इसके लिए निरंतर समर्थन और सभी व्यक्तियों के बीच उचित समझदारी की आवश्यकता है. स्वच्छ भारत की संकल्पना न सिर्फ भारत सरकार का एक सार्थक प्रयास है बल्कि सभी भारतीयों की यह एक नैतिक जिम्मेदारी है. हमें इसके महत्व और फायदों को समझना चाहिए की स्वच्छता ही सेवा है.

देश की सफाई एकमात्र सफाईकर्मियों की जिम्मेदारी नहीं है, क्या इसमें नागरिकों की कोई भूमिका नहीं हैं? हमें इस मानसिकता को बदलना होगा.

सामाजिक स्वच्छता हमारे सामाजिक विकास में हमारी मदद करती है, तो दूसरी तरफ मानसिक स्वच्छता हमें एक अच्छा इंसान बनाती है. हमारे सोच को एक सकारात्मक दिशा प्रदान करती है, और व्यक्तिगत स्वच्छता हमें हमेशा साफ सुथरा रहने का संकेत देती है ताकि आने वाली अस्वच्छताओं, बीमारियों, दूषित वातावरण से बचा जा सके.

स्वच्छता देशभक्ति के समान है. ईश्वर का आशीर्वाद पाने के लिए मन की पवित्रता के साथ-साथ शरीर की स्वच्छ्ता भी अनिवार्य है. एक स्वच्छ शरीर अस्वच्छ शहर में वास नहीं कर सकता .....

स्वच्छता का महत्व : स्वच्छता किसी प्रकार का कोर्स नहीं है जिसे की औपचारिक रूप से विद्यालय में जाकर सीखा जा सके.बल्कि यह तो हमारे जीवन का एक ऐसा हिस्सा है जिसे अपनाने से हम कभी बीमार नहीं होते. यह जरूरी नहीं है की हमें स्वच्छता को अपनाने के लिए काफी मेहनत करनी होगी.बहुत बड़े-बड़े काम करने होंगे बल्कि इसे तो हम अपने आप में अपने घर में या फिर अपने आस-पास भी कर सकते हैं.

परिवेश की बात करें तो धूल से छुटकारा पाने के लिए हमें अपने घर की रोजाना सफाई करनी चाहिए. अपने शहर की सड़कों को साफ रखने के लिए कभी भी गंदगी न करें. उदाहरण के लिए, जब आप चिप्स का एक पैकेट समाप्त करते हैं, तो उसे कार की खिड़की से बाहर न फेंके. इसे अपने पास रखें और कूड़ेदान में फेंक दें.

प्रदूषण को इसी तरह से जो बढ़ाओगे,
आने वाली पीढ़ियों को कैसे मूहं दिखाओगे.....

साथ ही प्लास्टिक बैग के इस्तेमाल से बचें. रीसाइक्लिंग और पुन: उपयोग को प्रोत्साहित करें. पर्यावरण को स्वस्थ और स्वच्छ बनाने के लिए अधिक से अधिक पेड़ लगाने का प्रयास करें.अगर आज हम अपने पर्यावरण को प्रदूषित करेंगे तो भविष्य में इसकी बहुत बड़ी कीमत हमें चुकानी पड़ेगी. जैसे की अगर आज हम बिना सोचे समझे हमारे घर का सारा कचरा और औद्योगिक कचरा नदियों में ही डालते रहेंगे तो एक दिन सारी नदियां प्रदूषित हो जाएंगी और

28 अगस्त

1972: साधारण बीमा कारोबार राष्ट्रीयकरण बिल पारित

1986 : भाग्यश्री साठे शतरंज में ग्रैंडमास्टर बनने वाली भारत की पहली महिला बनी

29 अगस्त

1831 : ब्रिटेन के माइकल फैराडे ने पहली बार ट्रांसफार्मर का प्रर्दशन किया

1905 : भारतीय हाकी के इतिहास में कई सुनहरे पन्ने जोड़ने वाले ध्यानचंद का जन्म

ईर्ष्या स्वयं के लिए हानिकारक होती है.

फिर खेतों के लिए पानी तो मिलेगा ही नहीं, साथ ही हम इंसानों को भी पानी मिलना मुश्किल हो जायेगा.

स्वच्छ वायु के लिए हमें कुछ कर दिखाना होगा,
इन पेड़ों, बाग-बगीचों को कटने से हमें बचाना होगा.

अंतर्राष्ट्रीय युवा दिवस दुनिया भर में 12 अगस्त को मनाया जाता है. युवा किसी भी देश के विकास का मजबूत आधार स्तंभ होते हैं. राज्य सरकार युवाओं के भविष्य के निर्माण के प्रति समर्पित है. युवाओं को स्वच्छता अभियान को लेकर बड़ा परिवर्तन लाने की आवश्यकता है. स्वच्छ भारत अभियान को सफल बनाने के लिये देश-प्रदेश का युवा निम्न तरह की गतिविधियों के माध्यम से अपना महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है :

- पर्यावरण को बचाने के लिये पेड़-पौधे लगाएं और वृक्षारोपण करें.
- शौचालय का प्रयोग करने के लिए लोगों में जागरूकता फैलायें.
- अपने आस-पास रखे कूड़ेदान का प्रयोग करने के लिये लोगों को बतायें.
- कॉर्टून और चित्रों के जरिये लोगों को स्वच्छता के सही मायने समझायें.
- स्वच्छ पेयजल आपूर्ति के लिये लोगों को जागरूक बनाने का प्रयास करें.
- गंदगी नहीं फैलाएं और ऐसा करने वालों को विनम्रता पूर्वक रोकने का प्रयास करें.
- सोशल मीडिया के माध्यम से लोगों को स्वच्छता बनाये रखने संबंधी अभियान चलाएं.
- पान, गुटका और तम्बाकू जैसे उत्पादों का सेवन करने वालों को स्वच्छता के प्रति प्रेरित करें.
- सरकारी संस्थानों, स्कूलों और घरों में स्वच्छता बनाये रखने के लिए लोगों को शिक्षित बनाएं.
- स्वच्छता के लिए नालियों की गंदगी, नदियों के आस-पास जमे कूड़े-कर्कट, सड़कों की सफाई करें.
- संगीत, नाटक और स्वच्छता पखवाड़ा अभियान के जरिये लोगों को स्वच्छता के प्रति जिम्मेदार बनाएं.

4 आर का करें इस्तेमाल

आर (रियूज)- किसी भी चीज को बेकार समझकर न फेंकें. हर चीज़ का दोबारा प्रयोग हो सकता है. दिमाग लगाने की जरूरत है.

आर (रिड्यूस)- बेहतर होगा कि एक बार प्रयोग में लाए प्लास्टिक का इस्तेमाल धीरे-धीरे बंद कर दें और इसके विकल्पों जैसे जूट या कपड़े का थैला, कागज के लिफाफे का इस्तेमाल करें.

आर (रीफ्यूज)- जिसे रीसाइकिल नहीं किया जा सकता, उसके इस्तेमाल से बचें. साथ ही ऐसी रीसाइकिल होने लायक प्लास्टिक को भी ना कहें जिसकी जरूरत न हो.

आर (रीसाइकिल)- ऐसी चीज़ें जिन्हें रीसाइकिल किया जा सकता है, उन्हें एक जगह इकट्ठा कर कबाड़ी वाले को बचे दें. इन चीज़ों में लोहा, एल्युमिनियम, प्लास्टिक, कांच शामिल है

निष्कर्षत: हम यह कह सकते हैं कि स्वच्छता हमारे जीवन का अभिन्न हिस्सा है और स्वच्छता संबंधी आदतों से हम स्वस्थ जीवन जी सकते हैं. और जब हमारा स्वास्थ्य ठीक रहेगा तो हम अपने परिवेश कि भी सफाई आसानी से कर पाएंगे. जब हमारा पूरा परिवेश साफ रहेगा तो नतीजन देश भी साफ रहेगा और इस प्रकार एक छोटी सी कोशिश मात्र से हम पूरे देश को साफ कर सकते हैं.

हमें बच्चों में छोटी आयु से स्वच्छता संबंधी आदतें डालनी चाहिए, क्यों कि वे देश के भविष्य हैं और एक अच्छी आदत देश में बदलाव ला सकती है. जिस देश के बच्चे सामाजिक, वैचारिक और व्यक्तिगत रूप से स्वच्छ होंगे उस देश को आगे बढ़ने से कोई नहीं रोक सकता. एक जिम्मेदार नागरिक बनें और देश के विकास में अपना योगदान दें.

स्वच्छता अपनाएं और देश को आगे बढ़ाएं.

30 अगस्त

1947: भारतीय संविधान का प्रारूप तैयार करने के लिए डॉ भीमराव आम्बेडकर के नेतृत्व में एक समिति का गठन किया गया

31 अगस्त

1919 : प्रसिद्ध कवयित्री, उपन्यासकार एवं निबंधकार अमृता प्रीतम का जन्म

1968 : भारत के टू-स्टेज राउंडिंग रॉकेट रोहिणी-एमएसवी 1 का सफल प्रक्षेपण

स्वच्छता के प्रयास

- रिंकी साव
सहायक प्रबंधक
क्षेत्रीय कार्यालय : भुबनेश्वर

स्वच्छता का तात्पर्य हमारे पर्यावरण का किसी भी प्रकार के विकार या गंदगी से रहित होना है. स्वच्छ पर्यावरण में ही स्वच्छ मानव समाज समृद्ध एवं स्वावलंबी जीवन यापन कर सकता है. विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार स्वच्छता का तात्पर्य मानव अपशिष्ट के सुरक्षित प्रबंधन हेतु सुविधाओं और सेवाओं के प्रावधान से है.

स्वच्छता भारतीय मानव सभ्यता का एक अनिवार्य अंग एवं शुरू से ही जीवन शैली में शामिल रही है. एक जनश्रुति भी है :

शरीर तुम्हारा मंदिर है, आत्मा को निवास करने के लिए इसे शुद्ध और स्वच्छ रखे.

स्वच्छता एक गंभीर मुद्दा है इसका केवल वर्तमान में ही बोलबाला नहीं है बल्कि हड़प्पा सभ्यता से ही ये एक सामाजिक विषय रहा है. हड़प्पा सभ्यता की जल निकासी प्रणाली प्राचीन इतिहास महत्वपूर्ण प्रणालियों में से एक हैं. यह आधुनिक नगर योजना के अनुरूप थी. हड़प्पा नगरों में घरों, नालियों एवं सड़कों का एक साथ नियोजित रूप से निर्माण कराया गया. सड़कों तथा नालियों को लगभग एक ग्रिड पद्धति में बनाया गया, जो एक दूसरे को समकोण पर काटती थी. प्रत्येक घर में स्नानागार की भी व्यवस्था थी जो यह प्रमाणित करता है कि प्राचीन काल से ही स्वच्छता एक महत्वपूर्ण विषय रह चुका है.

वैदिक काल में भी पूजा-पाठ से पहले स्वच्छता का विशेष रूप से ध्यान दिया जाता था. यह व्यवस्था निरंतर प्राचीन, मध्य से लेकर वर्तमान काल में भी हमारे जीवन शैली में शामिल है.

स्वच्छ पर्यावरण का तात्पर्य स्थलमंडल, जलमंडल एवं वायुमंडल की भी स्वच्छता से है. ये तीनों मंडल भी प्रत्यक्ष रूप से मानव के अस्तित्व से जुड़े हैं और यदि इन तीनों ही मंडल में कहीं भी विकार उत्पन्न हुआ तो उसका प्रभाव मनुष्य के जीवन पर भी पड़ेगा.

स्थलमंडल अर्थात मिट्टी, यदि हमारा आधार ही मजबूत एवं सुरक्षित न होगा तो हमारा विकास कैसे संभव हो पाएगा? वर्तमान समय में मिट्टी प्रदूषण का सबसे खतरनाक तत्व प्लास्टिक है जो मिट्टी की उर्वरक क्षमता के लिए अवरोधक है और आजकल कृषि में अत्यधिक कीटनाशकों का उपयोग करने या ऐसे पदार्थ जिसे मृदा में नहीं होना चाहिए, उसके मिलने पर हो रहा है जिससे मृदा की उपज को तो ख़तरा है ही साथ में जल प्रदूषण को भी आमंत्रित करता है.

जलमंडल विभिन्न जल निकायों से मिलकर बना है जैसे नदियों, समुन्दरों, महासागरों, झीलों, तालाबों एवं भूजल इत्यादि. इन स्त्रोतों के दूषित होने से इन जल निकायों के पादपों और जीवों को प्रभावित करता है और सर्वदा यह प्रभाव न सिर्फ इन जीवों

01 सितंबर

1947 - भारतीय मानक समय को अपनाया गया.

हिन्दी के कवि और ग़ज़लकार दुष्यंत कुमार का जन्म 1 सितंबर 1933 को हुआ था.

02 सितंबर

1999 : भारतीय तैराक बुला चौधरी इंग्लिश चैनल दो बार पार करने वाली प्रथम एशियाई महिला बनीं.

2007 : अल्बानिया विश्व का पहला रासायनिक हथियार युक्त राष्ट्र बना

धीर पुरुष कार्यसिद्धि में विलंब होने पर भी अपने धैर्य को नहीं छोड़ते - अभिनंद

या पादपो के लिए अपितु संपूर्ण जैविक तंत्र के लिए विनाशकारी होता है.

वायुमंडल के दूषित होना अर्थात हमारे प्राण पर ख़तरा मंडराने जैसा है. वायु प्रदूषण मानवनिर्मित रसायनों, सूक्ष्म पदार्थ या जैविक पदार्थो के वातावरण में प्रादुर्भाव से होता है. जो मानव को या अन्य जीव-जंतुओं का या पर्यावरण को नुकसान पहुंचाता है.

राष्ट्रीय एवं अंतराष्ट्रीय स्तर पर प्रदूषण मुक्त पर्यावरण अर्थात स्वच्छ वातावरण के लिए जो प्रयास किए जा रहे है वे निम्नलिखित है-

पेरिस समझौता :- पेरिस समझौता जो जलवायु परिवर्तन पर एक अंतर्राष्ट्रीय संधि है. 2015 में अपनाया गया यह समझौता जलवायु परिवर्तन शमन, अनुकूलन और वित्त को कवर करता है. जलवायु परिवर्तन पर पेरिस समझौता जलवायु परिवर्तन के विषय पर कानूनी रूप से बाध्यकारी अंतराष्ट्रीय समझौता है. समझौते का प्राथमिक उद्देश्य पूर्व-औद्योगिक समय के सापेक्ष वैश्विक तापमान के स्तर को कम से कम 5 डिग्री सेल्सियस कम करना था. समझौते में कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जन में 20% की कमी, नवीकरणीय ऊर्जा बाजार हिस्सेदारी में 20% की वृद्धि और ऊर्जा दक्षता में 20% की वृद्धि की बात की गयी है जिसके फलस्वरूप यह एक विश्वव्यापी जलवायु समझौता बन गया जो सभी देशों पर लागू होता है.

संयुक्त राष्ट्र महासभा की पहल :- जल की स्वच्छता को ध्यान में रखते हुये 2010 में संयुक्त राष्ट्र महासभा ने सुरक्षित और स्वच्छ पेयजल एवं स्वच्छता तक पहुँच की एक मानव अधिकार के रूप में मान्यता दी और देशों की पानी और स्वच्छता में सुरक्षित, स्वच्छ सुलभ और सस्ता पेयजल उपलब्ध कराने के लिए अंतराष्ट्रीय प्रयासो का आह्वान किया.

विश्व स्वास्थ्य संगठन की पहल :- विश्व स्वास्थ्य संगठन ने भी स्वच्छता के महत्व पर ज़ोर देते हुये कुछ महत्वपूर्ण कदम उठाएं है. लक्ष्य 6.2-2030 तक सभी देशों द्वारा पर्याप्त एवं समान सफाई और स्वच्छता तक पहुँच प्राप्त करना तथा खुले में शौच को समाप्त करना महिलाओं एवं लड़कियों तथा कमजोर वर्ग के लोगों की जरूरतों पर विशेष ध्यान देना.

वैश्विक स्तर पर विश्व पर्यावरण दिवस :- वैश्विक स्तर पर 5 जून को विश्व भर में विश्व पर्यावरण दिवस मनाया जाता है. प्रत्येक वर्ष इस दिवस का उत्सव एक विशिष्ट विषय और नारे के साथ आयोजित किया जाता है जो उस समय की प्रमुख पर्यावरणीय चिंता को संदर्भित करता है. इस वर्ष 2022 की थीम "केवल एक पृथ्वी" है जो पूरे विश्व के पर्यावरण इंगित करता है.

वैश्विक स्तर पर भारत की पहल :- LiFE का विचार भारत द्वारा 2021 में ग्लासगो में 26वें संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन समारोह के दौरान प्रस्तुत किया गया था. यह विचार पर्यावरण के प्रति जागरूक जीवन शैली को बढ़ावा देता है जो 'नासमझी और अपव्यय 'के बजाय 'सचेत और जानबूझकर उपयोग के सिद्धांत पर केंद्रित है.

राष्ट्रीय स्तर पर स्वच्छता के लिए उठाए गए कुछ महत्वपूर्ण कदम:-

स्वच्छ भारत अभियान :- भारत में स्वच्छता के महत्व को समझते हुये प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने स्वच्छ भारत अभियान की शुरुआत 2 अक्तूबर, 2014 को गांधी जी की जयंती के अवसर पर किया. उन्होने राजपथ पर जनसमूहों को संबोधित करते हुये राष्ट्रवादियों से स्वच्छ भारत अभियान में भाग लेने और इसे सफल बनाने को कहा. साफ- सफाई के संदर्भ में यह सबसे बड़ा अभियान है. क्योंकि गांधी जी का सपना था कि हमारा देश भी विदेशों की तरह पूर्ण स्वस्थ और निर्मल दिखाई दे.

03 सितंबर

1971 : कतर स्वतंत्र राष्ट्र बना

2006 : भारतीय मूल के भरत जगदेव ने गुयाना के राष्ट्रपति के रूप में शपथ ली

04 सितंबर

1861 : भारत के स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली मैडम भीखाजी रूस्तम कामा का जन्म

2014 : भारत ने अपने पहले ही प्रयास में सफलता हासिल करते हुए मंगल पर अपना अंतरिक्ष यान भेजा

अपने सपने के संदर्भ में गांधी जी ने कहा था स्वच्छता स्वतंत्रता से भी ज्यादा जरूरी है क्योंकि वह स्वस्थ और शांतिपूर्ण जीवन का एक अनिवार्य अंग है. महात्मा गांधी जी अपने समय देश की गरीबी एवं गंदगी से भली प्रकार अवगत थे इसलिए उन्होंने अथक प्रयास किए किन्तु वे असफल सिद्ध हुये. दुर्भाग्य की बात यह है कि आजादी के 72 वर्षों बाद भी भारत इन दोनों आसमाजिक तत्वों को समाप्त नही कर पाया है. अगर आकड़ों को देखे तो अब भी अधिकांश घरों में शौचालय नही है और अब भी महिलाओं एवं लड़कियों को खुले में शौच जाना पड़ता है. इसलिए भारत सरकार ने बापू जी के सपने को साकार करने के लिए स्वच्छ भारत अभियान का आगाज किया. प्रधानमंत्री के शब्दों में : देश की सफाई एकमात्र सफाई-कर्मियों की जिम्मेदारी नही है, क्या इसमें नागरिकों की कोई भूमिका नहीं है, हमें इस मानसिकता को बदलना होगा.

नमामी गंगे :- भारत की भूमि गंगा नदी से सिंचित है इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुये भारत सरकार ने एग्रो प्रोग्राम की शुरुआत 14 जून 2014 को की. नमामी गंगे के तहत जलवाही स्तर की वृद्धि, कटाव कम करने एवं नदी की पारिस्थितिकी तंत्र की स्थिति में सुधार करने के लिए 30,000 हेक्टर भूमि पर वन लगाए जायेंगे. वनीकरण कार्यक्रम 2016 में शुरू किया गया. व्यापक स्तर पर पानी की गुणवत्ता की निगरानी के लिए 113 रियल टाइम जल गुणवत्ता निगरानी केंद्र स्थापित किए जाएँगे.

स्वच्छता पखवाड़ा :- हाल ही में रेल मंत्रालय ने भारतीय रेलवे में स्वच्छता पखवाड़ा लांच किया है. रेल मंत्रालय ने 16 सितंबर से 30 सितंबर 2022 तक स्वच्छता पखवाड़ा मनाया है. पखवाड़े के दौरान प्लास्टिक कचरा प्रबंधन, बायो-टॉइलेट के उपयोग, सिंगल-यूज प्लास्टिक से बचने के उपाय, स्टेशन एवं पटरियों के साफ सफाई पर विशेष ध्यान था. इसका उद्देश्य भारत सरकार के मंत्रालयों/ विभागों को उनके अधिकार क्षेत्र में शामिल करके स्वच्छता के मुद्दों तथा प्रथाओं पर एक पखवाड़े का विशेष ध्यान देना है.

लगभग 20 लाख जनसंख्या वाला शहर इंदौर भारत के सबसे स्वच्छ शहरों में है जो पिछले 5 सालों में लगातार पहले स्थान पर रहा है.

स्वच्छता के विषय को महत्वपूर्ण मानते हुये राष्ट्रीय एवं अंतराष्ट्रीय स्तर पर तो अनेकों प्रयास किए गए है और हो भी रहे हैं लेकिन जब तक हम इसे अपने व्यक्तिगत जीवन में शामिल नहीं करेगें एवं अपनी मानसिकतता नही बदलेंगे तब तक हम पूरी तरह सफल नहीं हो सकते. कोविड-19 महामारी के समय में हमे स्वच्छता का एक विशिष्ट संदेश मिला.स्वच्छता की दृष्टि से हमारी जीवन शैली कैसी होनी ये हमे सीखने को मिला.

आओ हम ले यह शपथ, न फैलाएंगे गंदगी किसी को न देगे फैलाने.

नियम 6. हिन्दी और अंग्रेजी दोनों का प्रयोग-

अधिनियम की धारा 3 की उपधारा (3) में निर्दिष्ट सभी दस्तावेजों के लिए हिन्दी और अंग्रेजी दोनों का प्रयोग किया जाएगा और ऐसे दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करने वाले व्यक्तियों का यह उत्तरदायित्व होगा कि वे यह सुनिश्चित कर लें कि ऐसी दस्तावेजें हिन्दी और अंग्रेजी दोनों ही में तैयार की जाती हैं, निष्पादित की जाती हैं और जारी की जाती हैं.

05 सितंबर

1888: सर्वपल्ली राधाकृष्णन का जन्म. 1962 में इस दिन को भारत में शिक्षक दिवस के तौर पर मनाने का ऐलान किया गया

2011: भारतीय बैंक संघ और भारतीय राष्ट्रीय भुगतान निगम द्वारा तैयार एटीएम के जरिए चेक निर्गम (क्लियर) करने की तकनीकी प्रणाली को अंतिम रूप दिया गया

स्वच्छता

- सुमीति
सहायक प्रबंधक
क्षेत्रीय कार्यालय लुधियाना

स्वच्छता एक जरुरत है, या है ये कुछ और
जिसका जिक्र फ़ैला हुआ है चारों ओर
इससे तो है हर कोई भलीभांति परिचित
फिर भी गन्दा किये जा रहे हैं हर चीज

साफ़ पानी का रंग भी है इतना मैला
जब से हैं इसमे इतना रसायन फैला
प्राणवायु हो चुकी है इतनी ख़राब
राहत की सांस चाहें हर जनाब

मानव कृत्रिमता की दुनिया है बसा रहा
हरी भरी धरा को बंजर है बना रहा
धरती, वायु, पानी और गगन
प्रदुषण से भर गया हैं ये चमन

प्रकृति को प्लास्टिक से ढक दिया
तबाही की और रुख किया
जीवों की जान पर आन पड़ा है खतरा
क्योंकि समुन्द्र में बढ़ गया है इतना कचरा

प्रदुषण का खौफ़ हर किसी को सता रहा
गंदगी का ढेर फ़िर भी हर जगह लगा रहा
बीमारियों को करता है स्वयं आमंत्रित
जैसे हो कोई पुराना मीत

जग में स्वच्छता की चाह है हर किसी को
लेकिन बदलना ना चाहे जीवन के तरीके
स्वच्छता से आज है जीवन का सार
तभी बना रह सकता है ये संसार

- रेनू बाला
सहायक प्रबंधक
क्षेत्रीय कार्यालय लुधियाना

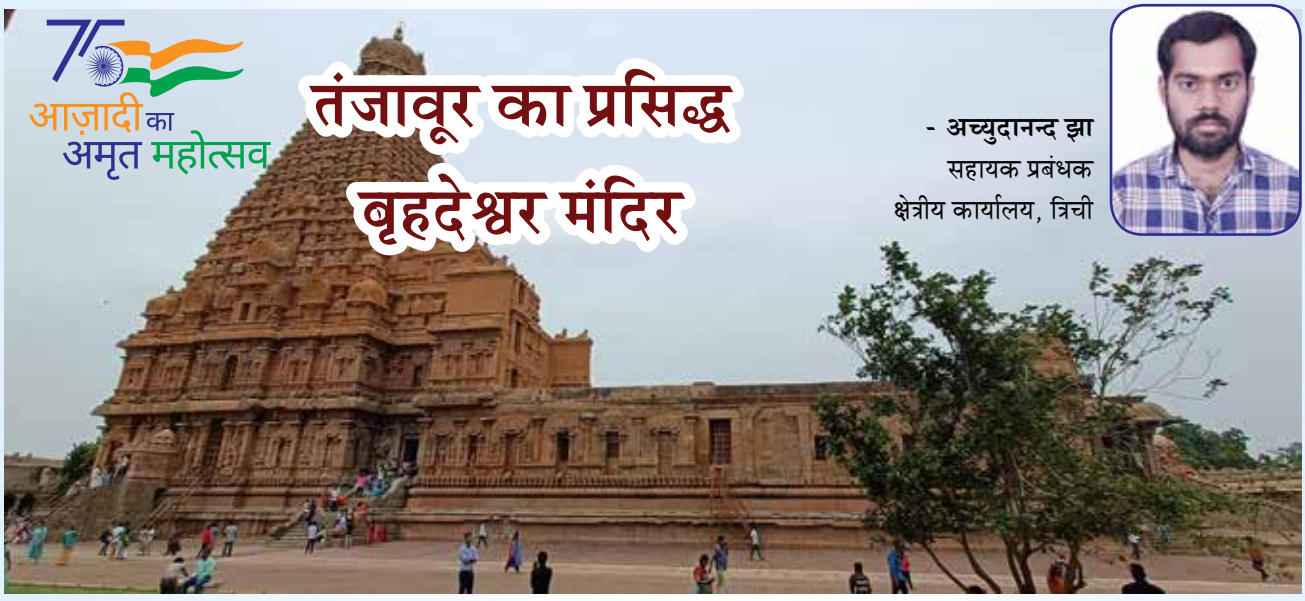

तंजावूर का प्रसिद्ध बृहदेश्वर मंदिर

- अच्युदानन्द झा
सहायक प्रबंधक
क्षेत्रीय कार्यालय, त्रिची

भारत के सबसे दक्षिणी तटीय राज्य तमिलनाडू में कावेरी नदीमुख (डेल्टा) पर स्थित एक खूबसूरत जगह है - तंजावूर. प्राचीन काल में तंजावूर चोल साम्राज्य की राजधानी थी. 'चोल' का इतिहास काफी पुराना है. 300 ई.पू. कावेरी नदी के तट पर पहली बार चोल वंश का आविर्भाव हुआ, जिसका प्रमाण अशोक के तीसरी शताब्दी ईशा पूर्व के शिलालेखों में भी प्राप्त होता है. इतिहासकार इन्हें 'प्राचीन चोल' के नाम से अभिहित करते हैं. सदियों बाद 800 इस्वी में विजयालय ने एक साम्राज्य की स्थापना की, जिसे 'शाही चोल साम्राज्य' (इम्पीरियल चोला) के नाम से जाना जाता है. उनके बाद राजराज प्रथम और उनके यशस्वी बेटे राजेन्द्र चोल प्रथम के कुशल व प्रभावशाली नेतृत्व में चोल साम्राज्य का विस्तार समूचे दक्षिण भारत के साथ-साथ श्रीलंका तक जा पहुँचा इसलिए इन्हे 'इम्पीरियल चोला' भी कहा जाता है.

अपनी भव्य स्थापत्य कला व अनुपम मंदिर निर्माण कला के लिए प्रख्यात 'शाही चोल' शासकों के द्वारा 'दि ग्रेट लिविंग चोला टेम्पल्स' बनवाया गया. 'शाही चोल' द्वारा निर्मित 3 मंदिरों के समूह को 'दि ग्रेट लिविंग चोला टेम्पल्स' कहा जाता है जो 11वीं से 12वीं शताब्दी के दौरान बनवाए गए थे. इनमें से सबसे पहला मंदिर तंजावूर के राजराज प्रथम के द्वारा बनवाया गया बृहदेश्वर मंदिर है. दूसरा, गंगईकोंडन चोलापुरम में उनके बेटे राजेंद्र चोल प्रथम द्वारा निर्मित उसी नाम का बृहदेश्वर मंदिर. तीसरा, कुम्बकोणम में राजराज द्वितीय द्वारा निर्मित तीनों मंदिरों में सबसे छोटा ऐरावतेश्वर मंदिर है. यह तीनों ही मंदिर आज युनेस्को विश्व विरासत स्थल में शामिल है. इन्हें 'लिविंग टेम्पल्स' कहने के पीछे का कारण मंदिरों की परंपरा की निरंतरता है. आज भी इन तीनों मंदिरों की पूजा पद्धति पहले की तरह ही है.

राजाराज प्रथम शक्तिशाली सम्राट होने के साथ-साथ द्रविड़ कला व स्थापत्य कला के महान संरक्षक भी थे. शिवभक्ति व तमिल संस्कृति को शीर्ष पर पहुंचाने के लिए उन्होंने बृहद ईश्वर शिव की मंदिर बनाने की ठानी. यह मनोरम व दर्शनीय मंदिर 1003 ईसवी सन से 1010 ईसवी के मध्य केवल सात वर्ष में बनकर तैयार हुआ था. इसे ही बृहदेश्वर मंदिर कहते हैं. राजाराज प्रथम के नाम पर इसे राजराजेश्वर नाम भी दिया गया है. इसे तमिल में 'पेरिय कोईल' व अंग्रेजी में 'बिग टेम्पल' के नाम से जाना जाता है. स्थानीय लोगों की मान्यताओं के कारण तंजावूर को 'दक्षिण काशी' और अपनी विशाल आकार के कारण इस मंदिर को 'दक्षिण मेरु' के नाम

06 सितंबर

2008 : भारत और अमेरिका के बीच परमाणु समझौते को परमाणु आपूर्तिकर्ता समूह ने मंजूरी दी

2020: संविधान के मूल ढांचे का सिद्धांत दिलाने वाले केशवानंद भारती का निधन. भारती ने केरल भूमि सुधार कानून को चुनौती दी थी जिसपर सुनवाई करते हुए उच्चतम न्यायालय ने संविधान के मूल ढांचे का सिद्धांत दिया

जो व्यक्ति अपने मार्ग से भटक जाता है, वह विनाश के रास्ते पर निकल जाता है.

से जाना जाता है. मंदिर के शिलालेख में कुंजार मल्लन राजराज पेरुंदासन का उल्लेख है जो इस मंदिर के मुख्य वास्तुशिल्पी थे.

66 मीटर का यह तेरह मंजिला मंदिर बिना किसी मजबूत नींव के सीधे जमीन पर बनाया गया है. चोल निर्माण कला की विशिष्टता, सीमेंट या इस प्रकार के किसी भी घोल के बजाए 'बॉल और सॉकेट' पद्धति का प्रयोग का यह सर्वोत्कृष्ट नमूना है. इस मंदिर के निर्माण कला की एक विशेषता यह है कि इसके गुम्बद की परछाई पृथ्वी पर नहीं पड़ती है. मंदिर की योजना इसके समतुल्य वितरण के लिए अद्वितीय है, जैसे - आकार और वजन; गहराई और स्थान; प्रकाश और छाया. इस मंदिर में 9 अंक के गुणकों का भी खूब प्रयोग किया गया है 108 शिवलिंग, 9 प्रमुख, स्तम्भ, 18 फ़ीट के 18 द्वारपाल इत्यादि. तमिलनाडु पुरातत्व विभाग के पूर्व निदेशक और "बृहदीश्वर मंदिर: रूप और अर्थ" (Brhadisvara Temple, Form and Meaning) के लेखक डॉ. आर. नागस्वामी के अनुसार, सावधानीपूर्वक मंदिर की संपत्ति को रजिस्टरों में दर्ज किया गया था और उन्हें संभालने के लिए जिम्मेदारी तय की गई थी. राजाराज चोल में एक असाधारण प्रशासनिक प्रतिभा थी, जो उनके पहले या बाद में नायाब थी. उत्कृष्ट सुलेख में विभिन्न दीवारों पर 100 से अधिक शिलालेख उकेरे गए हैं. वे मंदिर को दिए गए विभिन्न मूर्तियों के बारे में बहुमूल्य जानकारी और विवरण प्रदान करते हैं. जिससे उनकी विषय-वस्तु, बनावट, गुणवत्ता और भौतिक आयाम के साथ-साथ उन मूर्तियों के लिए दिए गए आभूषणों का सूक्ष्म विवरण भी ज्ञात होता है. मंदिर के दीवारों पर उत्कीर्ण बेहद उन्नत शिलालेखों में मंदिर के सफाईकर्मियों, झंडे और छतरियों के वाहक, रात और त्योहारों में जुलूस के लिए मशाल वाहक, रसोइयों, नर्तकों, संगीतकारों और तमिल और संस्कृत छंदों के गायकों के बारे में भी बताया गया है. मंदिर के पटलों पर नृत्य और संगीत के विभिन्न पहलुओं को उत्कृष्ट नक्काशियों में दर्शाया गया है. गर्भगृह के चारों ओर मुख्य मंदिर की पहली मंजिल पर भरत के नाट्यशास्त्र में वर्णित 'करण' के प्रामाणिक उद्धरण मिलते हैं. 108 में से 81 करण पत्थरों पर उकेरे गए हैं. जो बात अधिक दिलचस्प है, वह है स्वयं नृत्य शिरोमणि आडवलार का चित्रण.

इसके अतिरिक्त मंदिर में भरतनाट्यम की 100 से भी अधिक मुद्राओं का चित्रण है जो कि बाद के शासकों द्वारा बनवाए गए हैं. यहाँ हजार वर्ष पूर्व 400 नृत्यांगनाएं अपने कला व हुनर का प्रदर्शन करती थी. आज भी यहाँ प्रत्येक माह के दूसरे व चौथे सोमवार को मंदिर परिसर में नृत्य कार्यक्रम का आयोजन किया जाता है.

मंदिर में प्रवेश करने पर गोपुरम के भीतर एक चौकोर मंडप है. वहां चबूतरे पर नन्दी जी विराजमान हैं. नन्दी की यह प्रतिमा 6 मीटर लम्बी, 2.4 मीटर चौड़ी तथा 3.7 मीटर ऊंची है. भारत में एक ही शिला से निर्मित नन्दी की यह दूसरी सर्वाधिक विशाल प्रतिमा है. मंदिर परिसर के बाहरी दीवार के ऊपर भी नन्दी की छोटी-छोटी प्रतिमाएं बनी हुई है. गर्भगृह में मुख्य देवता राजराजेश्वरम पुनियार हैं जो 5.44 मीटर के एक "योनि पीठ" पर 1.66 मीटर व्यास के विशाल अखंड बेलनाकार लिंग के रूप में स्थापित हैं. गर्भगृह के देवकोष्ठ दीवार के चारों ओर ताक पर विभिन्न रूपों में शिव

07 सितंबर

1906: बैंक ऑफ इंडिया की स्थापना

2008 : भारत-अमेरिका परमाणु करार के तहत एनएसजी के 45 सदस्यों ने भारत को अन्तरराष्ट्रीय बिरादरी से परमाणु व्यापार की छूट दी.

08 सितंबर

1991 : मैसेडोनिया गणराज्य स्वतंत्र हुआ था

1926 : गीतकार, संगीतकार और गायक कलाकार भूपेन हजारिका का जन्म हुआ था

की छवियों को देखा जा सकता है, जैसे - पशुपतिश्वर, वीरभद्र, कालांतक, आडवलार, अर्धनारीश्वर, उमा-शिव आलिंगन, इत्यादि. मंदिर के बाहरी गलियारों में 252 शिवलिंग हैं . मंदिर के पिछले हिस्से में 1000 साल पहले बहुत सोच-समझकर बनाई गई सीढ़ियां है जो भविष्य में मरम्मत और अभिषेक के लिए हैं.

मंदिर के अंदर भगवान बुद्ध की भी प्रतिमा है जो उस समय दक्षिण भारत में बौद्ध धर्म के विस्तार को दर्शाती है. साथ ही मंदिर के संरक्षक शासकों के सहिष्णुता का भी प्रमाण है. इस मंदिर के अंदर भैरव, सरस्वती, दुर्गा, गणेश, विष्णु आदि देवी-देवताओ की भी मूर्तियां है. ऐसी मान्यता है कि सर्वप्रथम इसी जगह पर नटराज की मुर्ति को बनाया गया था.

यहाँ दीवारों पर राजाराज के समय के भीत्तिचित्र भी देखने को मिलते हैं. 1930 के आस-पास यहाँ के एक स्थानीय इतिहासकार ने अध्ययन करने पर पाया कि ये भीत्तिचित्र नायक शासकों द्वारा बनवाए गए थे. इनमें से एक भीत्तिचित्र भगवान शिव का है जिसमें शिव रथ पर सवार हैं और सारथी ब्रह्मा हैं.

इस मंदिर का सबसे बड़ा आकर्षण इसका स्वर्णकलश है. शिखर पर स्थित 7.77 वर्गमीटर के इस स्वर्णकलश का भार 80 टन है. यह स्वर्णकलश एक ही पाषाणखण्ड से बना है. माना जाता है कि इसे ऊपर स्थापित करने के लिए एक 6 किलोमीटर लम्बा रैम्प बनवाया गया था.

इमारत की 1000वीं वर्षगांठ के अवसर पर एसोसिएशन ऑफ भरतनाट्यम आर्टिस्ट्स ऑफ इंडिया (ABHAI) और ब्रहान नाट्यंजलि ट्रस्ट, तंजावुर द्वारा आयोजित एक कार्यक्रम में नई दिल्ली, मुंबई, पुणे, तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, केरल, सिंगापुर, मलेशिया और अमेरिका के 1000 नर्तकियों ने संगीत कार्यक्रम में करुवुर देव (राजराजा के गुरु) द्वारा रचित दिव्य संगीत थिरुविसैप्पा (थिरुमुरै, नौवां खंड) के 11 छंदों पर नृत्य किया. 26 सितंबर 2010 को (बृहदेश्वर मंदिर का सहस्राब्दी समारोह का पांचवां दिन), देश के सांस्कृतिक, स्थापत्य, पुरालेखीय इतिहास में बृहदेश्वर मंदिर के योगदान की मान्यता के रूप में, भारतीय डाक द्वारा 216 फीट लंबे विशाल राजा गोपुरम की विशेषता वाला एक विशेष ₹5 का डाक टिकट जारी किया गया था. भारतीय रिजर्व बैंक ने मंदिर के मॉडल के साथ एक ₹5 का सिक्का जारी करके इस घटना की याद दिलाई. संचार और सूचना प्रौद्योगिकी के कैबिनेट मंत्री ए राजां ने सम्मानित बृहदेश्वर मंदिर विशेष डाक टिकट जारी किया, जिसमें से पहला सिक्का कैबिनेट मंत्री जी के वासन द्वारा प्राप्त किया गया था. मुंबई मिंट ने 5 रुपये के सिक्के पर उसी तस्वीर के साथ 1000 रुपये का स्मारक सिक्का जारी किया. यह भारत गणराज्य के सिक्के में जारी होने वाला पहला 1000 रुपये का सिक्का था. यह सिक्का एक गैर परिसंचारी कानूनी निविदा (एनसीएलटी) था. 1 अप्रैल 1954 को, भारतीय रिजर्व बैंक ने बृहदेश्वर मंदिर की सांस्कृतिक विरासत और महत्व को दर्शाने वाले मनोरम दृश्य के साथ ₹1000 का एक नोट जारी किया. ये नोट अब संग्राहकों के बीच लोकप्रिय हैं. वर्तमान में कलात्मक उत्कृष्टता की अन्यतम अभिव्यक्ति बृहदेश्वर मंदिर के रखरखाव की जिम्मेदारी भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग की है.

09 सितंबर

1915: भारतीय क्रांतिकारी जतिंद्रनाथ सान्याल और अंग्रेजों के बीच उड़ी के काप्टेवाड़ा में संघर्ष

2012: भारतीय स्पेस एजेंसी ने सबसे भारी विदेशी सैटेलाइट को कक्षा में स्थापित किया.

10 सितंबर

1920: आंग्ल, ओरिएंटल कॉलेज अलीगढ़ का नाम बदलकर अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय किया गया

1872 : रणजीत सिंह (क्रिकेटर), जिनके नाम पर रणजी ट्राफी खेली जाती है उनका का जन्म हुआ था

सकारात्मक सोच कैसे रखें

- सुहानी सागर
सहायक प्रबंधक (मासंवि)
केन्द्रीय कार्यालय

मनुष्य के जीवन में कई प्रकार की चुनौतियां आती हैं. उन चुनौतियों का सामना कर आगे बढ़ने के लिए सकारात्मक सोच का होना बहुत आवश्यक है. सकारात्मक सोच वाले इंसान हमेशा दूसरों को प्रेरित करते हैं, लेकिन कई बार ना चाहते हुए भी हम नकारात्मक सोच कि ओर जाने लगते हैं. हालांकि ज्यादा सकारात्मक सोच भी हानिकारक होती है. इसलिए थोड़ी मात्रा में नकारात्मक सोच भी जरूरी है पर नकारात्मक सोच आप पर हावी ना हो जाए और आप सकारात्मक रहे इसके लिए आप कुछ बिंदुओं पर ध्यान दे सकते हैं, जो कि सकारात्मक सोच रखने में आपकी मदद कर सकता है. चूंकि आज-कल हमारी बैंकिंग दिनचर्या भाग-दौड़ व चुनौतियों से भरी पड़ी है, ऐसे में हम निम्नलिखित बिंदुओं का अनुसरण कर सकारात्मक व ऊर्जावान रह सकतें हैं:-

1. सकारात्मक लोगों के साथ रहें.
2. दूसरों से ईर्ष्या ना करें.
3. चेहरे पर मुस्कान बनाए रखें.
4. खुद को व्यस्त रखें.
5. संतुष्ट रहना सीखें.
6. अपने विचारों को सामने रखें.
7. दूसरों की प्रशंसा में कंजूसी ना करें.
8. कार्य की शुरुआत सकारात्मक सोच के साथ करें.
9. ओवर कॉन्फिडेंस से बचें.
10. अपनी नींद का रखें ध्यान.
11. व्यर्थ की चिंता से बचें.
12. धैर्यवान बने.
13. रोज करें व्यायाम.

1. सकारात्मक लोगों के साथ रहें : आपकी संगति का आपके जीवन पर बड़ा असर पड़ता है. जिन लोगों से आप रोज मिलते हैं, बात करते हैं, आप उनके गुण अपने अंदर शामिल कर लेते

11 सितंबर

1906 : महात्मा गाँधी ने दक्षिण अीका में सत्याग्रह आन्दोलन शुरु किया था
1895 : भारत की प्रसिद्ध समाजसेवी विनोबा भावे का जन्म हुआ था

12 सितंबर

1873 - पहला टाइपराइटर ग्राहकों को बेचा गया
1966 - भारतीय तैराक मिहिर सेन ने डार्डानेलेस जलडमरूमध्य को तैर कर पार किया

हैं. आपको पता भी नहीं चलता कि कब उनके गुण आप में आ गए इसीलिए ऐसे लोगों के साथ रहे जिनकी सोच सकारात्मक हो ताकि कभी आप ज्यादा नकारात्मकता की ओर जा भी रहे हो तो उनकी संगति आपको जाने से रोक पाएगी.

2. **दूसरों से ईर्ष्या ना करें :** जलन की भावना मनुष्य के अंदर के अच्छाई को समाप्त कर देती है. दूसरे के प्रति ईर्ष्या द्वेष रखने से मन में हीन भावना उत्पन्न होती है. इससे सामने वाले को तो कोई फर्क नहीं पड़ता पर आपका ही मन व्याकुल रहता है, जो कि आपके व्यक्तित्व पर एक नकारात्मक असर डालता है. इसलिए दूसरों की उपलब्धियों और तरक्की से ईर्ष्या ना करें बल्कि उनसे सीख ले और आप भी कामयाबी के लिए अथक प्रयास करें.

3. **चेहरे पर मुस्कान बनाए रखें :** अपने चेहरे पर मुस्कान बनाए रखें. क्योंकि आपकी एक मुस्कान ना केवल आपको ऊर्जावान बनाती है, बल्कि इससे आपके अगल-बगल के लोगों में भी सकारात्मक भावना उत्पन्न होती है. इसलिए हमेशा अपनी मुस्कान बिखेरते रहिए. इस दुनिया में कई सारी वजह है मुस्कुराने की तो उन वजह और हसीन लम्हों को याद करके हंसते रहें और सकारात्मक ऊर्जा बिखेरते रहें.

4. **खुद को व्यस्त रखें :** हमारे दिमाग में नकारात्मक सोच, हीन भावना आदि विकार तब आते हैं जब हमारे पास काफी खाली समय होता है. हमारे पास करने को कुछ नहीं होता. इसलिए हमेशा व्यक्ति को कुछ ना कुछ करते रहना चाहिए. आप खुद को अच्छे कामों में उलझाए रखें. अगर आपके पास करने के लिए कोई काम ना हो तो ऐसे में आप जरूरतमंद लोगों के समीप जाकर उनकी मदद कर सकते हैं. यह आपके अंदर अच्छी सोच पैदा करेगा और आप नकारात्मक भावनाओं से दूर रहेंगे.

5. **संतुष्ट रहना सीखें :** ऐसा बहुत बार होता है कि हम अच्छी खासी जिंदगी जी रहे होते हैं पर फिर भी हम अपने आप से ऊंचे लोगों से खुद की तुलना करने लगते हैं. उनके बंगला, गाड़ी, रुपए पैसे देखकर हम मन ही मन दुखी होने लगते हैं. सोचते हैं कि हम उनके इतना खुश नहीं है, हम इतने अमीर नहीं है, पर दुखी होने के बजाय हमें अपने से नीचे ओहदे के व्यक्ति को देखना चाहिए. तब हमें अपनी उपलब्धियों का पता चलता है.

6. **अपने विचारों को सामने रखें :** कई बार हम जो सोचते हैं उसे शब्दों में नहीं कह पाते, अपनी बातों को दूसरों के सामने सही प्रकार से नहीं रख पाते है. जिससे आपके व्यक्तित्व पर नकारात्मक असर पड़ता है. आप लोगों के सामने अपने विचार को सही प्रकार से रखें यदि कोई आपके प्रति अच्छा व्यवहार नहीं रखता है फिर भी उसे अपनी बात सही तरीके व सलीके से कहें, इसका आपको फायदा मिलेगा और इससे आपकी और आप के प्रति लोगों की सकारात्मक सोच बढ़ेगी.

7. **दूसरों की प्रशंसा में कंजूसी ना करें :** हर दिन हम कुछ ना कुछ प्रशंसा योग्य चीजें देखते हैं पर उसकी प्रशंसा कभी-कभार ही करते हैं. किसी की भी प्रशंसा करने से जिस व्यक्ति

13 सितंबर

1948 : भारत के उप प्रधान मंत्री वल्लभभाई पटेल ने सेना को भारतीय संघ के साथ एकीकृत करने के लिए हैदराबाद जाने का आदेश दिया था

14 सितंबर

1949 : में आज ही के दिन संविधान सभा ने हिंदी को ही भारत की राजभाषा घोषित किया.

वही सत्य कहना चाहिए जो दूसरों की प्रसन्नता का कारण हो. जो सत्य दूसरों के दुख के लिए हो उसके संबंध में बुद्धिमान मौन ही रहें - विष्णु पुराण

की प्रशंसा की गई उसमें और आप में दोनों में ही सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है. यह सकारात्मक रहने का काफी सरल तरीका है. बस आप हर दिन कम से कम एक व्यक्ति की प्रशंसा करें और सकारात्मक रहें.

8. **कार्य की शुरुआत सकारात्मक सोच के साथ करें :** किसी भी कार्य को करने से पहले यदि हम उसके बारे में अच्छा सोचते हैं तो कार्य के सफल होने की संभावना बढ़ जाती है. इसीलिए हर एक कार्य को करने से पहले आप उसके बारे में अच्छा सोचिए. आप किसी भी चीज के प्रति जितने सकारात्मक रहेंगे आपको उतना ही सकारात्मक महसूस होगा. एक नकारात्मक सोच के साथ यदि आप किसी कार्य को करेंगे तो शायद आपको उसका सही परिणाम ना मिले.

9. **ओवर कॉन्फिडेंस से बचें :** यदि किसी व्यक्ति में आत्मविश्वास है तो उसकी सोच हमेशा सकारात्मक होती है. व्यक्ति का कॉन्फिडेंस होना उसके लिए फायदेमंद होता है पर यदि व्यक्ति ओवर कॉन्फिडेंट हो जाए तो यह उसके लिए नुकसानदायक होता है. ओवर कॉन्फिडेंट व्यक्ति के अंदर नकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है इससे अहंकार की भावना उत्पन्न होती है, जो कि मनुष्य की सफलता की बाधा बन सकती है. खुद को कॉन्फिडेंट बनाएं ओवर कॉन्फिडेंस से बचे और सकारात्मक रहें.

10. **अपनी नींद का रखें ध्यान :** यदि आपको पूरे दिन ऊर्जावान रहना है तो कम से कम 6 से 8 घंटे की नींद जरूर ले. इससे आपको दिन में काम करते समय आलस महसूस नहीं होगा और आप अपने कार्य को सजग तरीके से कर पाएंगे. इससे आप हमेशा सकारात्मक व ऊर्जावान महसूस करेंगे.

11. **व्यर्थ की चिंता से बचें :** कुछ लोग दिनभर व्यर्थ की चिंता करते रहते हैं. जिससे नकारात्मक विचार उत्पन होते हैं. जैसे मकान कैसे बनेगा, अगर मेरी नौकरी छूट जाएगी तो क्या होगा, कर्ज की किस्त कैसे जमा कर पाएंगे व बच्चों को कैसे अच्छी शिक्षा देंगे इत्यादि. यह एक प्रकार का विकार है. आपको व्यर्थ की चिंता से बचना चाहिए.

12. **धैर्यवान बने :** किसी भी चीज को पाने के लिए उसे एक उचित समय देना पड़ता है. यदि हम उसे उचित समय नहीं देते हैं तो नकारात्मकता महसूस होती है. जैसे जब भी हम किसी नई चीज को सीख रहे होते हैं तो उसे सीखने में उचित समय लगता है. चाहे वह कोई नई म्यूजिकल इंस्ट्रूमेंट हो या कोई नई भाषा, हमें उसमें निरंतर अभ्यास की जरूरत होती है. जिसके लिए धैर्य का होना अति आवश्यक है. यदि आप धैर्यवान है तो आप हमेशा सकारात्मक महसूस करेंगे और सफलता को प्राप्त करेंगे.

13. **रोज करें व्यायाम :** व्यायाम करना सकारात्मक रहने की सरल विधि है. यदि आप रोज व्यायाम करते हैं तो आपके शरीर में एंडोर्फिन (Endorphins) नामक हार्मोन बनता है. जिससे आपके शरीर में सकारात्मकता उत्पन्न होती है. इसलिए रोजाना कम से कम 15 से 30 मिनट तक का व्यायाम जरूर करें. इससे आपका तन और मन दोनों ही स्वस्थ रहेगा.

"एक सकारात्मक व ऊर्जावान कर्मचारी ही एक स्वस्थ संस्थान की नीव होता है."

15 सितंबर

1931 : गांधी-इरविन समझौता हुआ था.

1959 : भारत की राष्ट्रीय प्रसारण सेवा दूरदर्शन की शुरुआत हुई थी.

16 सितंबर

2009 : दुनिया भर के समक्ष भारत के एक उत्कृष्ट पर्यटन स्थल के रूप में पेश करने वाले अतुल्य भारत विज्ञान अभियान को ब्रिटिश पुरस्कार मिला.

2011 : नासा के वैज्ञानिकों ने उत्साहपूर्वक एक परिधि-बाइनरी ग्रह की खोज की घोषणा की. एक ग्रह जो एक के बजाय दो तारों की परिक्रमा करता है.

बैंक के इर्द गिर्द

स्वतंत्रता दिवस के शुभ अवसर पर माननीय एम. वी. राव, प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी ध्वजारोहण करते हुए.

हमारे बैंक के संस्थापक सर सोराबजीपोचखानावाला की 141 वी जयंती के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम का उद्घाटन में माननीय एम. वी.राव ,प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी ,श्री आलोक श्रीवास्तव,कार्यपालक निदेशक, श्री विवेक वाही, कार्यपालक निदेशक एवं श्री राजीव पूरी,कार्यपालक निदेशक महोदय परिलक्षित हो रहे हैं. इस अवसर पर 185 अनुकम्पा नियुक्तियां एवं फुटबॉल टीम को प्रायोजन प्रदान किया गया.

आजादी का अमृत महोत्सव - विविध आयोजन

कृषि क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य हेतु केन्द्रीय कृषि मंत्री श्री नरेन्द्र सिंह तोमर से पुरस्कार ग्रहण करते हुए दिल्ली के अंचल प्रमुख श्री जे एस साहनी.

सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया के सी वी ओ श्री सुनील खन्ना जी का स्वागत करते हुए अंचल प्रमुख श्री जे एस साहनी.

आंचलिक कार्यालय, लखनऊ

आंचलिक कार्यालय, हैदराबाद

आंचलिक कार्यालय चेन्नई

क्षेत्रीय कार्यालय विजयवाड़ा

क्षेत्रीय कार्यालय जबलपुर

क्षेत्रीय कार्यालय जलपाईगुड़ी

क्षेत्रीय कार्यालय दरभंगा

क्षेत्रीय कार्यालय बरेली

आजादी का अमृत महोत्सव - विविध आयोजन

क्षेत्रीय कार्यालय, जामनगर में केन्द्रीय कार्यालय से कार्यपालक निदेशक श्री अलोक श्रीवास्तव की अध्यक्षता में क्रेडिट आउटरीच कार्यक्रम का आयोजन किया गया. इस अवसर पर ग्राहकों को ऋण स्वीकृति पत्र प्रदान करते हुए, कार्यपालक निदेशक श्री अलोक श्रीवास्तव.

क्षेत्रीय कार्यालय, राजकोट में कार्यपालक निदेशक श्री अलोक श्रीवास्तव की अध्यक्षता में बहुउद्देशीय शिविर का आयोजन किया गया.

आंचलिक कार्यालय चंडीगढ़ द्वारा ऋण मेला - ग्राहक जागरूकता - शिविर का आयोजन.

मुम्बा शाखा के अंतर्गत आजादी के अमृत महोत्सव के अधीन विद्यार्थियों के लिए जमा संग्रहण कैम्प.

क्षेत्रीय कार्यालय गोरखपुर द्वारा आजादी का अमृत महोत्सव कार्यक्रम के अंतर्गत आयोजित ज्ञान गंगा प्रश्नमंच प्रतियोगिता का आयोजन.

दरभंगा क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा +2 एम् एल अकादमी, दरभंगा में ज्ञान गंगा प्रतियोगिता का आयोजन.

क्षेत्रीय कार्यालय कानपुर द्वारा स्वतंत्रता दिवस के अमृत महोत्सव के अवसर पर सुभाष स्मारक इंटर कालेज में ज्ञान गंगा प्रश्नमंच का आयोजन.

क्षेत्रीय कार्यालय बरेली द्वारा आयोजित ज्ञान गंगा प्रश्नमंच प्रतियोगिता के अंतर्गत बरेली इंटर कालेज के विजेता प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र एवं पासबुक के साथ पुरस्कार राशि प्रदान करते हुए श्री दर्शन कुमार डिगरा, क्षे.प्र., कालेज के प्राचार्य.

भीतर और बाहर दोनों ही स्तरों पर शांत रहनेवाला ही प्रसन्न रहता है - विश्वबंधु शास्त्री

आजादी का अमृत महोत्सव - विविध आयोजन

क्षेत्रीय कार्यालय, मुजफ्फरपुर में केन्द्रीय कार्यालय से कार्यपालक निदेशक श्री अलोक श्रीवास्तव की अध्यक्षता में क्रेडिट आउटरीच कार्यक्रम का आयोजन किया गया. इस अवसर पर ग्राहकों को ऋण स्वीकृति पत्र प्रदान करते हुए, कार्यपालक निदेशक श्री अलोक श्रीवास्तव एवं अंचल प्रमुख, श्री डी पी खुराना, क्षेत्रीय प्रमुख, श्री रोहित कुमार.

मैलापुर शाखा, चेन्नई क्षेत्र का नए परिसर में स्थानांतरण.

क्षेत्रीय कार्यालय संबलपुर द्वारा आजादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन.

कानपुर में आयोजित क्रेडिट कैम्प में लाभार्थियों को ऋण स्वीकृत पत्र प्रदान करते हुए श्री एस.के. श्रीवास्तव, उ.म.प्र. केंद्रीय कार्यालय, मुम्बई.

क्षेत्रीय कार्यालय, जयपुर में वृक्षारोपण करते हुए दिल्ली अंचल प्रमुख श्री जे एस साहनी जी.

आंचलिक कार्यालय चेन्नई द्वारा आजादी के अमृत महोत्सव पर विभाजन विभीषिका प्रदर्शनी का आयोजन.

आजादी के अमृत महोत्सव पर मेगा क्रेडिट कैंप के अंतर्गत पटना आंचलिक प्रमुख धर्मपाल खुराना एवं क्षेत्रीय प्रमुख सिवान, अविनाश कुमार स्वयं सहायता समूह को चेक प्रदान करते हुए.

राजभाषा समाचार

वित्त मत्रालय वित्तीय सेवाएं विभाग, बैंकों, बीमा कंपनियों एवं वित्तीय संस्थानों के मुम्बई स्थित कार्यालयों के कार्यालय प्रमुखों एवं राजभाषा अधिकारियों के लिये सेन्ट्रल बैंक द्वारा आयोजित हिन्दी कार्यशाला. इस अवसर पर मंच पर, दाएं से श्री शयाम सुदंर, आर्थिक सलाहकार (संयुक्त सचिव), श्री भीम सिंह, उपनिदेशक राजभाषा (राजभाषा) वित्तीय सेवाएं विभाग एवं श्री राजीव वार्ष्णेय सहायक महाप्रबंधक परिलक्षित हो रहे हैं.

महाराष्ट्र के महामहिम राज्यपाल श्री भगत सिंह कोश्यारी द्वारा सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया राजभाषा के उत्कृष्ट कार्यान्वयन हेतु दुष्यंत पुरस्कार से सम्मानित किया गया.

पटना अंचल द्वारा हिंदी दिवस मुख्य समारोह का आयोजन.

सीवीओ, के का मुंबई श्री सुनील अरोड़ा के करकमलों से चेन्नई आं का द्वारा राजभाषा निर्देशक तथ्यों का विमोचन.

भोपाल अंचल में हिन्दी दिवस समारोह से हिंदी माह का शुभारंभ.

क्षेत्रीय कार्यालय मेरठ ने हिंदी माह का शुभारंभ नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति भारत सरकार की सचिव सुश्री स्वाति (सचिवालय केनरा बैंक) की उपस्थिति में हिंदी पुस्तक प्रदर्शनी एवं सुविचार प्रदर्शनी लगाकर किया गया.

क्षेत्रीय कार्यालय जोधपुर में हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया. इसमें राजभाषा नीति पर चर्चा की गई.

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर क्षेत्रीय कार्यालय आगरा में माननीय क्षेत्रीय प्रमुख श्री एल. सी. मीणा जी की अध्यक्षता में हिंदी माह का शुभारंभ किया गया.

धैर्यवान और बुद्धिमान मनुष्य के लिए शोक, विलाप और रुदन सभी अवस्थाएं त्याग देने योग्य हैं - वाल्मिकि

राजभाषा समाचार

दरभंगा क्षेत्रीय कार्यालय में हिंदी दिवस के अवसर पर विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया.

राजभाषा के उत्कृष्ट कार्यान्वयन हेतु नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति जमशेदपुर द्वारा हमारे जमशेदपुर शाखा को तृतीय पुरस्कार प्रदान किया गया.

आंचलिक कार्यालय चेन्नई राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में अंचल प्रमुख, उप आंचलिक प्रबंधक एवम सम्मानीय सदस्यों द्वारा अंचल की हिंदी ई पत्रिका *सेंट दक्षिण दर्पण* का विमोचन.

बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, औरंगाबाद की अर्द्धवार्षिक बैठक में हमारे बैंक को राजभाषा कार्यान्वयन हेतु तृतीय पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया.

बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, सूरत की अर्द्धवार्षिक बैठक में क्षेत्रीय कार्यालय सूरत को राजभाषा कार्यान्वयन हेतु तृतीय पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया.

राजभाषा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने हेतु नराकास मुज़फ़्फ़रपुर द्वारा सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया , क्षेत्रीय कार्यालय, मुज़फ़्फ़रपुर को प्रथम पुरस्कार/शील्ड प्रदान किया गया.

हैदराबाद अंचलाधीन गुंटूर क्षेत्राधीन शाखा करनूल को नराकास करनूल की ओर से राजभाषा के उत्कृष्ट कार्यान्वयन हेतु वर्ष 2019-20 के लिए द्वितीय तथा वर्ष 2021-22 के लिए तृतीय पुरस्कार प्राप्त. दोनों पुरस्कार दिनांक 28.08.2022 की बैठक में प्रदान किया गया.

राजभाषा के उत्कृष्ट कार्यान्वयन हेतु नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति नागरकोइल द्वारा सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया शाखा नागरकोइल को तृतीय पुरस्कार प्रदान किया गया.

राजभाषा समाचार

कार्यपालक निदेशक श्री विवेक वाही जी का सेन्ट क्रांति अभियान के दौरान मदुरै आगमन. कार्यपालक निदेशक महोदय श्री विवेक वाही जी के कर-कमलों द्वारा हिंदी सूक्तियों का विमोचन किया गया.

क्षेत्रीय कार्यालय गोरखपुर में श्री राजेश वर्मा, महाप्रबंधक/डिजिटल बैंकिंग के गोरखपुर आगमन पर राजभाषा कक्ष द्वारा तैयार किया गया पोस्टर और सेंट गोरखधाम पत्रिका के जनवरी-जून 2022अंक का विमोचन किया गया.

आंचलिक कार्यालय, पटना को नराकास (बैंक) का वर्ष 2021-2022 के लिऐ प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ. संयोजक भारतीय रिजर्व बैंक के क्षेत्रीय निदेशक श्री संजीव दयाल के कर कमलों से शिल्ड एवं प्रमाणपत्र अंचल प्रमुख श्री डी. पी. खुराना ने ग्रहण किया.

क्षेत्रीय प्रमुख श्री सुरेश कौशिक जी, नराकास अध्यक्ष एवं सचिव एवं अन्य बैंकों के कार्यपालकागणो के साथ पत्रिका विमोचित करते हुए दिखाई दे रहे है.

आजादी का अमृत महोत्सव ' के अंतर्गत आंचलिक कार्यालय , कोलकाता की गृह पत्रिका ' बंगवाणी ' के जून 2022 अंक का विमोचन अंचल प्रमुख श्री अजय कुमार सिंह के कर कमलों द्वारा किया गया.

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति देवास की ओर से श्रेष्ठ कार्य निष्पादन हेतु शाखा देवास को प्रोत्साहन पुरस्कार.

नराकास राँची द्वारा हिन्दी के उत्कृष्ट कार्यान्वयन हेतु क्षेत्रीय कार्यालय रांची को द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया.

नराकास तिरुवनंतपुरम द्वारा राजभाषा के उत्कृष्ट कार्यान्वयन हेतु क्षेत्रीय कार्यालय तिरूवनंतपुरम को द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ.

मुक्ति शून्यता में नहीं, पूर्णता में है. पूर्णता सृजन करती है. ध्वंस नहीं करतीं - रवीन्द्रनाथ ठाकुर

राजभाषा समाचार

क्रेडिट /वित्तीय समावेशन कार्यक्रम में केंद्रीय कार्यालय से पधारे महाप्रबंधक श्री एसआर दाश ने औरंगाबाद विजय बजाज रेजिडेंशियल एरिया शाखा में क्रेडिट आउटरीच कार्यक्रम का उद्घाटन किया.

आचलिक कार्यालय चेन्नई द्वारा हिंदी पोस्टर का विमोजन.

नराकास अकोला का उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन प्रथम पुरस्कार वर्ष 2019 - 20 क्षेत्रीय कार्यालय अकोला को प्राप्त हुआ है, साथ ही वर्ष 2020 21 का भी प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ है.

नराकास, बैंक बरेली के अध्यक्ष एवं महाप्रबंधक श्री अश्विनी कुमार से वित्तीय वर्ष 2021-22 के प्रथम शील्ड प्राप्त करते हुए श्री दर्शन कुमार डिगरा, क्षेत्रीय प्रमुख, सेंट्रल बैंक आफ इंडिया, बरेली.

वर्ष 2021-22 में उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन के फलस्वरूप बड़वानी शाखा को नाराकास का द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ.

आंचलिक कार्यालय लखनऊ के द्वरा राजभाषा हिंदी सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया.

आंचलिक कार्यालय द्वारा आयोजित हिंदी दिवस कार्यक्रम में अंचल प्रमुख माननीय श्री बी बी मुटरेजा और अन्य कार्मिक दृष्टिगत है.

क्षेत्रीय कार्यालय दुर्गापुर द्वारा हिंदी माह हेतु विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन.

क्षेत्रीय कार्यालय वरंगल द्वारा हिंदी माह हेतु विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन.

इंडियन बैंक के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री एस एल जैन से द्वितीय पुरस्कार स्वरूप शील्ड प्राप्त करते हुए श्री विद्याधर पेड़नेकर, सहायक महाप्रबंधक, चेन्नई आं का, श्री सुरेश कुमार, क्षेत्र प्रमुख चेन्नई एवं श्री हितेन्द्र धूमाल, मुख्य प्रबन्धक-राभा.

सेवानिवृत्ति / RETIREMENT

सेवानिवृत्ति उपरांत सुखद एवं दीर्घायु जीवन हेतु मंगलकामनाएं...!!

श्री मयंक दिनेश शाह, महाप्रबंधक

श्री के चन्द्र प्रकाश, उप महाप्रबंधक

श्री एन उन्नीकृष्णन, उप महाप्रबंधक

सुश्री काकोलि दास, उप महाप्रबंधक

श्री रजनीश शर्मा, उप महाप्रबंधक

पदोन्नति / PROMOTION

सेन्ट्रलाइट परिवार की ओर से हार्दिक बधाई...!!

सुश्री पॉपी शर्मा, महाप्रबंधक

श्री राजेश कुमार गुप्ता, उप महाप्रबंधक

श्री पी सुरेश, उप महाप्रबंधक

श्री महेन्द्र सिंह मीणा, उप महाप्रबंधक

श्री दिगम्बर शालीग्राम, उप महाप्रबंधक

श्री दिलीप पुरोहित, उप महाप्रबंधक

स्वस्थ प्रतिस्पर्धा लाभदायक होती है.

अपने बैंक को जानिए सितम्बर, 2022

KNOW OUR BANK, SEPTEMBER - 2022

(₹ करोड़ में / ₹ in Crore)

क्रम सं. Sr. No.	विवरण DETAILS	इकाई UNIT	मार्च, 2022 अंतिम (31.03.22) March, 2022 FINAL (31.03.22)	अगस्त, 2022 अंतिम (31.08.22) August, 2022 FINAL (31.08.22)	सितम्बर, 2022 अंतिम (30.09.22) September 2022 FINAL (30.09.22)
1	**भारत में शाखाएं / BRANCHES IN INDIA**	सं./No.	**4528**	**4528**	**4517**
1.1	ग्रामीण / Rural	सं./No.	1604	1604	1602
1.2	अर्ध शहरी / Semi-Urban	सं./No.	1330	1330	1330
l.3	शहरी / Urban	सं./No.	783	783	774
1.4	महानगरीय / Metropolitan	सं./No.	811	811	807
2	**अनुषंगी कार्यालय / SATELLITE OFFICES**	सं./No.	**10**	**10**	**10**
3	**विस्तार पटल / EXTENSION COUNTERS**	सं./No.	**1**	**1**	**1**
4	**आकारवार शाखाएं / SIZE WISE BRANCHES**	सं./No.	**4528**	**4528**	**45'17**
4.1	अत्याधिक बड़ी शाखाएं / ELB	सं./No.	22	22	22
4.2	बहुत बड़ी शाखाएं / VLB	सं./No.	550	550	548
4.3	बड़ी शाखाएं / Large Branches	सं./No.	1637	1637	1632
4.4	मध्यम शाखाएं / Medium Branches	सं./No.	2296	2296	2292
4.5	लघु शाखाएं / Small Branches	सं./No.	0	0	0
4.6	विशेष शाखाएं / Specialised Branches (**)	सं./No.	23	23	23
5	**कुल जमाएं / AGGREGATE DEPOSITS**	₹	**341036**	**340575**	**341822**
5.1	चालू / Current	₹	16515	15481	16713
5.2	बचत / Savings	₹	155965	158091	157583
5.3	मियादी / Time	₹	168556	167003	167526
5.4	संस्थागत जमाएं / Institutional Deposits	₹	7989	8269	8561
5.5	सार्वजनिक जमाएं / Public Deposits	₹	33047	332306	333261
5.6	अंतर बैंक जमाएं / Inter Bank Deposits	₹	1656	1097	1259
5.7	कुल जमाएं (अंतर बैंक सहित) / Total Deposits (including Inter Bank)	₹	342692	341672	343081
6	**अनु. वाणि बैंको में से.बैं.इं.का हिस्सा / SHARE OF CBI IN SCBs (DEPOSITS)**	%	**2.04**	**1.98**	**1.98**
7	**प्रति शाखा जमाएं / PER BRANCH DEPOSITS**	₹	**75.32**	**75.22**	**75.67**
8	**औसत जमाएं / AVERAGE DEPOSITS**	₹	**332282**	**339071**	**339654**
9	**पिछले मार्च की तुलना में वृद्धि / GROWTH OVER PREVIOUS MARCH**				
9.1	कुल जमाएं / Aggregate Deposits	%	3.70	-0.14	0.23
9.2	सार्वजनिक जमाएं/ Public Deposits	%	3.35	-0.22	0.06
9.3	संस्थागत जमाएं / Institutional Deposits	%	20.83	3.50	7.16
9.4	औसत जमाएं / Averagc Dcposits	%	3.87	2.04	2.22
9.5	कुल जमाएं (अंतर बैंक सहित) / Total Dcposils (includiug Inter Bank)	%	3.85	-0.30	0.11
10	**बिंदु-दर-बिंदु कुल जमाओं में वृध्दि/ POINT'I'O POINT ACC.DEP.GROWTH**	%	**3.70**	**2.36**	**1.78**
11	**सीआरआर / CRR:-** ए) अनिवार्य / Obligatory (23.09.2022)	₹	13712	15528	15498
	बी) वास्तविक (औसत) / Actual (Average) (23.09.2022)	₹	13729	15541	15511
12	**एसएलआर / SLR:-** ए) अनिवार्य / Obligatory (23.09.2022)	₹	**61865**	**62117**	**61993**
	बी) वास्तविक / Actual (23.09.2022)	₹	**121598**	**109692**	**108047**
13	**हाथ में नकदी / CASH IN HAND (23.09.2022)**	₹	**1493**	**1338**	**1309**
14	**भारत में स्थित बैंकों में कुल शेष/ BALANCE WITH BANKS IN INDIA (23.09.2022)**	₹	**49**	**45**	**24**
15	**भारतीय रिज़र्व बैंक में शेष / BALANCE WITH RBI (Last reporting Frida)**	₹	**13275**	**15850**	**15800**
16	**निवेश / INVESTMENT**	₹	**146759**	**141951**	**139609**
16.1	सरकारी प्रतिभूतियां / Government Securities	₹	105842	101883	99657
16.2	अन्य अनुमोदित प्रतिभूतियां / Other Approved Securities	₹	0	0	0
16.3	अन्य गैर-एसएलआर प्रतिभूतियां / Other Non SLR Securities	₹	40917	40068	39952
16.3.1	सीपी / CPs	₹	342	318	315
16.3.2	डिबेंचर्स / Debentures	₹	5860	5342	5315
16.3.3	पीएसयू बॉण्डस् / PSU Bonds	₹	28736	28633	28583
16.3.4	शेयर्स - संयुक्त उद्यम/अनुषंगी (देशी) / Shares - Jt.Vn/Subs'ry (Inland)	₹	258	258	258
16.3.5	संयुक्त उद्यमों के शेयर्स (विदेशी) / Shares ofjoint Ventures (Foreign)	₹	0	0	0
16.3.6	अन्य / Others	₹	5721	5517	5481

(*) Totsl No. of Branches exclude satellite olfices. No. of Branches rcvised as per RBI Branch categorisation guidelines.

(**) Specialised Branches includes CFBS/SANIS/-{RA/MCBS/Capital tlsrket and Treasury Bmnch.

(*) शाखाओं की कुल संख्या में अनुषंगी कार्यालय शामिल नहीं है. शाखाओं की संख्या आरबीआय की संशोधित शाखा वर्गीकरण नीति के अनुसार है.

(**) विशेष शाखाओं में सीएफबी / सैम एआरबी/मिड कॉर्पोरेट / पूंजी बाजार / कोष शाखाएं शामिल है.

सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया
Central Bank of India
1911 से आपके लिए "केंद्रित" "CENTRAL" TO YOU SINCE 1911

आज़ादी का अमृत महोत्सव

हिंदी

एक भाषा जो हम सबको साथ जोड़ती है

सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया की ओर से आप सभी को
हिंदी दिवस की बधाई

www.centralbankofindia.co.in | हमें यहां फॉलो करें: CentralBankofIndia | टोल फ्री नंबर: 1800 22 1911